राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध

सितंबर- 2024
वर्ष - 2 अंक - 2

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

मान्ननीय केंद्रीय इस्पात व भारी उद्योग मंत्री एवं राज्य मंत्री का आर आई एन एल में आगमन

तत्कालीन सचिव (इस्पात), भारत सरकार का आर आई एन एल दौरा

भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा (बी.जे.पी. वर्मा)
భూపతిరాజు శ్రీనివాసవర్మ (బి.జె.పి. వర్మ)
BHUPATHIRAJU SRINIVASA VARMA (BJP VARMA)

सत्यमेव जयते

इस्पात एवं
भारी उद्योग राज्य मंत्री
भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली-110011
MINISTER OF STATE FOR STEEL
AND HEAVY INDUSTRIES
GOVERNMENT OF INDIA
UDYOG BHAVAN, NEW DELHI-110011

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की हिंदी गृह-पत्रिका 'राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध' के आगामी अंक को 'प्रौद्योगिकी विकास के साथ राजभाषा हिंदी के स्वरूप में परिवर्तन' विषय पर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। मेरा विश्वास है कि यह अंक भाषा और तकनीक के सामंजस्य को बढ़ावा देने में कामयाब होगा और पाठकों एवं शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत जरूरी सामग्री उपलब्ध कराएगा। आर आई एन एल का यह प्रयास सराहनीय एवं आवश्यक है। इससे हिंदी में तकनीकी साहित्य का विकास तो होगा ही, साथ ही महत्त्वपूर्ण जानकारियों भरा एक संकलन भी सृजित होगा, जो एक सामान्य पाठक के साथ-साथ इस्पात कर्मियों के लिए अत्यंत लाभदायी दस्तावेज होगा।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की हिंदी गृह-पत्रिका भारत सरकार की अपेक्षाओं के अनुरूप राजभाषा की श्रीवृद्धि में विगत 24 वर्षों से तल्लीन है और अनेक बार भारत सरकार से सम्मानित भी हुई है।

मैं संगठन में राजभाषा के विकास हेतु प्रबंधन द्वारा दिये जा रहे बढ़ावा एवं सहयोग की प्रशंसा करता हूँ और आर आई एन एल के इस सकारात्मक कदम को उल्लेखनीय मानता हूँ।

बधाई और शुभकामनाओं सहित...

(भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा)

अजित कुमार सक्सेना
AJIT KUMAR SAXENA

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
CHAIRMAN-CUM-MANAGING DIRECTOR
RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED
VISAKHAPATNAM-530031

संदेश

मुझे बताया गया है कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की गृह-पत्रिका 'राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध' का सितंबर 2024 अंक 'प्रौद्योगिकी विकास के साथ राजभाषा हिंदी के स्वरूप में परिवर्तन' विषय पर प्रकाशित की जा रही है। मेरा मानना है कि बदलती तकनीकों, उपभोक्ता आवश्यकताओं एवं भाषा व सामाजिक सोच में जो बदलाव आते हैं, उनके सकारात्मक पहलुओं का हमें सदैव अवसर के रूप में उपयोग करना चाहिए। तकनीकों के विकास ने हमारे कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के कामकाज को आसान व तीव्रगामी बनाया है। साथ ही इससे वैश्विक स्तर पर हिंदी को एक नई पहचान भी मिली है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड ने राजभाषा के विकास व संवर्धन के लिए बहुत ही सराहनीय कार्य किया है और आज कठिन परिस्थितियों में भी भारत सरकार द्वारा दिये गये लक्ष्यों से आगे बढ़कर काम कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप संगठन को राजभाषा कार्यान्वयन व गृह-पत्रिका प्रकाशन हेतु भारत सरकार के द्वारा दिये जाने वाले शीर्ष प्रोत्साहन 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' कई बार प्राप्त हुए हैं।

मैं पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास और राष्ट्रीय पहचान को बनाए रखने की कामना करता हूँ।

(अजित कुमार सक्सेना)

डॉ सुरेश चंद्र पाण्डेय
DR. SURESH CHANDRA PANDEY

निदेशक (कार्मिक)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
DIRECTOR (PERSONNEL)
RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED
VISAKHAPATNAM-530031

संदेश

यह अतीव हर्ष की बात है कि संगठन के राजभाषा विभाग के द्वारा हिंदी गृह-पत्रिका 'राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध' के सितंबर 2024 अंक को 'प्रौद्योगिकी विकास के साथ राजभाषा हिंदी के स्वरूप में बदलाव' जैसे समसामयिक विषय पर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। जहाँ एक ओर तकनीक के क्षेत्र में भारत नये-नये कीर्तिमान स्थापित करते हुए आत्मनिर्भर बनने की तीव्र प्रक्रिया में शामिल है, वहीं दूसरी ओर हमारी राजभाषा भी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं की सूची में शामिल होने की दहलीज पर खड़ी है। मेरा मानना है कि राष्ट्रीयता की भावना से लबरेज यह विशेषांक पाठकों एवं शोधकर्ताओं के लिए सार्थक सिद्ध होगा।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में राजभाषा के प्रचार व प्रसार को हमेशा से प्राथमिकता मिलती जा रही है। यही कारण है कि संगठन का प्रत्येक प्राधिकारी राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अपने दायित्वों के प्रति सजग रहता है और तदनुसार हिंदी में काम करने में रुचि लेता है। इसीलिए तो भारत सरकार के इस्पात एवं गृह मंत्रालयों द्वारा संगठन के काम को समय-समय पर सराहा एवं सम्मानित किया जाता रहा है। मुझे आशा है कि हमारे कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति यह लगाव आगे भी यथावत बना रहेगा और कई अन्य नये कीर्तिमान स्थापित होंगे।

मैं अंक की सफलता की कामना के साथ-साथ संपादन समूह को शुभकामना देता हूँ।

(डॉ सुरेश चंद्र पाण्डेय)

जी गांधी
G GANDHI

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
CHIEF GENERAL MANAGER (HUMAN RESOURCES)
RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED
VISAKHAPATNAM-530031

संदेश

राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना भी भारत सरकार के प्रमुख कार्यों में से एक है। अतएव राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड भी राजभाषा के संवर्धन हेतु अनेक गतिविधियाँ संचालित करता है। इसी क्रम में पत्रिका का प्रकाशन भी संगठन का एक प्रमुख कार्य है।

यह प्रसन्नता की बात है कि इस संगठन द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध' के सितंबर, 2024 अंक को 'प्रौद्योगिकी विकास के साथ राजभाषा हिंदी के स्वरूप में परिवर्तन' विषय पर विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। इस तरह के प्रयासों से हिंदी भाषा में तकनीकी साहित्य का विस्तार तो होगा ही और शोध के लिए प्रचुर मात्रा में सामग्री भी प्राप्त हो सकेगी।

मैं 'राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध' के विशेषांक की सफलता की कामना करता हूँ और पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ।

जी. गाँधी

(जी गांधी)

अपनी भाषा के लिए....

ओशो वाणी में एक उद्धरण आता है, उसमें मनुष्य की एक सामान्य धारणा की व्याख्या उद्धृत है कि, 'हम अपने को सामान्य बनाने की कोशिश में लगे रहते हैं कि हम बहुत सामान्य मनुष्य हैं, हमसे क्या होगा? आपसे ज्यादा विशेष न महावीर थे, न बुद्ध थे, न कोई कभी हुआ है। हर मनुष्य की उतनी ही गरिमा है, जितनी महावीर की थी, जितनी बुद्ध की थी। लेकिन हमने महावीर को बना दिया भगवान, जिसमें कि हम सामान्य हो सकें। बुद्ध को बना दिया अवतार, ताकि हम सामान्य हो सकें। क्राइस्ट को बना दिया ईश्वर पुत्र, ताकि हम सामान्य हो सकें। हम इन सारे लोगों को अलग कर दिया अपने से, ताकि हम सामान्य हो सकें। आराम से सो सकें और कह सकें कि जागना तो कुछ विशिष्ट लोगों का काम है। हम तो सामान्य लोग हैं, हम कैसे जाग सकते हैं। कोई मनुष्य सामान्य नहीं है। लेकिन इसका पता आपको तब तक नहीं चलेगा, जब तक कि बोध जागना शुरु न हो जाए। जब तक बोध नहीं जगा है, तब तक हर मनुष्य सामान्य है और बोध जगने लगे तो कोई सामान्य नहीं है। जब तक बीज में अंकुर न फूटे, ऐसा लगता है कि पता नहीं, इस बीज में वृक्ष है भी या नहीं। लेकिन ऐसा कोई भी बीज नहीं, जिसमें वृक्ष न हो। लेकिन इसका प्रमाण तो तभी मिलता है, जब उसमें अंकुर फूटे। तो अभी से अपने को सामान्य न समझ लें। अभी आप कुछ तय नहीं कर सकते। थोड़ा प्रयास करें। थोड़ी हिम्मत रखें, थोड़ा साहस करें। थोड़ा अंकुर फूटने दें, तब पता चलेगा कि कोई भी बीज ऐसा नहीं है, जिसमें वृक्ष न हो और कोई मनुष्य ऐसा नहीं है, जिसके भीतर परमात्मा की संभावना न हो। संभावना है, लेकिन उसे जगाना होगा।

ओशो की बातों में दम है। जब-जब मनुष्य और मानव समूह ने अपनी क्षमता को पहचाना है, तब-तब कुछ अप्रत्याशित और असंभव सा लगने वाले काम को संभव कर दिखाया है। लेकिन सामान्यतया जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ लेना सहज मानव मानव प्रवृत्ति है। कई बार तो ऐसा भी होता है कि हम स्वयं के काम को भी दूसरों के मत्थे मढ़ देते हैं। लेकिन सफलता का श्रेय अपने व असफलता का श्रेय दूसरे के सिर पर डाल देते हैं।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार, अनुप्रयोग एवं संवर्धन की जिम्मेदारी राष्ट्र के सभी नागरिकों की है। यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है। लेकिन हम इसकी जिम्मेदारी सरकार के कंधों पर डालकर स्वयं को जिम्मेदारियों से अलग भी कर लेते हैं। जब देश सबका है तो जिम्मेदारियाँ भी सबकी हैं। हाँ, यह भी सही है कि जिम्मेदारियों के स्वरूप अलग-अलग हो सकते हैं। लेकिल राष्ट्रनिर्माण के काम में हिस्सेदारी तो सबकी है।

हाल ही में देश ने अपना 78वाँ स्वाधीनता दिवस मनाया है और अपनी कई उपलब्धियों पर गर्व का अनुभव किया। भारत में भाषाओं के प्रश्न को बहुत ही हल्के ढंग से लिया जाता है, क्योंकि नौकरी-पेशा और रोजगार की भाषा के रूप में अंग्रेजी को स्थापित मान लिया गया है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को मात्र संचार की भाषा मानकर पल्ला झाड़ लिया जा रहा है। भाषा, विशेष रूप से राजभाषा के विकास को तो सरकार एवं उसके तंत्रों तथा हिंदी अधिकारियों का काम मानकर छोड़ दिया जा रहा है, जबकि राजभाषा के विकास एवं संवर्धन से सीधे जनसामान्य को फायदा होने वाला है। जब राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी विकसित हो जाएगी तो समूचे देश में समान शिक्षा, न्याय एवं संचार की व्यवस्था सुचारू एवं सटीक हो पाएगी।

लोकतंत्र में एक भाषा अथवा समान भाषा की संकल्पना से समता एवं बंधुता तेजी से पुष्पित और पल्लवित होती है एवं एक न्यायपूर्ण समाज का निर्माण होता है। यहाँ 'दृष्टि आई ए एस' के संस्थापक डॉ विकास दिव्यकीर्ति की एक प्रतिक्रिया, जो भारत के न्यायालयों द्वारा अंग्रेजी में फैसला सुनाये जाने के विरोध में दी गई है, उद्धृत करना उचित होगा।

डॉ विकास दिव्यकीर्ति सवाल उठाते हैं कि 'मान लीजिए, अंग्रेजी न जानने वाले किसी व्यक्ति का कोई मुकद्दमा न्यायालय में चल रहा हो तो उसमें एक पक्ष और एक विपक्ष के वकील जज के सामने अंग्रेजी में बहस करेंगे और जज साहब उस पर अपना फैसला सुना देंगे। सामने वाले व्यक्ति को कुछ पता ही नहीं कि उसके खिलाफ क्या-क्या कहा गया और उसे सजा हो गई। यह कैसी न्याय व्यवस्था है? इसे कैसे लोकतंत्र कहेंगे।

एक भारतीय होने के नाते हमें इन प्रश्नों का हल ढूँढ़ना है, ताकि देश में वास्तविक लोकतंत्र स्थापित हो सके। समाज के अंतिम व्यक्ति को उसकी अपनी भाषा में न्याय मिल सके। यह तभी संभव होगा, जब समाज का हर नागरिक अपनी भाषा के प्रति दायित्व को समझेगा और शासन व प्रशासन में उसकी भाषा का अनुप्रयोग किया जाएगा।

आज परिस्थितियाँ काफी बदल चुकी हैं। भाषाओं के शिक्षण-प्रशिक्षण एवं प्रचार-प्रसार-संवर्धन के लिए विज्ञान व तकनीक की सहूलियतें भी बहुत कारगर सिद्ध हो रही हैं। उनके उपयोग से भाषा सीखने-सिखाने व पढ़ने-पढ़ाने में बहुत तेजी आई है। लेकिन मानसिकता के प्रश्न पर हम अब भी एक तंग सोच के साथ ठिठके हुए से हैं। हमें ज्ञान-विज्ञान की रचना अपनी भाषा में करनी होगी। संदर्भ ग्रंथों की मात्रा भी हमें बढ़ानी होगी, तभी जाकर भाषाई रूप से देश मजबूत हो सकेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ 'राष्ट्रीय इस्पात सुगंध' का यह अंक, जो 'हिंदी भाषा एवं उसके विकास में शामिल तकनीक' को समर्पित है, उसे आपके समक्ष रखता हूँ। आशा है, पूर्व के अंकों की भाँति इस अंक को भी पढ़ेंगे और अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करायेंगे।

- संपादक

‘राष्ट्रीय इस्पात सुगंध’

आर आई एन एल की अर्द्धवार्षिक गृह-पत्रिका

वर्ष-2 - अंक-2 सितंबर 2024

संपादक

डॉ ललन कुमार

उप-संपादक

डॉ वी सुगुणा

गोपाल

प्रकाशन सहयोग

डॉ जे के एन नाथन

संपादकीय कार्यालय

राजभाषा विभाग

कमरा सं.245, पहला तल

मुख्य प्रशासनिक भवन

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड

विशाखपट्टणम-530031

मोबाइलः 9989317329, 9989888457 &

9949844146

मुद्रक

जी के प्रिंट हाउस प्राइवेट लिमिटेड

10-12-5/3, रेडनाम गार्डेन्स

एस बी आई मेन ब्रांच के पास

विशाखपट्टणम-530002

ई-मेलः gkprinthousepltd@gmail.com

‘राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध’ में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं एवं उनके प्रति ‘राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड प्रबंधन’ जिम्मेदार नहीं है।

‘राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध’ पत्रिका हमारे संगठन के वेबसाइट ‘www.vizagsteel.com’ के ‘Publications’ लिंक में भी उपलब्ध है।

विषयसूची

सृजनात्मक स्तंभ

लेख

हिंदी को विश्व-भाषा बनाने में प्रौद्योगिकी का योगदान	डॉ संजय रामन ‘विद्यावाचस्पति’	9
लोकगीतों में गूँजता स्वाधीनता संग्राम	श्री सुभाष सेतिया	13
दिल्ली के कुछ मशहूर शायरों के मकबरे व उनकी शायरी	डॉ सीताराम गुप्ता	16
हिंदी का वर्तमान स्वरूपः सकारात्मक व नकारात्मक पहलू	श्री ओम प्रकाश अग्रवाल	20
तेजी से बदलता हिंदी का स्वरूप	श्री नरेंद्र नाथ चट्टान	23
डिजिटल मीडिया में भूमंडलीकृत हिंदी का विस्तारित स्वरूप	श्री प्रवीण कुमार सहगल	26
हिंदी भाषा और तकनीक के मिलन की अद्वितीय यात्रा	सुश्री रश्मि किरण	30
परसाई साहित्य और सुधारवादी चिंतन	डॉ एस कृष्ण बाबु	33
हिंदी का बढ़ता वैश्विक प्रभाव	श्री दिनेश प्रताप सिंह ‘चित्रेश’	49
फिजेरिया (व्यंग्य)	श्री दिलीप कुमार	63
कहानी		
चिंतामणी (लघु कथा)	श्री अशोक वाधवाणी	12
ईमानदारी (लघु कथा)	श्री अशोक वाधवाणी	19
रॉंग नंबर (लघु कथा)	श्री राजेश पाठक	22
पढ़ी-लिखी (लघु कथा)	सुश्री रेणु गुप्ता	25
दो सौ तिरसठ गाँव	सुश्री रजनी शर्मा बस्तरिया	39
लूडो	सुश्री सुधा गोयल	46
चतुर सुजान (लघु कथा)	सुश्री मीरा जैन	48
सॉरी (लघु कथा)	श्री राजेश पाठक	50
कल्प कथा	श्री संजय कुमार सिंह	51
बाबू जी की आराम कुर्सी	श्री महेश शर्मा	60
आत्मिक आशीर्वाद (लघु कथा)	डॉ ऋषिमोहन श्रीवास्तव	62
नलवाड़ी मेला	डॉ संदीप शर्मा	64
मोबाइल मर्ज (लघु कथा)	श्री अशोक वाधवाणी	66
कविता		
श्री महेश केसरी की कविताएँ		54-55
सुश्री अनिता कपूर की कविताएँ		56-57
बाल-सुगन्ध		
खेल हमें खुशहाल बनाते हैं	मास्टर ए भास्कर	58
जीवन में खेलों का महत्त्व	सुश्री बशीरुन	59
मानक स्तंभ		
गतिविधियाँ		35-38
वी एस पी के बढ़ते कदम		
कोकिंग कोयला संकट की स्थिति में कोक ओवेन बैटरियों का प्रचालन		43-44
अध्यात्म		
कृतज्ञता		45
आओ भाषा सीखें		67-68
जरा गौर करें		69

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक निदेशक (परियोजना) एवं अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार) श्री अरुण कांति बागची की अध्यक्षता में 21 सितंबर 2024 को संपन्न हुई, जिसमें पिछली तिमाही के दौरान संगठन में राजभाषा निष्पादन की समीक्षा की गई। साथ ही वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने हेतु प्रतिबद्धता जाहिर की गई। बैठक में समिति ने यह निर्णय लिया कि ई-ऑफीस में उपलब्ध टिप्पणियों का दैनिक प्रशासनिक कार्य में अधिक से अधिक उपयोग किया जाय। बैठक में निदेशक गण एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। समिति के सदस्य-सचिव एवं महाप्रबंधक (राजभाषा व आतिथ्य) डॉ ललन कुमार ने बैठक का संचालन किया।

हिंदी को विश्व-भाषा बनाने में प्रौद्योगिकी का योगदान

- डॉ संजय रामन 'विद्यावाचस्पति' -

प्रस्तावना:

हिंदी भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, जिसकी सांस्कृतिक और भाषाई धरोहर अति समृद्ध है। हाल के वर्षों में, हिंदी को विश्व-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में कई महत्वपूर्ण प्रयास किये गये हैं। इनमें सबसे प्रमुख योगदान आधुनिक प्रौद्योगिकी का है, जिसने न केवल हिंदी भाषा की पहुँच को बढ़ाया है, वरन् इसे डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप भी ढाला है। प्रस्तुत आलेख में हिंदी को विश्व-भाषा बनाने में प्रौद्योगिकी के योगदान पर प्रकाश डाला गया है और इसके लिए कुछ नये वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये हैं।

हिंदी भाषा के विकास के लिए प्रौद्योगिकी ने अभूतपूर्व अवसर प्रदान किये हैं। इंटरनेट और स्मार्टफोन के व्यापक प्रसार ने हिंदी भाषियों को एक वैश्विक मंच पर संवाद करने की सुविधा प्रदान कर दी है। हिंदी में डिजिटल सामग्री की उपलब्धता ने न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में, बल्कि दुनिया भर में फैले हिंदी भाषी समुदायों को आपस में जोड़ा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने हिंदी को एक नई पहचान दी है, जहाँ हिंदी में लेखन, विचार-विमर्श और सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रभावी ढंग से हो रहा है।

इसके अतिरिक्त, मशीन अनुवाद तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने हिंदी भाषा को तकनीकी दृष्टिकोण से सराहनीय रूप से समृद्ध किया है। AI आधारित उपकरणों और सेवाओं ने हिंदी भाषा के उपयोग को आसान बनाया है और हिंदी भाषियों को डिजिटल उपकरणों के माध्यम से वैश्विक ज्ञान तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त किया है। इसी प्रकार, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्मों ने हिंदी में उच्च शिक्षा की सामग्री को उपलब्ध कराकर हिंदी के शैक्षिक दृष्टिकोण को व्यापक स्तर पर विस्तारित किया है।

इन सभी तकनीकी साधनों के माध्यम से हिंदी ने डिजिटल युग में अपनी महती पहचान बनाई है और एक वैश्विक भाषा बनने की दिशा में सशक्त कदम उठाये हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, हिंदी की पहुँच और प्रभाव विश्व स्तर पर लगातार बढ़ रहा है, जो इसे एक सशक्त और प्रासंगिक भाषा के रूप में स्थापित कर रहा है।

1. हिंदी के डिजिटल सामग्री का विकास और वितरण:

प्रौद्योगिकी के विकास ने हिंदी भाषा के लिए डिजिटल सामग्री को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट के आगमन और स्मार्टफोन के व्यापक प्रसार के साथ हिंदी में डिजिटल सामग्री का उपयोग द्रुत गति से बढ़ा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ब्लॉग, वेबसाइट और ऑनलाइन न्यूज पोर्टल आदि हिंदी भाषा में व्यापक स्तर पर उपलब्ध हैं, जो विश्व स्तर पर हिंदी भाषी समुदाय को जोड़ने में सहायक हैं। इसके साथ ही, डेटा विश्लेषण और एल्गोरिदम की मदद से, उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं के आधार पर हिंदी सामग्री का क्यूरेशन और वितरण भी किया जा रहा है। इसने हिंदी भाषा को डिजिटल युग में एक नया आयाम प्रदान किया है, जहाँ स्थानीय और वैश्विक सामग्री तक पहुँच सुगम हो गई है। आधुनिक डेटा संचार प्रोटोकॉल और क्लाउड स्टोरेज ने भी डिजिटल सामग्री के त्वरित प्रसार और सुरक्षित संग्रहण को संभव बनाया है, जिससे हिंदी भाषा की वैश्विक पहुँच में अभिवृद्धि हुई है। **'वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में हिंदी भाषा का योगदान निरंतर बढ़ रहा है, जो प्रौद्योगिकी के नये-नये प्रयोगों द्वारा संभव हो पाया है।'[1]**

2. हिंदी भाषा संसाधनों का विकास:

वर्तमान समय में हिंदी भाषा के लिए अनेक संसाधन उपलब्ध हैं, जिनका निर्माण तकनीकी उपकरणों द्वारा किया गया है। इनमें हिंदी शब्दकोश, व्याकरणिक जाँच उपकरण, अनुवाद सॉफ्टवेयर और पाठ्य सामग्री आदि शामिल हैं। इनमें से कुछ मुख्य संसाधन निम्नलिखित हैं:

हिंदी शब्दकोश और थिसॉरस:

ऑनलाइन प्लेटफार्म जैसे कि ऑक्सफोर्ड और मॅरियम-वेबस्टर ने हिंदी शब्दों और उनके अर्थों को अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनूदित करने के लिए विस्तृत शब्दकोश तैयार किये हैं। ये डिजिटल शब्दकोश न केवल शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करते हैं, बल्कि उनकी व्युत्पत्ति, उच्चारण और उपयोग के संदर्भ को भी प्रदर्शित करते हैं, जिससे भाषा शिक्षण और सीखने में अत्यधिक सहूलियत होती है। इसके अलावा थिसॉरस के माध्यम से समानार्थक शब्दों का सहज उपयोग भी संभव हो गया है।

हिंदी व्याकरण जाँच उपकरण:

प्रौद्योगिकी ने हिंदी लेखन की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए व्याकरणिक जाँच उपकरणों को विकसित किया है, जो लेखकों और अनुवादकों के लिए अत्यंत उपयोगी सावित हुए हैं। ये उपकरण मशीन लर्निंग और नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) एल्गोरिदम का उपयोग करके व्याकरणिक त्रुटियों का विश्लेषण करते हैं और उनमें सुधार का सुझाव देते हैं। इससे न केवल लेखन की सटीकता में वृद्धि होती है, बल्कि यह भी

लेख

सुनिश्चित होता है कि हिंदी भाषा का उपयोग आधुनिक मानकों के अनुरूप हो।

3. अनुवाद तकनीक और हिंदी:

मशीन अनुवाद तकनीक ने हिंदी से अन्य भाषाओं में अनुवाद करने और अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद करने के लिए एक नई दिशा प्रदान की है। गूगल ट्रांसलेट और अन्य अनुवाद सेवाओं ने हिंदी को एक वैश्विक भाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ये तकनीकें प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) और डीप लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करती हैं, जो भाषाई पैटर्न और शब्दार्थ को समझने में सक्षम होती हैं। **'अनुवाद तकनीक के विकास ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए नए अवसर खोले हैं, जिससे भाषाई अंतर को कम किया जा रहा है।'**[2] यह तकनीक न केवल हिंदी भाषी उपयोगकर्ताओं को विभिन्न भाषाओं में संवाद करने हेतु सक्षम बनाती है, बल्कि अन्य भाषाओं के उपयोगकर्ताओं को भी हिंदी सामग्री तक पहुँच प्रदान करती है। इससे न केवल भाषा के आदान- प्रदान की प्रक्रिया में तेजी आई है, बल्कि भाषाओं के बीच की सीमाओं को भी कम किया गया है, जिससे हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता में वृद्धि हुई है।

4. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और हिंदी:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग के क्षेत्र में प्रगति ने हिंदी भाषा के प्रसार को और भी व्यापक बनाया है। AI आधारित चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट जैसे कि गूगल असिस्टेंट और एलेक्सा, हिंदी में संवाद करने की उत्तम क्षमता रखते हैं। इससे हिंदी बोलने वाले सभी उपयोगकर्ताओं के लिए तकनीकी उपकरणों का उपयोग आसान हो गया है और हिंदी को डिजिटल प्लेटफार्म पर एक मुख्य भाषा के रूप में स्थापित करने में सहायता मिली है। इसके अलावा, AI-आधारित भाषा मॉडल जैसे कि GPT और BERT ने हिंदी के प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) में नये आयाम खोले हैं, जिससे टेक्स्ट जनरेशन, सेंटिमेंट एनालिसिस और ऑटोमेटेड ट्रांसलेशन जैसे कार्यों को हिंदी में कुशलतापूर्वक किया जा सकता है। **'कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ हिंदी भाषा की संगति ने इसके प्रसार को और भी गति दी है, जिससे हिंदी को नई दिशा मिल रही है।'**[3] यह प्रौद्योगिकी न केवल हिंदी के व्यापक उपयोग को प्रोत्साहित करती है, बल्कि इसके संरचनात्मक और व्याकरणिक पहलुओं को भी बेहतर ढंग से समझने और लागू करने में सक्षम बनाती है, जिससे हिंदी भाषा की डिजिटल और वैज्ञानिक प्रासंगिकता में अद्वितीय वृद्धि हुई है।

5. ई-लर्निंग और हिंदी:

ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स जैसे Coursera, Udemy और Khan Academy ने हिंदी में पाठ्यक्रमों की उपलब्धता को बढ़ाया है। इसके साथ ही भारत सरकार द्वारा आरंभ किये गये विभिन्न ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे Swayam और NPTEL ने भी हिंदी में पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई है, जिससे हिंदी में उच्च शिक्षा की संभावना में वृद्धि हुई है। इन प्लेटफार्म्स ने शिक्षण में नवीनतम तकनीकों - जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) का उपयोग किया है, जिससे व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव को और अधिक प्रभावी बनाया गया है। उदाहरण के लिए AI आधारित एल्गोरिदम छात्रों के सीखने की शैली का विश्लेषण करते हैं और उनके लिए अनुकूलित पाठ्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। हिंदी भाषा को न केवल भारत में, वरन् विदेशों में भी व्यापक रूप से प्रचारित और प्रसारित करने में सहायता मिली है।

6. सोशल मीडिया और हिंदी:

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब ने हिंदी को एक प्रमुख भाषा के रूप में अपनाया है। हिंदी में कंटेंट क्रिएटर्स की संख्या में भी तेजी से वृद्धि हो रही है। इसके साथ ही हिंदी में ऑनलाइन समुदायों का निर्माण हो रहा है, जहाँ उपयोगकर्ता अपनी भाषा में विचार-विमर्श कर सकते हैं और साथ ही हिंदी साहित्य, कला और संस्कृति का प्रसार कर सकते हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया ने हिंदी को एक वैश्विक मंच प्रदान किया है, जहाँ से आज हिंदी व्यापक रूप से पहचानी जाने लगी है। **'डिजिटल युग में हिंदी भाषा का महत्त्व अधिक बढ़ गया है, क्योंकि इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से**

हिंदी का प्रसार विश्व भर में हो रहा है।'[4]

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का हिंदी भाषा के प्रसार में योगदान का अध्ययन 'नेटवर्क थ्योरी' और 'वायरलिटी' के सिद्धांतों के माध्यम से किया जा सकता है। नेटवर्क थ्योरी के अनुसार, सोशल मीडिया पर कंटेंट का प्रसार एक नेटवर्क के रूप में होता है, जहाँ हिंदी सामग्री तेजी से विभिन्न समुदायों में फैलती है। इसके अलावा, 'वायरलिटी' के सिद्धांत के तहत, एक बार जब कोई हिंदी सामग्री लोकप्रिय हो जाती है तो वह तेजी से वायरल हो सकती है, जिससे हिंदी का वैश्विक स्तर पर प्रभाव बढ़ता है। इस वैज्ञानिक आधार पर सोशल मीडिया ने हिंदी को एक जीवंत और वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

7. हिंदी भाषा और सॉफ्टवेयर विकास:

हिंदी भाषा सॉफ्टवेयर, विकास के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बना रही है। विभिन्न सॉफ्टवेयर और एप्लिकेशन हिंदी में उपलब्ध हैं, जो उपयोगकर्ताओं को उनकी मातृभाषा में तकनीकी सेवाएँ प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए हिंदी में उपलब्ध माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस सूट, गूगल डॉक्स और अन्य उत्पादकता उपकरण हिंदी में लिखने, पढ़ने और संवाद करने को सरल बनाते हैं। इसके अलावा हिंदी में उपलब्ध ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर और ऐप्स ने छोटे और मध्यम उद्योगों के लिए हिंदी में तकनीकी सेवाओं का प्रसार किया है। इन सॉफ्टवेयरों के विकास में प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) और मशीन लर्निंग जैसे अत्याधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे हिंदी में टेक्स्ट का सटीक अनुवाद और वर्तनी जाँच आदि जैसे सूक्ष्म, परंतु महत्त्वपूर्ण कार्यों को स्वचालित किया जा सकता है। यह तकनीकी प्रगति न केवल उपयोगकताओं के लिए सुविधा बढ़ाती है, बल्कि हिंदी को वैश्विक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में भी सशक्त बनाती है।

8. विज्ञान और तकनीक में हिंदी का प्रयोग:

भारत सरकार ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न पहलें की हैं। तकनीकी शब्दावली आयोग (Commission for Scientific and Technical Terminology - CSTT) ने विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों का हिंदी में अनुवाद किया है। इससे हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य और अनुसंधान की संख्या में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप, वैज्ञानिक शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है, जिससे छात्रों और शोधकर्ताओं को उनकी मातृभाषा में विज्ञान को समझने और उस पर काम करने में सहायता मिलती है। हिंदी में वैज्ञानिक जर्नल्स और पत्रिकाओं के प्रकाशन से यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि तकनीकी जानकारी अधिक व्यापक रूप से उपलब्ध हो। साथ ही विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों ने हिंदी में तकनीकी ज्ञान को प्रसारित करने के लिए प्रकाशन को बढ़ावा देने के साथ-साथ और संगोष्ठियाँ भी आयोजित की हैं, जिससे हिंदी को विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। नि:संदेह यह हिंदी को स्थानीय नवाचार और तकनीकी विकास में भी एक नई पहचान दिलाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

9. हिंदी सिनेमा और डिजिटल स्ट्रीमिंग:

हिंदी सिनेमा ने भी प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म जैसे कि नेटफ्लिक्स, अमेजान प्राइम और हॉटस्टार ने हिंदी फिल्मों, वेब सीरीज और डॉक्युमेंट्री (वृत्तचित्र) को विश्व भर में पहुँचाया है। इससे हिंदी भाषा की पहुँच केवल भारत में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी बढ़ी है। इसके अतिरिक्त, हिंदी फिल्मों का अनुवाद और डबिंग अन्य भाषाओं में किया जा रहा है, जिससे हिंदी भाषा को एक अंतरराष्ट्रीय पहचान मिल रही है। डिजिटल स्ट्रीमिंग की सफलता के पीछे मशीन लर्निंग और एल्गोरिदम की भूमिका भी महत्वपूर्ण है, जो व्यक्तिगत उपभोक्ता की पसंद और व्यवहार के आधार पर कंटेंट की सिफारिश करते हैं। इस प्रकार प्रौद्योगिकी ने न केवल हिंदी सिनेमा को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया है, बल्कि इसकी लोकप्रियता और स्वीकार्यता को भी बढ़ाया है, जिससे यह एक वैश्विक सांस्कृतिक उत्पाद बन गया है।

10. हिंदी के लिए वैश्विक मानकीकरण और प्रमाणीकरण:

प्रौद्योगिकी ने हिंदी भाषा के लिए वैश्विक मानकीकरण और प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को भी सरल बना दिया है। इंटरनेट पर हिंदी भाषा की पहचान के लिए यूनिकोड (Unicode) का व्यापक रूप से प्रयोग किया जा रहा है। यूनिकोड एक कंप्यूटिंग इंडस्ट्री स्टैंडर्ड है, जो विभिन्न भाषाओं के टेक्स्ट को कोड करने के लिए एक समान अंकन प्रदान करता है। यह तकनीक हिंदी के लिए एक वैश्विक मानक बनाती है, जिससे हिंदी में टेक्स्ट का समर्थन करने वाले उपकरणों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसके अलावा हिंदी भाषा के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों की स्थापना और प्रमाणीकरण भी प्रौद्योगिकी के माध्यम से हो रहा है, जिससे हिंदी को एक विश्वसनीय और सम्मानित भाषा के रूप में मान्यता मिल रही है। यह मानकीकरण प्रक्रिया डिजिटल संचार में संपूर्णता, सटीकता और सुरक्षा सुनिश्चित करती है, जो हिंदी के वैश्विक उपयोग को और भी अधिक सुगम बनाती है। **'वैश्विक संचार नेटवर्क में हिंदी की भूमिका को मजबूत करने के लिए चुनौतियाँ और अवसर दोनों ही सामने आये हैं।'[5]**

11. हिंदी भाषा के विकास के लिए वैश्विक संचार नेटवर्क :

वैश्विक संचार नेटवर्क, जिसमें उपग्रह संचार, इंटरनेट और मोबाइल नेटवर्क शामिल हैं, ने हिंदी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन संचार माध्यमों के द्वारा हिंदी भाषा को दूर-दूर तक पहुँचाया जा रहा है, जिससे हिंदी भाषी समुदायों के बीच आपसी संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही हिंदी भाषा के प्रसार के लिए अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसियाँ और रेडियो नेटवर्क भी हिंदी में सामग्री प्रसारित कर रहे हैं, जिससे हिंदी की वैश्विक पहचान में वृद्धि हुई है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यदि देखें तो संचार नेटवर्क की उच्च बैंडविड्थ और लोअर लेटेंसी ने वास्तविक समय में हिंदी भाषा के प्रसार को सक्षम बनाया है। इसके अतिरिक्त नेटवर्क की स्केलेबिलिटी ने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में हिंदी सामग्री की उपलब्धता को सरल बना दिया है, जिससे हिंदी भाषा की वैश्विक उपस्थिति को सुदृढ़ किया जा सकता है।

निष्कर्ष :

प्रौद्योगिकी ने हिंदी भाषा के वैश्वीकरण में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई है, जिससे यह न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी एक महत्त्वपूर्ण भाषा के रूप में स्थापित हो रही है। डिजिटल सामग्री का सृजन, अनुवाद तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सोशल मीडिया, ई-लर्निंग, सॉफ्टवेयर विकास और वैश्विक संचार नेटवर्क ने हिंदी को एक व्यापक और सुलभ भाषा बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। विज्ञान और तकनीक में हिंदी के प्रयोग के साथ-साथ वैश्विक मानकीकरण और प्रमाणीकरण प्रक्रियाओं ने हिंदी की प्रतिष्ठा को और अधिक सुदृढ़ता प्रदान की है। यह स्पष्ट है कि भविष्य में प्रौद्योगिकी हिंदी भाषा के विकास और विस्तार में एक प्रमुख भूमिका निभाती रहेगी, जिससे हिंदी को विश्व-भाषा के रूप में और भी दृढ़ता से स्थापित किया जा सकेगा।

- प्लॉट सं.2/463
श्री बालाजी नगर, पेरियपालयम हाई रोड
तिरुनिंड्रवुर, तिरुवल्लुवर
चेन्नई-602024
मोबाइल नंबर: 6381710754

संदर्भ :

1. हिंदी भाषा और प्रौद्योगिकी, प्रोफेसर रमेश चंद्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.121-138
2. भाषाई अनुवाद: सिद्धांत और व्यवहार, प्रोफेसर सुरेश वर्मा, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.145-162
3. हिंदी और प्रौद्योगिकी का संगम, डॉ संजीव कुमार, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.57-74
4. हिंदी भाषा और उसका वैश्विक संदर्भ, डॉ राधेश्याम तिवारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.89-105
5. हिंदी का भविष्य और उसकी संभावनाएँ, डॉ अनिल कुमार सिंह, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.203-220

चिंतामणी

- श्री अशोक वाधवाणी -

यूँ तो उसके माता-पिता बचपन से उसे जुगनू कहकर बुलाते हैं। लेकिन हमेशा अपने आप में गुमसुम रहने, कम बोलने और अधिक सोचने के कारण कुछ लोग उसे चिंता कुमार, चिंतामणी, चिंतातुर आदि कहते रहते हैं। वह लोगों की परवाह किये बिना, खुद में ही मस्त, मगन रहता है। एक सुबह माँ ने जुगनू को समझाते हुए कहा, 'हमें जिस विवाह का आमंत्रण मिला है, वहाँ तुम्हें अकेले ही जाना है। लड़की वाले अपनी बेटी के साथ तुमसे मिलकर बातचीत करेंगे। नंदी बैल की तरह 'हाँ' या 'ना' में सर हिलाकर जवाब मत देना। लड़की को ध्यानपूर्वक देखकर, उससे खुलकर बातें करना। लड़की हमने देखी है। हमें बहुत पसंद है। अगर लड़की वालों ने तुम्हें पसंद कर लिया तो तुम्हारे भाग्य खुल जायेंगे। मुझे तुम्हारी चिंता लगी रहती है। मेरे जीते जी तुम्हारी शादी हो जाए। बस! अब तुम रेलवे स्टेशन जाओ। वहाँ जाकर, सोचने मत बैठना...। जुगनू ने माँ के पैर छुये और चल पड़ा रेलवे स्टेशन की ओर।

जुगनू ने रेल के बारे में पूछताछ की तो पता चला रेल आधा घंटा लेट है। वह निश्चिंत होकर कुर्सी पर बैठ गया। थोड़ी देर में उसका विचार चक्र शुरु हो गया। उसकी तंद्रा टूटी तो पता चला कि रेल आकर, चली भी गई। अगली ट्रेन शाम को थी। वह निराश होकर घर लौट आया। माँ ने घर लौट आने का जुगनू से कारण पूछा। 'ट्रेन लेट थी। बैठे-बैठे मन में विचारों का आदान-प्रदान शुरु हुआ। मैं सोचने लगा कि लड़की वालों ने मुझे पसंद कर लिया तो मेरी शादी होगी। शादी के बाद तुम्हारी बात मानूँगा तो पत्नी नाराजगी से मुझे 'ममाज बॉय' कहेगी। अगर मैंने पत्नी की बात मानी तो आप मुझे 'जोरू का गुलाम' कहकर डाँटोगी। इसी उधेड़बुन में था कि ट्रेन कब आई-गई, कुछ पता ही नहीं चला। जुगनू की बात सुनकर माँ सर पकड़कर धम्म से जमीन पर गिर पड़ी।

- गांधी नगर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र
मोबाइल नंबर: 9421216288
ई-मेल: ashok.wadhwani57@gmail.com

लोकगीतों में गूँजता स्वाधीनता संग्राम

- श्री सुभाष सेतिया -

लोक साहित्य और लोक संगीत किसी भी समाज की आत्मा होते हैं। वे व्यक्ति को व्यष्टि के साथ जोड़ते हैं और अपने समय के सच के वाहक भी होते हैं। लोक साहित्य हमारे समाज और देश की लोक संस्कृति का प्रतिबिंब है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति एवं जन जीवन की आंतरिक विविधता और महा विस्तार इसके लोक साहित्य, विशेष रूप से लोक गीतों में निहित है। गेयता लोक काव्य का आभूषण है, अत: यह मुख्यतया लोक गीतों में ही प्रस्फुटित होती है। बहुत से लोक गीत श्रुति परंपरा के चलते एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते रहते हैं और दूसरी ओर बदलते समय की नई परिस्थितियों की अभिव्यक्ति के लिए समय-समय पर नये-नये लोक गीत सृजित होते रहते हैं। यही कारण है कि हिंदी की विविध बोलियों और उप भाषाओं में रचित लोक गीत अपने क्षेत्र विशेष के साथ-साथ समूची भारतीय मानसिकता एवं संस्कृति की पहचान के दस्तावेज हैं।

लोक गीतों की प्रामाणिकता एवं प्रासंगिकता शिष्ट साहित्य की तुलना में इसलिए अधिक है, क्योंकि इनमें व्यक्ति के बजाय समाज को प्रमुखता दी जाती है। लोक गीतों में रचयिता गौण रहता है और रचना प्रमुख हो जाती है। व्यक्ति पर समष्टि की प्राथमिकता का यही तत्व लोक गीतों की सच्ची शक्ति है। लोक गीतों का प्रत्यक्ष उद्देश्य तो अपने भाषा समुदाय का मनोरंजन और मन बहलाना होता है। किंतु ये इस उद्देश्य से कहीं आगे बढ़कर लोगों को शिक्षा देते हैं और परिवार, समाज और देश के प्रति कर्तव्यबोध भी जगाते हैं।

इस संदर्भ में हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम का उदाहरण लिया जा सकता है। 1857 से 1947 तक के 90 वर्षों के दौरान रचे गये असंख्य लोक गीतों में न केवल विदेशियों को भारत से बाहर खदेड़ देने का आह्वान गुंजायमान होता है, बल्कि स्वतंत्रता के लिए शहीद होने और त्याग करने वाले महान पुरुषों व नारियों के यशोगान की भी ध्वनि सुनाई पड़ती है। यही नहीं, बहुत से लोक गीतों में अंग्रेजी शासन व्यवस्था में व्याप्त असमानता, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध भी बिगुल बजाया गया है।

वास्तव में भारत को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने और देशवासियों में परिवर्तन एवं क्रांति का भाव पुष्ट करने में स्वतंत्रता सेनानियों और लोक गीतकारों ने एक दूसरे के लिए पूरक का काम किया। हिंदी क्षेत्र के लोक गीतकारों ने स्वातंत्र्य चेतना जागृत करने के उद्देश्य से जिन लोक गीतों का सृजन किया और जिन लोक गीतों को गली-गली में गाकर हजारों, लाखों लोगों को देश की मुक्ति के संघर्ष में कूद पड़ने के लिए प्रेरित किया, वे हमारे राष्ट्रीय लोक साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

अपने शासनकाल में अंग्रेजों ने देश के राजनीतिक क्षितिज पर अपनी विस्तार यात्रा जारी रखने के साथ-साथ भारत के जन-जीवन को प्रभावित और नियंत्रित करने की सुनियोजित नीति को क्रियान्वित किया। अंग्रेजों के इन विस्तारवादी प्रयासों के प्रति स्थानीय स्तर पर विरोध होते रहे। किन्तु इन विद्रोहों की चरम परिणति 1857 के विद्रोह के रूप में हुई, जिसे बाद में इतिहासकारों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का नाम दिया। इस क्रांति और इसकी महानायिका रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का बखान अनेक लोक गीतों में हुआ है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी' भी लोक गीत का दर्जा प्राप्त कर चुकी है। किन्तु इससे पहले यानी उस संघर्ष के दौरान और उसके बाद के कुछ वर्षों में लोक गीतकारों ने बड़े उत्साह के साथ 1857 के संघर्ष के वीरों के शौर्यपूर्ण कारनामों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी। यों तो सभी बोलियों के लोक गीतों में झांसी की रानी का गुणगान किया गया है। किन्तु बुंदेली लोक गीतों में 1857 की क्रांति की विशेष रूप से चर्चा हुई है। इस संग्राम के बहुत से रणबांकुरों की स्मृति तो केवल इन गीतों के कारण ही शेष रह सकी है, क्योंकि इतिहास एवं शिष्ट साहित्य में इनका कहीं उल्लेख नहीं है। इनमें अनेक बुंदेली वीरांगनाएँ भी शामिल हैं, जिनकी स्मृति को जनकवियों ने अपने लोक गीतों के माध्यम से अमरता प्रदान

की। एक बुंदेली लोक गीत में भारतीय जनता के हृदय पर राज करने वाली वीरांगना लक्ष्मीबाई की वीरता का गुणगान द्रष्टव्य है-

'बाई साव झांसी वारी
घर के रूप चली मरदानी, अंगरेजन से लरी दिमानी,
संका काउ की नई मानी
ले तरवार कटा कर डारे, मन में रोस बड़ों भारी,
बाई साव झांसी वारी।'

अन्य अनेक अल्पज्ञात विभूतियों को भी लोक गीतकारों ने अपनी श्रद्धांजलि दी। प्रस्तुत लोकगीत में जिगनी की नन्हीं रानी के युद्ध-कौशल का वर्णन करते हुए इस ऐतिहासिक लक्ष्य को उजागर किया गया है कि वह तांत्या टोपे के साथ मिलकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा रही थी -

'नन्हीं रानी उद्यम करती, जिगनी में दम भरती
संग में ज्वान सात सौ लैके फौज फिरंगिन भरती
लूट खजानो, छिड़ा हतपारन, मंदिर डेरा करती
पूजा करती, राम सुमरती, तांत्या से मिल चलती।'

1857 की इस चिंगारी के बाद बड़ी तेजी से आजादी की लड़ाई की बागडोर सामान्य जनता में से उभरे नेताओं के हाथों में पहुँच गई। ऐसे में लोक गीतकारों ने देशभक्त और राष्ट्र के लिए जान न्यौछावर करने की चेतना जागृत करके स्वतंत्रता आंदोलन में तेजी लाने की अपनी भूमिका निभाई। ब्रज भाषा के एक लोक गीत में देश के पूर्वजों, नदियों, पर्वतों आदि की याद दिलाते हुए लोगों में देश भक्ति का भाव जगाने की कोशिश की गई है -

'सबको रह्यो सदा सरताज, भारत देश हमारो प्यारौ।
जहाँ गंगा जमना प्यारी गोदावरी सरसुति न्यारी
चक्करवर्ती भये महाराज जिनका राज जगत में सारौ
हिमगिरी माँ पर्वतराजा, दुनिया में ऊँचा साजा
राखी दीन दुखिन की लाज पुरखन सदा सदा पन प्यारौ।'

यद्यपि देश को स्वतंत्र कराने के महायज्ञ में असंख्य महापुरुषों ने अपनी आहुति दी और जेल, लाठी, गोली आदि झेलकर अपना जीवन भारत माता के चरणों में समर्पित कर दिया। किंतु कुछ नेता आम जनता की भांति लोक गीतकारों को भी विशेष प्रिय रहे। इनमें गांधी, जवाहर और सुभाष चंद्र बोस विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। गांधी जी की चर्चा उस समय के लोक गीतों में सबसे अधिक मिलती है। एक लोक गीत में गांधी जी की तुलना राम और कृष्ण से करते हुए कहा गया कि उन्होंने देश को स्वाधीन कराने के लिए अवतार लिया -

'अवतार महात्मा गांधी हैं भारत को भार उतारन को।
सिरीराम ने रावण मारा था, कान्हा ने कंस पछाड़ा था।
अब गांधी ने अवतार लिया इन अंगरेजन के मारन को।
सिरीराम के हाथ में धनुषवाण, कान्हा के हाथ में सुदर्शन था।
गांधी के हाथ में चरखा है, भारत वासिन को तारन को।'

गांधी जी ने स्वाधीनता प्राप्ति के साथ-साथ समाज में गरीबी दूर करने के लिए स्वदेशी, खादी अथा अन्य रचनात्मक कार्यक्रम भी चलाये थे, जिन्हें लोकप्रिय बनाने में लोक गीतों की उल्लेखनीय भूमिका रही। चरखा उस समय स्वदेशी, सादगी, आर्थिक स्वावलंबन और आजादी का प्रतीक बन गया था।

एक बुंदेली गीत 'चरखवा चालू रहै' अपने समय में अत्यंत लोकप्रिय हुआ। यह लोकगीत अन्य बोलियों में रूपांतरित होकर भी गाया जाने लगा। बुंदेली लोक गीत इस प्रकार है -

'देखो टूटै न चरखा कौ तार, चरखवा चालू रहे।
गांधी महात्मा दूल्हा बने हैं, दुलहिन बनी सरकार।
चरखवा.........
सबरे वालेंटियर बने बराती, नउआ बना थानेदार।
चरखवा........
सब पटवारी गारी गावें, पूड़ी बेलें तहसीलदार।
चरखवा............
गांधी महात्मा नेग में मचले, दायजे में माँगे सुराज।
चरखवा......
ठाड़ी गवर्नमेंट बिनती सुनावै, जीजा, गौने में देबो सुराज।
चरखवा......'

इसी लोक गीत को अवध क्षेत्र की महिलाएँ इस प्रकार गा-गाकर आजादी की अलख जगाती थीं -

'मोरे चरखा का टूटे न तार
चरखवा चालू रहे
गांधी दूल्हा बने हैं
दुल्हन बनी सरकार। चरखवा चालू......
सबरे वालेंटियर बने बराती
नउवा बना थानेदार। चरखवा चालू.......'

सुभाष चंद्र बोस ने 'आजाद हिंद फौज' की स्थापना करके और विदेशी धरती पर जाकर अंग्रेजी हुकूमत को ललकारा था, अत: उनके प्रति लोक गीतकारों में अधिक लगाव देखा गया है:

'भई लड़ाई शुरू सनन सन गोली सन्नानी।
दोऊ दल बढ़ि रहे, करन हित अपु अपु कुरबानी
जहाजें घरर घराने।
बढ़ी फौज आजाद मोरचा दुश्मन ने हारो।
विजय ध्वनि तब तक घहरानी।'

गीतकारों ने अपनी रचनाओं में उन घटनाओं का भी उल्लेख किया, जो स्वतंत्रता की आग को भड़काने में सहायक बनने के साथ-साथ आजादी की प्राप्ति के महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुए। इनमें जलियाँवाला बाग नरसंहार, साइमन कमीशन, असहयोग आंदोलन, स्वराज की घोषणा, 1942 का भारत छोड़ो

आंदोलन, डांडी मार्च आदि उल्लेखनीय हैं। प्रस्तुत लोक गीत में **1942** के आंदोलन के दौरान बलिया क्षेत्र में हुई घटना का उल्लेख करते हुए गांधी जी द्वारा अहिंसक रास्ते से आजादी प्राप्त करने के प्रयासों की ओर इशारा किया गया है -

'बाजी भारत की रनभरी, सुन सन् ब्यालिस केरी।
क्रांतिदल की धूम मची तो, बलिया में जिन केरी।
इक तें एक हवें भर बांके, तरूनई रंग रंगे रई।
दहल उठी अंग्रेजी 'मथुरा' देख फौज इन केरी।।'

लोक गीतकारों ने सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाने वाले युवकों व किशोरों की कुर्बानी तथा शौर्य का भी खुलकर बखान किया। इन क्रांतिकारियों में से शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल आदि के बलिदान को लोक गीतों में विशेष स्थान मिला।

पूर्वांचल की बोली अंगिका के एक लोक गीत में क्रांतिकारियों के सिरमौर अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद के बलिदान को आजीवन न भुलाने की बात कही गई है:

'हौ आजाद त्वौं अपनौ प्राणे कउ
आहुति दै के मातृभूमि कै आजाद करैलहों।
तोरो कुर्बानी हम्मै जिनगी भर नैऽभुलैवे,
देश तोरो रिनी रहेते।'

शहीदे-आजम भगत सिंह तो आज तक भारतीय जनमानस पर छाए हुए हैं और वे लोक स्मृति का अभिन्न अंग बन गये हैं। ब्रजभाषा के इस लोकगीत में भगत सिंह के साथ-साथ उन क्रांतिकारियों का भी स्मरण किया गया है, जो भारत माता की आन की खातिर हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गये -

'भगतसिंह बटुकेश्वर बदो जिन्हें देश के डरपै काल।
नौकरशाही थर-थर काँपे जैसे गरुड़ देख के काल।
जतींद्रनाथ के चरण कमल को सिर धर बंदो बारंबार।
प्राण छूटे पै प्रण नहीं छूटे तिरसठ दिन नहीं कियो आहार।'

गीतकारों ने अपने-अपने क्षेत्र के उन स्थानीय नायकों को भी अपनी रचनाओं का विषय बनाया, जो राष्ट्रीय ख्याति तो अर्जित नहीं कर पाए, किंतु अपने-अपने स्तर पर जिन्होंने महान त्याग एवं शौर्य का परिचय दिया। उदाहरण के लिए रायबरेली क्षेत्र के सूरमा बेनी माधव की स्मृति इस लोकगीत में द्रष्टव्य है-

'तेरी तेग ताव मांहि तड़पत जात 'कृष्ण'
काटि काटि मुंड झुंड पटकतू है।
मच्छिक समान उड़ावती है शत्रु शीश,
गौरंग सुअंग के सुआंग सौ रंगतु है।
खंग कोपि तोपि देत तोपन को लोथिन सों,
गगन गगन को कछु न गनतु है।
सरपै समान असि, सर पै समान अरि,
सर पै नहाय रक्त सरजा करतु है।'

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की एक विशेषता यह थी कि वह केवल राजनीतिक स्वाधीनता तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें लोकतंत्र, समाजवाद, सांप्रदायिक सद्भाव, हरिजनोद्धार, सामंतशाही व आर्थिक शोषण का विरोध जैसे मूल्यों को पुष्ट करने के प्रयास भी शामिल थे। इससे भी आगे बढ़कर नशाबंदी, महिला पुरुष समानता जैसे सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रमों को भी स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न अंग बनाया गया। इन मुद्दों ने लोक गीतकारों को भी प्रेरित किया और उन्होंने समाज सुधार के इन पहलुओं को जन-जन तक पहुँचाने की कोशिश की।

एक बुंदेली लोकगीत में अंग्रेजी शासकों द्वारा की जा रही लूट तथा भारतीयों को कंगाल बनाने की उनकी कुचेष्टा का पर्दाफाश किया गया है:

'हरे हरे खेत उजड़ गये सबेरे,
लूटी रे संपति सारी बिदिसिया।
छै छै बीज फूट के तैने,
कर दयो देश भिखारी बिदिसिया।।'

एक बघेली लोकगीत में नशे के दुष्परिणामों की ओर संकेत करते हुए लोगों को शराब, तंबाकू, अफीम, गांजा और अन्य सभी नशीले पदार्थों से तौबा करने का संदेश दिया गया है -

'ये नशाबाजी मा गा रे
तू हो जावे शराब-नशाबाजी मा गा रे
पान सुपारी मुँह भर खंवे
घरी-घरी उठि थूँके
गांजा भांग खाये से बाबू
घरी घरी मुँह सूखे
ने नशाबाजी मा गा रे।'

ब्रजभाषा के इस लोक गीत में छुआछूत की सामाजिक बुराई के साथ-साथ भूमि सुधारों के आर्थिक पहलू को बड़ी सुंदरता के साथ जोड़ दिया गया है। यह लोक गीत उस समय के समाज में धीरे-धीरे आ रही जागृति का दृष्टांत है -

'छूआछूत की आन मिटाओ बेरन बीमारी -
बुरो बुशक मानो कोई।
जाकी होगी भूमि, खेत को जोतेगो जोई।

- सी-302, हिंद अपार्टमेंट्स
प्लाट नं.12, सेक्टर-5
द्वारका, नई दिल्ली-110075
मोबाइल नंबर: **9910907662**

लेख

दिल्ली के कुछ मशहूर शायरों के मकबरे व उनकी शायरी

- डॉ सीताराम गुप्ता -

'हर कब्र, मजार व समाधि में दफ्न होती है
पूरे जमाने की सच्चाई'

उर्दू शायर पंडित ब्रजनारायण कौल चकबस्त लखनवी का एक शेर है:

'बादे-कजा फिजूल है नामो-निशाँ की फिक्र,
जब हम नहीं रहे तो रहेगा मजार क्या?'

बादे-कजा अर्थात् मृत्यु के बाद नामो-निशाँ की फिक्र करना बेकार है। क्योंकि जब आदमी ही नहीं रहेगा तो उसकी कब्र, मजार या मकबरा बना भी दिया जाए तो उसका क्या प्रयोजन हो सकता है? वैसे भी कोई कब्र, मजार या मकबरा कब तक अपना अस्तित्व बनाए रखेगा? आदमी की तरह उसकी कब्र या मजार का भी एक दिन मिट्टी में मिल जाना स्वाभाविक और निश्चित है। कई मजारों, मकबरों अथवा समाधियों पर ऐसी पंक्तियाँ भी दर्ज होती हैं, जिनमें जीवन की नश्वरता का वर्णन मिलता है। लेकिन फिर भी मजारों, मकबरों अथवा समाधियों के निर्माण की प्रक्रिया निरंतर जारी है और संभावना है कि यह आगे भी जारी रहेगी। क्या कारण हो सकता है इसका?

एक कारण तो यही लगता है कि समाज उन लोगों की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखना चाहता है, जिन्होंने समाज के उत्थान में महत्त्वपूर्ण सकारात्मक योगदान दिया है। दूसरे कुछ लोग अपने प्रियजनों की स्मृति को अक्षुण्ण रखने अथवा उनके प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए भी ऐसे स्मारकों का निर्माण करवाते हैं। पीर-फकीरों अथवा साधु-संतों की दरगाहों का निर्माण लोग श्रद्धावश भी कराते हैं। कुछ लोगों की प्रभुता अथवा संपन्नता भी विभिन्न स्मारकों के निर्माण के लिए उत्तरदायी होती है। जो भी हो, विद्यार्थियों और युवाओं में इतिहास के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। ये विभिन्न कब्रें, मजार, मकबरे, समाधियाँ अथवा अन्य स्मारक हर आमो-खास के लिए इतिहास की कड़ियों को जोड़कर इतिहास को समग्र रूप से जानने-समझने का एक बेहतर मौका उपलब्ध कराते हैं और इतिहास के माध्यम से सभ्यता और संस्कृति तथा साहित्य और कला को जानने का अवसर।

हजरत अमीर खुसरो देहलवी खड़ीबोली अथवा हिंदवी भाषा के पहले कवि माने जाते हैं। हिंदी वाले उन्हें हिंदी का कवि मानते हैं तो उर्दू वाले उर्दू का। बहरहाल वे एक अत्यंत लोकप्रिय कवि हैं। उनकी दोसुखाना नामक काव्य शैली अथवा विधा में कुछ रचनाएँ मिलती हैं। उनके कुछ दोसुखाने देखिए:

'राजा प्यासा क्यों? गधा उदासा क्यों?'
लोटा न था।'

यहाँ दोनों समस्याओं अथवा पहेलियों का उत्तर है 'लोटा न था।' 'लोटा' नामक बर्तन न होने की वजह से राजा पानी न पी सका और प्यासा ही रह गया। गधे की उदासी का कारण भी था उसका रेत में लोट न मार सकना।

'समोसा क्यों न खाया? जूता क्यों न पहना?
तला न था।'

यहाँ पर भी दोनों समस्याओं अथवा पहेलियों का उत्तर है 'तला न था।' तला न जाने की वजह से समोसा कच्चा था। अत: खाया नहीं जा सकता था और 'जूते में तला' अर्थात् सोल न होने की वजह से पहना नहीं जा सकता था।

'खिचड़ी क्यों न पकाई? कबूतरी क्यों न उड़ाई?
छड़ी न थी।'

खिचड़ी इसलिए नहीं पकाई कि खिचड़ी ओखली में डालकर छड़ी नहीं गई थी और कबूतरी इसलिए नहीं उड़ाई कि 'छड़ी' अर्थात् डंडी नहीं थी।

'अनार क्यों न चखा? वजीर क्यों न रखा?
दाना न था।'

'दाना' शब्द के दो अर्थ हैं, एक है बीज और दूसरा है बुद्धिमान। अनार में दाना, अर्थात् बीज नहीं था। इसलिए नहीं खाया और व्यक्ति बुद्धिमान नहीं था। इसलिए उसे वजीर के तौर पर नहीं रखा।

प्रश्न उठता है कि ये दोसुखाना है क्या? यह पहेली से मिलती-जुलती एक रचना है, जिसमें दो अलग-अलग पहेलियाँ दी होती हैं। लेकिन दोनों पहेलियों का उत्तर एक ही होता है। इसका सीधा सा अर्थ है कि उत्तर में जो शब्द आएगा, वह द्विअर्थी या अनेकार्थी ही होगा। इसमें एक चीज और है और वह यह कि लेखन के स्तर पर भी वह शब्द एक ही होगा, अर्थात् उसकी दो वर्तनियाँ नहीं हो सकतीं। वह श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द नहीं हो सकता।

लोकप्रिय कवि अमीर खुसरो हजरत निजामुद्दीन औलिया के परम शिष्य थे। हजरत निजामुद्दीन औलिया के निधन पर उन्हें गहरा सदमा पहुँचा और वे एकदम खामोश-से हो गए। तभी उनके मुँह से एक दोहे की ये दो पंक्तियाँ निकलीं :

'गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस,
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।।'

हजरत अमीर खुसरो देहलवी न केवल खड़ीबोली अथवा हिंदवी भाषा के पहले कवि थे, अपितु अरबी, फारसी व तुर्की भाषाओं के विद्वान भी थे, जिन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की। एक कवि व दार्शनिक के साथ-साथ वे एक संगीतकार भी थे। कहते हैं, उन्होंने न केवल तबले का आविष्कार किया, अपितु कई

वाद्ययंत्रों में सुधार भी किये। कव्वाली नामक विधा का प्रारंभ भी अमीर खुसरो की ही देन माना जाता है। अमीर खुसरो संभवत: पहले और अंतिम कवि हैं, जिन्होंने पहेलियाँ, दो सुखने, कह मुकरियाँ, बाबुल गीत आदि लोकप्रिय विधाओं में रचनाएँ कीं। अमीर खुसरो की कुछ प्रसिद्ध कह मुकरियाँ देखें:

'जब माँगू तब जल भरि लावे, मेरे मन की तपन बुझावे,
मन का भारी तन का छोटा, ए सखि साजन? ना सखि! लोटा!

वो आवै तो शादी होय, उस बिन दूजा और न कोय,
मीठे लागे वा के बोल, ए सखि साजन? ना सखि! ढोल!

लिपट-लिपट के वा के सोई, छाती से छाती लगा के रोई,
दाँत से दाँत बजा के ताड़ा, ए सखि साजन? ना सखि! जाड़ा!

नंगे पाँव फिरन नहीं देत, पाँव से मिट्टी लगन नहीं देत,
पाँव का चूमा लेत निपूता, ए सखि साजन? ना सखि! जूता!

बेर-बेर सोवतहिं जगावे, ना जागूँ तो काटे खावे,
व्याकुल हुई मैं हक्की-बक्की, ए सखि साजन? ना सखि! मक्खी!

आप हिले और मोहे हिलाए, वा का हिलना मोहे मन भाए,
हिल-हिल के वो हुआ निसंखा, ए सखि साजन? ना सखि! पंखा!'

अमीर खुसरो की फारसी गजलें बहुत ही प्रसिद्ध हैं। उन्होंने फारसी में ही नहीं, फारसी और लोकभाषा दोनों का मिश्रित प्रयोग करके भी खूबसूरत गजलें कही हैं। एक उदाहरण देखिए:

'जिहाले-मिस्कीं मकुन तगाफुल दुराये नैना बनाये बतियाँ,
कि ताबे-हिज्राँ नदारम ऐ जाँ न लेहू काहे लगाये छतियाँ।

शबाने-हिज्राँ दराज चूँ जुल्फ व रोजे-वस्लत चूँ उम्र कोताह,
सखी पिया को जो मैं न देखूँ, तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ।

यकायक अज दिल दो चश्मे-जादू बसद फरेबम बबुर्द तस्कीं,
किसे पड़ी है जो जा सुनावे पियारे पी को हमारी बतियाँ।

चूँ शम्अ सोजाँ चूँ जर्रा हैराँ, हमेशा गिरयाँ व इश्क आँ मेह,
न नींद नैना न अंग चैना, न आप आवे न भेजे पतियाँ।

बहक्के-रोजे-विसाले-दिलबर कि दाद मारा गरीब खुसरो,
सपेत मन के वराये राखूँ जो जान पाऊँ पिया की खतियाँ।'

बाद में अमीर खुसरो का देहांत होने पर हजरत निजामुद्दीन औलिया के प्रति उनकी बेपनाह मुहब्बत व अकीदत को देखते हुए उन्हें हजरत निजामुद्दीन औलिया के बगल में ही दफ्न कर दिया गया। हजरत निजामुद्दीन औलिया दरगाह क्षेत्र में अमीर खुसरो की कब्र के अतिरिक्त कई अन्य कब्रें भी हैं, जिनमें शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा बेगम, सम्राट मोहम्मद शाह, अकबर शाह द्वितीय के पुत्र मोहम्मद मिर्जा जहाँगीर तथा प्रसिद्ध मुस्लिम इतिहासकार जियाउद्दीन बर्नी व उर्दू के हर दिल अजीज शायर गालिब की कब्रें उल्लेखनीय हैं। यद्यपि गालिब ने अपनी एक गजल में कहा है:

'हुए हम जो मर के रुसवा हुए क्यों न गर्के-दरिया,
न कभी जनाजा उठता न कहीं मजार होता।'

लेकिन हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह और मुख्य सड़क के बीच दरगाह के रास्ते में ही चौंसठ खंभा के पास मिर्जा गालिब का एक कलात्मक मकबरा बना है, जो एक अहाते से घिरा है। सन् 1869 ई. में गालिब की वफात के बाद इस मकबरे का निर्माण किया गया, जिसमें सुंदर संगे-मर्मर का इस्तेमाल किया गया है। हैदराबाद के उस समय के मशहूर वास्तुकार नवाब जंगबहादुर ने गालिब के इस मकबरे का डिजाइन तैयार किया था और उस समय इस मकबरे की तामीर पर पंद्रह हजार रुपये का खर्च आया था। गालिब का ये छोटा सा खूबसूरत मकबरा चारदीवारी से घिरा है और आसपास के लोगों के अतिक्रमण के डर से प्राय: उस पर ताला लगा रहता है।

जब मैं वहाँ गया था तो मैंने पूछताछ की तो पता चला कि इस मकबरे की चाबी मकबरे के साथ ही सटे गालिब इंस्टिट्यूट में रहती है और वे ही इसकी देखभाल भी करते हैं तो मैं वहाँ गया और मजार दिखलाने की प्रार्थना की। वहाँ से एक सज्जन आए और उन्होंने मुझे न केवल अहाता खोलकर मजार दिखलायी, अपितु कई अहम जानकारियाँ भी दीं।

गालिब उर्दू के सबसे बड़े शायर हुए हैं। यद्यपि उनकी शायरी थोड़ी मुश्किल है, लेकिन उनकी शायरी को जाने-समझे बिना उर्दू शायरी को समग्रता से जानना संभव ही नहीं। गालिब के कुछ अत्यंत लोकप्रिय शेर और एक गजल देखें:

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आए थे लेकिन,
बड़े बेआबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले।

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले,
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन,
दिल के बहलाने को 'गालिब' ये ख्याल अच्छा है।

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना,
आदमी को भी मयस्सर नहीं इंसाँ होना।

इश्रते-कतरा है दरिया में फना हो जाना,
दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना।

उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पे रौनक,
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।

कर्ज की पीते थे मय लेकिन समझते थे कि हा,
रंग लाएगी हमारी फाकामस्ती एक दिन।

की मिरे कत्ल के बाद उसने जफा से तौबा,
हाय उस जूदपशेमाँ का पशेमाँ होना।

कोई मेरे दिल से पूछे, तेरे तीरे-नीमकश को,
ये खलिश कहाँ से होती जो जिगर के पार होता।

गमे-हस्ती का असद किससे है जुज मर्ग इलाज,
शम्अ हर रंग में जलती है सहर होने तक।

रगों में दौड़ने-फिरने के हम नहीं कायल,
जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है?

रंज का खूगर हुआ खूंसाँ तो मिट जाता है रंज,
मुश्किलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसाँ हो गईं गजल

दिल ही तो है न संगो-खिश्त दर्द से भर न आए क्यों,
रोएंगे हम हजार बार कोई हमें सताए क्यों।

देर नहीं, हरम नहीं, दर नहीं, आस्ताँ नहीं,
बैठे हैं रहगुजर पे हम गैर हमें उठाए क्यों।

कैदे-हयातो-बंदे-गम असल में दोनों एक हैं,
मौत से पहले आदमी गम से निजात पाए क्यों।

हाँ वो नहीं खुदापरस्त, जाओ वो बेवफा सही,
जिसको हो दीनोदिल अजीज उसकी गली में जाए क्यों।

गालिब-खस्ता के बगैर कौन-से काम बंद हैं,
रोइये जार-जार क्या, कीजिये हाय-हाय क्यों।

गालिब के मकबरे के अहाते में एक और कब्र है, जो उर्दू शायर सागर निजामी की वफात पर बीसवीं सदी के आखिर में तामीर की गई है। सागर निजामी का एक शेर मुलाहिजा फर्माएँ:

यूँ तो हम आगाह थे सय्याद की तद्वीर से,
हम असीरे-दामे-गुल अपनी खुदी से हो गए।

गालिब के मकबरे से महज कुछ सौ गज की दूरी पर ही स्थित है, हिंदी के लोकप्रिय कवि अब्दुर्रहीम खानखाना अर्थात् कविवर रहीम का मकबरा। निजामुद्दीन क्षेत्र में मुख्य सड़क यानी मथुरा मार्ग पर ही निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन की ओर हिंदी के इस लोकप्रिय कवि रहीम का मकबरा उचित रखरखाव व देखभाल के अभाव में बहुत बुरी हालत में पहुँच चुका है। ऐसी ही कई दुर्दशाग्रस्त और अनाम कब्रें दिल्ली के गली-कूचों में बिखरी पड़ी हैं। अब्दुर्रहीम खानखाना ने भक्ति, ज्ञान, नीति व लोक-व्यवहार आदि विषयों पर भरपूर दोहों की रचना की। उनके दोहों में जीवन की सच्ची अनुभूति मिलती है। अवधी और ब्रजभाषा दोनों पर रहीम पूर्ण अधिकार रखते हैं। उन्होंने दोनों ही भाषाओं में समानाधिकार के साथ काव्य रचना की है। रहीम के ऐसे ही कुछ दोहों का रसास्वादन कीजिए:

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।।

पावस देखि रहीम मन, कोयल साधे मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछत कौन।।

एक ही साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन सींचिए मूल को, फूलहीं फलहीं अघाय।।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

शायरों का जिक्र आया है तो याद आते हैं हाली। ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली मिर्जा गालिब के शिष्य भी थे। हाली न केवल उर्दू के ऊँचे दर्जे के शायर थे, बल्कि मिर्जा गालिब के बहुत बड़े चाहने वालों में से एक थे। हाली ने मिर्जा गालिब पर 'यादगारे-गालिब' नामक एक बहुत अच्छी किताब भी लिखी है, जो मिर्जा गालिब के जीवन का एक प्रामाणिक दस्तावेज माना जाता है। इन्हीं ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली की कब्र दिल्ली के एक नजदीकी कस्बे पानीपत में स्थित है। पानीपत में ही इब्राहीम लोदी की कब्र भी है, जिसे बाबर ने तामीर करवाया था।

दिल्ली की पहली महिला शासक होने का गौरव रजिया सुलतान को प्राप्त है। लेकिन उस दौर में एक महिला को शासक के रूप में स्वीकार करना कैसे गवारा होता? उनके खिलाफ अनेक षड्यंत्र रचे गये और अंततोगत्वा कैथल में उनकी हत्या कर दी गई। रजिया सुलतान की कब्र रानी साजी की दरगाह के रूप में तुर्कमान गेट के पास बुलबुली खाना की तंग गलियों में एक बंद कोने में स्थित है।

मौलाना आजाद स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री थे। वे न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थे, अपितु एक प्रखर पत्रकार, शिक्षाविद् और कुरान के भाष्यकार भी थे। विभिन्न विषयों पर अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की रचना करने वाले मौलाना आजाद की मजार दिल्ली की जामा मस्जिद के सामने स्थित है। जामा मस्जिद के सामने ही स्थित है सरमद नामक फारसी कवि और एक सूफी की मजार, जो तत्कालीन मुगल सम्राट औरंगजेब की धर्मांधता का शिकार हुआ था।

मिर्जा गालिब के समकालीन उर्दू शायर मोहम्मद इब्राहीम जौक न केवल उर्दू के अजीम शायर थे, अपितु आखिरी मुगल बहादुरशाह जफर के उस्ताद (काव्य गुरु) भी थे। नई दिल्ली के पहाड़गंज इलाके की एक गली में स्थित उनकी कब्र के बारे में दिल्ली वालों को भी कम पता है। कब्र का कुछ हिस्सा रिहायशी इलाके में आ गया तथा कुछ हिस्से पर एक सार्वजनिक शौचालय बना दिया गया। बाद में बात खुली तो उसके जीर्णोद्धार की बात भी हुई। अब पता नहीं किस हालत में है शाही उस्ताद जौक की कब्र। कभी जौक साहब ने फरमाया था:

आजकल गर्चे दकन में है बड़ी कद्रे-सुखन,
कौन जाए जौक पर दिल्ली की गलियाँ छोड़कर।

औरंगजेब के बाद अनेक बादशाह हुए, पर अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ही अधिक चर्चित हुए। बहादुरशाह जफर सन **1857** की क्रांति के नेता बने। लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें कैद करके रंगून भेज दिया। वहीं **7** नवंबर सन् **1862** ई. को एक कैदी की हालत में उनका इंतकाल हुआ और उन्हें वहीं दफ्ना दिया गया।

बहादुरशाह जफर उर्दू के शायर भी थे और एक संवेदनशील इंसान भी। लगता है उन्हें अपने मुस्तकबिल (भविष्य) का कुछ-कुछ अहसास हो गया था। तभी उन्होंने अपनी एक गजल में ये शेर कहा:

है कितना बदनसीब जफर दफ्न के लिए,
दो गज जमीं भी मिल न सकी कू-ए-यार में।

हिंदुस्तान के आखिरी मुगल बादशाह मोहम्मद सिराजुद्दीन अबूजफर बहादुरशाह जफर की रंगून स्थित ये कब्र आज बेहद खस्ता हालत में है। दिल्ली वालों को दिल्ली से बड़ा प्रेम रहा है। उर्दू शायरों को तो कुछ ज्यादा ही लगाव रहा है दिल्ली से। उर्दू शायर मीर तकी मीर दिल्ली के बारे में कहते हैं :

दिल्ली के न थे कूचे औराके-मुसव्वर थे,
जो शक्ल नजर आई तस्वीर नजर आई।

दिल्ली के बदलते हालात के कारण मीर तकी मीर को भी दिल्ली छोड़कर लखनऊ जाना पड़ा। उनकी वफात के बाद मीर तकी मीर को लखनऊ के मौजूदा गोलागंज के पास सुपुर्द- खाक किया गया था। लेकिन बाद में पास ही एक रेलवे स्टेशन के निर्माण के दौरान उनका मजार ही दब कर गुम हो गया। बाद में इसी लखनऊ सिटी स्टेशन के पास ही उनकी एक यादगार कब्र बना दी गई, जो आज बेहद दयनीय दशा में है। उनके बाद के सबसे मशहूर उर्दू शायर मिर्जा गालिब ने मीर की शायरी की तारीफ करते हुए कहा है:

मीर के शेर का अहवाल कहूँ क्या गालिब,
जिसका दीवान कम अज गुलशने-कश्मीर नहीं।

उर्दू शायर नासिर काजमी वैसे तो अंबाला में पैदा हुए थे। लेकिन तक्सीम के वक्त तर्के-वतन करके पाकिस्तान में जा बसे थे। यहाँ दिल्ली से मुत्अल्लिक उनके एक शेर का जिक्र करना मुनासिब ठहरता है:

गली-गली आबाद थी जिनसे कहाँ गए वो लोग,
दिल्ली अब के ऐसी उजड़ी घर-घर फैला सोग।

नासिर काजमी इन खूबसूरत लोगों के बिछुड़ने पर रंजो-गम का इजहार करते हुए कहते हैं:

जिंदगी जिनके तसव्वुर से जिला पाती थी,
हाय क्या लोग थे जो दामे-अजल में आए।

न हमारा जन्म अपने वश में है और न मृत्यु ही। फिर भी इन खंडहरों, वीरानों और खूबसूरत इमारातों-मकाबिरा को ध्यानपूर्वक देखते चलो, क्योंकि इन्हीं की दरारों और चमक-दमक में छुपा है समाज का सच्चा इतिहास और समाज के इतिहास में व्यक्ति का इतिहास।

- ए डी 106 सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034
मोबाइल नंबर: 9555622323
Email : srgupta54@yahoo.co.in

ईमानदारी

- श्री अशोक वाधवाणी -

बैंक के लेन-देन का समय समाप्त होने पर कैशियर आलोक हिसाब-किताब का मिलान करने लगे तो पूरे 38 हजार रुपए कम निकले। उनकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। पसीने से तर-बतर हो गये। दरअसल तीन दिन की छुट्टी के बाद आज बैंक खुला था। आज हाट का दिन होने के कारण भीड़ भी ज्यादा थी। ऊपर से बिजली गुल थी। इनवर्टर की खराबी के कारण रोशनी भी कम थी। हड़बड़ी में पहली बार ऐसी बड़ी भूल हो चुकी थी।

इतने में आत्माराम तेज कदमों से बैंक में घुसे। भुगतान काउंटर पर आकर रुके। आलोक से कहा, 'आपने गलती से मुझे 38 हजार रुपए ज्यादा दिये थे, जिसे लौटाने आया हूँ। आपने सौ रुपए के नोटों के बदले पाँच सौ के 95 नोट दिये थे। आलोक के मुरझाये मायूस चेहरे पर मुस्कुराहट दिखने लगी। उनकी जान में जान आई। उन्होंने हृदय की गहराइयों से आत्माराम का आभार माना। गदगद् होकर बैंक प्रबंधक, सारे कर्मचारियों को सच्चाई से अवगत करवाया। सभी इकट्ठे हुए। प्रबंधक ने आत्माराम से कहा, 'आपकी ईमानदारी पर आपका आदर, सत्कार करना चाहते हैं। फोटो के साथ स्थानीय समाचारपत्र में इसकी खबर छपवाना चाहते हैं।'

'आपकी अमानत लौटाकर मैंने कोई बड़ा काम नहीं किया है। एक नागरिक के नाते यह मेरा कर्तव्य था। अगर कुछ देना ही चाहते हैं तो रुपये लौटाने के लिए आने-जाने में जो आटो रिक्शा का किराया खर्च हुआ है, सिर्फ वही दे दें।' आत्माराम ने नम्रतापूर्वक जवाब दिया। उनकी साफगोई पर सभी बैंककर्मी मंत्रमुग्ध हुए। आलोक ने उन्हें किराया दिया। सभी बैंककर्मी आदरपूर्वक उन्हें दरवाजे तक छोड़ने आये।

- गांधी नगर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र
मोबाइल नंबर: 9421216288
ई-मेल: ashok.wadhwani57@gmail.com

हिंदी का वर्तमान स्वरूप: सकारात्मक व नकारात्मक पहलू

- श्री ओम प्रकाश अग्रवाल -

हम सभी जानते हैं कि भाषा किसी भी समाज और देश के लिए बहुत ही उपयोगी और आवश्यक होती है। भाषा के माध्यम से ही समाज में विचार-विनिमय, ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रचार-प्रसार और प्रयोग होता है। भले ही वह भाषा समाज द्वारा निर्धारित रूप में ही प्रयुक्त होती क्यों न हो, फिर भी वह विचारों, भावों और अभिलाषाओं की अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त साधन होती है। प्रत्येक अनुभव शब्दों पर ही आधारित होता है। इसे शब्दों में ही याद रखा जाता है और शब्दों में ही व्यक्त किया जाता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भाषा जीवन का ऐसा तत्त्व है, जिसका समाज में प्रयोग अनिवार्य है। देश और स्थान के अनुसार भाषाएँ अलग हो सकती हैं। लेकिन भाषा का कोई न कोई रूप प्रत्येक समाज में होता ही है। एक स्वस्थ और सामान्य शिशु, चाहे जिस समाज या देश में जन्म ले, उसके सामान्य रूप से चलने और दौड़ने के तरीके में कोई अंतर नहीं दिखाई देगा। लेकिन उसके आचार-व्यवहार में भाषा का अंतर अवश्य ही होगा। उसकी भाषा वही रहेगी, जो उसके समाज और देश में प्रचलित होगी। दैनिक जीवन में भाषा के व्यापक प्रयोग के वावजूद बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं, जो भाषा के बारे में, भाषा के स्वरूप में बारे में गहराई से विचार करते हैं। इसका मूल कारण इसका आसानी से उपलब्ध हो जाना माना जा सकता है। यदि हमें कोई नई भाषा सीखनी होती है तो बहुत प्रयास के साथ-साथ अनेक सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं। फिर भी प्राय: हम मूलभाषियों-सा उस भाषा को नहीं सीख पाते।

भारत एक विशाल देश है और यहाँ पर कई भाषाओं का प्रयोग होता है। केंद्र सरकार ही नहीं, बल्कि सभी राज्य सरकारों को अपनी-अपनी राजभाषाएँ निर्धारित करने का प्रावधान 'भारत के संविधान के अध्याय-2, अनुच्छेद **345** - राज्य की राजभाषा या राजभाषाएँ' में किया गया है। इसी क्रम में हिंदी को केंद्र सरकार की राजभाषा का स्थान तो मिला ही है। कुछ राज्य भी हिंदी को अपनी राजभाषा घोषित किये हुए हैं। एक राज्य तो संस्कृत को भी अपनी राजभाषा का स्थान प्रदान किया हुआ है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश ने तीन (हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी) तो दिल्ली राज्य ने चार (हिंदी, उर्दू, पंजावी, अंग्रेजी) राजभाषाएँ घोषित कर रखी हैं। हिंदी भाषा न केवल भारत के वहुत वड़े भूभाग में वोली और समझी जाती है, बल्कि बहुत बड़े क्षेत्र में इसका व्यवहार राजभाषा के रूप में भी हो रहा है।

हिंदी भाषा कहते ही उत्तर भारत के अधिकांश भाग में प्रचलित भाषा की तरफ ध्यान जाता है। इस भाषा के इतिहास को देखा जाए तो कभी यह भाषा दिल्ली के सुल्तानों अथवा मुगल बादशाहों के काल में दिल्ली के निकटवर्ती प्रदेशों की बोली थी। खास बात यह थी कि बोलचाल में इसी भाषा का प्रयोग होता था। लेकिन उस काल के साहित्य में, शासन के कार्यों में फारसी और धामिक-चर्चाओं में अरवी का प्रयोग होता था। जवान-ए-हिंदी को उस समय उच्च काव्य चर्चा के लिए न तो सुल्तान और न ही मुगल उपयुक्त समझते थे, और न ही हिंदी प्रदेश की साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले भारतीय ही। 'हिंदी अथवा हिंदवी भाषा का साहित्य तथा राजकाज में हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रथम प्रयोग दक्षिण भारत के गोलकोंडा तथा बीजापुर के तत्कालीन शासकों ने किया' (हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास, द्वितीय भाग, नागरी प्रचारिणी सभा)।

दक्षिण भारत में दक्खिनी हिंदी में नाम से राजभाषा और साहित्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के बाद सूफी कवि वली ने दिल्ली के मुशायरों में जब अपनी काव्य रचनाएँ सुनाई तो दिल्ली के आसपास के कवियों ने भी इस भाषा का प्रयोग अपनी कविताओं में करना शुरू कर दिया। आगे चलकर इसी हिंदी ने साहित्य में फारसी का स्थान ले लिया। लेकिन जनभाषा होने के कारण इसमें अरवी-फारसी के शब्द उसी तरह से प्रचलित थे, जैसे आज की जनभाषा में अंग्रेजी के शब्द प्रचलित हैं और कतिपय अपरिहार्य कारणों से लगातार जुड़ रहे हैं।

यदि इतिहास में न जाकर भारत की स्वतंत्रता के बाद से ही देखा जाए तो हिंदी की शब्दावली में ही नहीं, अपितु हिंदी लिखने के लिए प्रयुक्त होने वाली देवनागरी लिपि में भी काफी परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों से हिंदी भाषा समृद्ध व सशक्त हुई है, क्योंकि परिवर्तन विकास के प्रमुख अंश होते हैं।

लिपि का परिवर्धन

सबसे पहले हम लिपि में हुए विकास को देखते हैं। देवनागरी लिपि में 'ड़' और 'ढ़' इन दो वर्णों का आगम बांग्ला के अनुसरण में हुआ, और इनका उच्चारण भी 'ड' और 'ढ' से भिन्न है, और ये 'ड' और 'ढ' के ही बदले हुए रूप हैं। हिंदी के 'ड़' और 'ढ़' वर्णों का प्रयोग संस्कृत में नहीं होता। इसी प्रकार अरवी-फारसी की ध्वनियों को लेखन में प्रकट करने के लिए क़, ख़, ग़, ज़, फ़ वर्णों को लिया गया है। इसी प्रकार न, ॲ, अं, आं, औ, अ, आ, ॸ, ज, य, ग, ज वर्णों को शामिल किया गया, ताकि देवनागरी में लिखी जाने वाली अन्य भाषाओं (नेपाली,

मराठी, कोंकणी, मागधी, आदि) के शब्दों और जो भाषाएँ देवनागरी में नहीं लिखी जातीं, उनके शब्दों का लिप्यंतरण सही रूप में हो सके।

शब्द संपदा का परिवर्धन

जैसाकि संसार की सभी भाषाओं में होता है, ऐसे ही हिंदी भाषा में भी सदियों से शब्दों का आगमन होता रहा है। अंग्रेजी में भी खूब होता है और जिस भाषा में अन्य भाषाओं के समसामयिक शब्दों को ग्रहण करने की क्षमता नहीं होती, वे भाषाएँ मृतप्राय सी हो सकती हैं। हिंदी में बहुत पहले से अनेक विदेशी शब्दों का प्रयोग हो रहा है। इनमें से कुछ तो अब विदेशी लगते ही नहीं हैं। हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को अपनाने की शक्ति है। उदाहरण के लिए आचार, बाल्टी, संतरा, तौलिया, तंबाकू आदि शब्द पुर्तगाली से; कैंची, चम्मच, बारूद, दूकान, बादाम शब्द तुर्की से; एटलस, अकादमी, टेलिफोन आदि यूनानी से; अदालत, तारीख, इलाज, कानून आदि अरबी से; तो चाय और लीची चीनी भाषा से आए हुए हैं।

जिस प्रकार इतिहास और संस्कृति में होने वाले कुछ परिवर्तन इतने सूक्ष्म होते हैं कि शीघ्र पकड़ में नहीं आते हैं, बहुत कुछ ऐसी ही स्थिति भाषा में होने वाले परिवर्तनों की भी होती है। समाज में होने वाले हानि-लाभ, सह-संबंध सभी मिलकर उस समाज में प्रयुक्त भाषा को भी गहराई से प्रभावित करते हैं। तकनीक यदि विदेश से आएगी तो वह अपने साथ विदेशी शब्द भी लाएगी। साइकिल को ही लीजिए, सौ साल से भी अधिक समय से यह देश में चल रही है। पर घंटी, गद्दी, पहिया के अलावा इसके सभी पुर्जे अभी भी अंग्रेजी के ही हैं। हाँ इतना जरूर हुआ है कि लोगों ने अपनी सुविधा के अनुसार इन शब्दों को तोड़-मरोड़ लिया है। यही हाल कृषि में काम आने वाले यंत्रों का हुआ है - ट्रैक्टर के साथ उसके सभी पुर्जे पूरे भारत में बिखरे पड़े हैं।

हिंदी भाषा में शब्दों, वाक्य रचना, विराम चिह्नों के जो आगमन हुए और भाषा के लेखन, वाचन के स्तर पर जो परिवर्तन हुए हैं, वे समाज के अनुसार ही हुए हैं। हाँ इतना अवश्य है कि अपनी भाषा में हम जिन शब्दों का आसानी से प्रयोग कर सकते हैं, उन्हें इस आधार पर नहीं नकार दिया जाना चाहिए कि यह शब्द तो बहुत कठिन है, किसे समझ में आएगा। शब्द यदि विदेशी हुआ तो वह भी तो उन लोगों के लिए कठिन ही होगा, जो उस शब्द को नहीं जानते। एक उदाहरण काफी होगा, aviation+electronics को मिलाकर बना शब्द avionics चाहे अंग्रेजी में लिखा हो या हिंदी में समझ में नहीं ही आएगा - शब्दकोश तो देखना ही पड़ेगा।

वर्तमान हिंदी का स्वरूप

समाज में भाषा का प्रयोग कई स्तरों पर होता है - सरकारी कामकाज में, समाचारों में, साहित्य में, अध्ययन में, साधारण कामकाज में, बाजार में। इन सभी के लिए प्रयुक्त होने वाली हिंदी का वर्तमान स्वरूप भी विविधता और गतिशीलता लिए हुए है। अब यह केवल साहित्य या औपचारिक भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विभिन्न बोलियों, अन्य भारतीय भाषाओं और आधुनिक तकनीक की शब्दावली भी शामिल हो गई है। हिंदी का प्रयोग अब केवल किताबों और पत्रिकाओं तक ही नहीं रह गया है, बल्कि सोशल मीडिया, इंटरनेट पर भी इसका व्यापक प्रयोग हो रहा है।

व्यवसाय में आते हैं तो व्यवसाय की प्रकृति के अनुसार भाषा के प्रयोग होते हैं, यथा सब्जी मंडी की भाषा अलग होगी, तो सर्राफा बाजार की अलग होगी। बैंकों में अलग ही प्रकार की शब्दावली का प्रयोग देखने को मिलेगा तो अदालतों में भाषा का एक अलग ही रूप देखने को मिलेगा। भले ही हिंदी का प्रयोग हो रहा हो या किसी अन्य भाषा का। बहुत अच्छी अंग्रेजी सीखा हुआ स्नातक भी न्यायालयों में प्रयुक्त अंग्रेजी को समझने में कठिनाई का अनुभव करेगा। यही बात हिंदी के लिए भी सत्य है। कार्यक्षेत्र के अनुसार ही हिंदी शब्द भी अपरिचित हो सकते हैं, और यह तो सामान्य सा नियम है कि जो अपरिचित होता है, वह कठिन भी होता है।

इस परिवर्तन के सकारात्मक पक्ष इस प्रकार से हो सकते हैं। नए शब्दों के प्रयोग से कोई भी भाषा समृद्ध होती है। नए वर्णों के आगमन से कंप्यूटर पर ही कार्य करने में सहजता नहीं हुई, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को हिंदी में लिख पाना संभव हो गया है। इससे हिंदी भाषी भी नए शब्दों से परिचित होते हैं और भाषाई सौहार्द्र बढ़ता है।

नकारात्मक पक्ष

वर्तमान में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हिंदी में कुछ ज्यादा ही हो रहा है। इससे हिंदी का शुद्ध रूप बिगड़ रहा है। बोलचाल में भी बड़े ही अजीब प्रयोग सुनने में आते हैं, जैसे - 'यह सबसे वेस्ट है। ले जाइए।' 'मैं मेरे घर जा रहा हूँ।' जबकि सही वाक्य 'मैं अपने घर जा रहा हूँ' है। ऐसा तब होता है जब भाषा की विशेषताओं से परिचित नहीं होते और वाक्य का सीधा अनुवाद कर देते हैं।

उदाहरण के तौर पर इस प्रकार के अनेक वाक्य मिल जायेंगे। स्थान की कमी के कारण सभी का उल्लेख संभव नहीं है। पर यदि आप थोड़ा सा प्रयास करेंगे तो भाषा की कमियाँ आपके ध्यान में आने लगेंगी।

निष्कर्ष

इस समय हिंदी का जो रूप है, वह विविधता लिए हुए है। यह तो स्पष्ट ही है कि कोई भी भाषा पूर्णतया निरापद नहीं है। कुछ न कुछ अशुद्धि और अपूर्णता सभी जगह विद्यमान है। जहाँ तक सरलता की बात है तो इस समय अंग्रेजी बोलने वाले देशों में भी आसान अंग्रेजी लिखने के प्रयास किये जा रहे हैं। उन देशों में भी प्रत्येक कार्यक्षेत्र की भाषा वहाँ के निवासियों को भी समझ में नहीं आती है। यह स्थिति किसी भी भाषा के साथ हो सकती है। लेकिन आज प्रौद्योगिकी इस स्तर पर पहुँच चुकी है कि किसी भी शब्द या वाक्य का अर्थ समझने के लिए मोबाइल पर शब्दकोश मौजूद हैं। एक वह युग भी था, जब छात्र-छात्राओं के पास पॉकेट शब्दकोश होना गर्व की बात मानी जाती थी। इसमें हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं के शब्दकोश शामिल थे। आज वह सारी सुविधा अधिकांश लोगों के हाथ में मौजूद है।

यह भी उल्लेखनीय है कि कार्यक्षेत्र के अनुसार भाषा बदलती रहती है। सभी जगह एक समान भाषा हो भी नहीं सकती है। बाजार में अलग शब्द होंगे तो बैंकों में या सरकारी कार्यालयों में। न्यायालयों में अलग ही प्रकार के शब्द मिलेंगे जिन्हें हम पारिभाषिक शब्द कहते हैं। वहाँ सामान्य शब्दों के साथ भी एक विशिष्टता जुड़ी होती है। उस विशिष्टता के कारण ही वह शब्द परिचित होते हुए भी अपरिचित लग सकता है, पर थोड़ा सा प्रयास तो करना ही होता है। भाषा को, शब्दों को समझने के लिए यह प्रयास जरूरी भी है। कुल मिलाकर आज हिंदी का जो स्वरूप है, सहज और सरल है। परिवर्तनों को स्वीकार करते हुए अपना विकास करने में यह भाषा सक्षम है।

- डी-221, महेश मार्ग, मालवीय नगर
ज्ञान विहार स्कूल के पास, डब्ल्यू टी पी के पीछे
जयपुर-302017
मोबाइल नंबर: 9314425866,
7014127648

रॉंग नंबर

- श्री राजेश पाठक -

सुमित पटना से गिरिडीह जा रहा था। स्टेशन पर वर्षो बाद कॉलेज के सहपाठी रमन से उसकी भेंट हो गई। इस तरह अकस्मात भेंट होने से दोनों के मन के भीतर कॉलेज के दिनों की पुरानी सुखदाई स्मृतियाँ हिचकोले मारने लगीं। वे एक-दूसरे से हाथ मिला ही रहे थे कि उन्हें उनकी ट्रेन आने का अनाउंसमेंट सुनाई दिया। एक-दूसरे से पूछताछ के क्रम में पता चला कि वे दोनों एक ही ट्रेन से सफर करने वाले थे।

रमन ने कहा - 'चलो अब ट्रेन में जगह लेकर घंटों बात करेंगे। पुरानी खट्टी-मिट्ठी स्मृतियों को ताजा करेंगे।' सुमित ने भी 'हाँ' में अपना सिर हिलाया। उसने सोचा भी कि आज का दिन कितना खुशनुमा है कि पुराने दोस्त से भेंट भी हो गई। नई -पुरानी बातें भी होंगी और सफर भी आसानी से कट जाएगा। सुमित का सफर चार घंटे का था, जबकि रमन का सफर दो घंटे का था। ट्रेन आई। दोनों दोस्त ट्रेन के डब्बे में सवार हो गए। जगह भी साथ-साथ बना ली। थोड़ी देर बाद जब सुमित ने देखा कि रमन अपनी नजरें अपने मोबाइल से नहीं हटा पा रहा था तो उसने ही रमन से बातचीत शुरू करने के लिहाज से पूछ बैठा - 'अच्छा तो रमन बताओ कि तुम्हारे कितने बच्चे हैं और सब क्या कर रहे हैं?'

रमन - 'थोड़ी देर रुको, एक मैसेज आया है, उसे पढ़कर जवाब दे लेने दो, फिर बताता हूँ।'

सुमित रमन के चेहरे को देखता रहा। वह (रमन) कभी मंद-मंद मुस्कुराता तो कभी हँस भी देता, कुछ मैसेज टाइप भी करता रहता। कहीं से कोई कॉल भी आता तो हँस-हँसकर जवाब भी देते रहता। इस तरह करते-करते दो घंटे का समय बीत गया। इस दरम्यान रमन की सुमित से कोई बात नहीं हुई। देखते-देखते रमन के गंतव्य वाला स्टेशन भी आ चुका था। रमन वहाँ उतरने के लिए उठ खड़ा हुआ और सुमित से कहा - 'सॉरी यार! तुमसे बात नहीं हो सकी। ऐसा करो कि तुम अपना मोबाइल नंबर जल्दी से दे दो, ढेर सारी बातें करनी हैं तुमसे। मैं घर पहुँचते ही तुमसे बात करूँगा।'

सुमित ने रमन को रॉंग नंबर दे दिया।

- द्वारा जिला सांख्यिकी कार्यालय
गिरिडीह
झारखंड-814133
मोबाइल नंबर: 9113150917

तेजी से बदलता हिंदी का स्वरूप

- श्री नरेंद्र नाथ चट्टान -

भाषा का महत्त्व

लगभग 2300 वर्ष पूर्व यूनान के दार्शनिक अरस्तू ने कहा था कि 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेले अपना जीवन-यापन नहीं कर सकता। उसे एक समाज की आवश्यकता अवश्य होती है, जिसके माध्यम से वह अपनी समस्त आवश्यकताओं की संतुष्टि कर पाता है। अपनी समस्त आवश्यकताओं को बताने के लिए उसे स्वयं को अभिव्यक्त करना पड़ता है।' प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य स्वयं को हाव-भाव से व्यक्त करता रहा। फिर शनैः शनैः उसने पत्तों एवं चट्टानों पर आकृतियाँ बनाना प्रारंभ किया। इस तरह हजारों वर्षो की सतत् प्रक्रिया से विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न काल-खण्डों में विभिन्न भाषाओं की उत्पत्ति हुई, जो मनुष्य की अभिव्यक्ति का माध्यम बनीं। भाषा अपने मनोभावों, उद्गारों, संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। भाषा के बिना हम कुछ भी अभिव्यक्त नहीं कर सकते, ना ही किसी से वार्तालाप कर सकते। भाषा के बिना हम गूँगे के समान हैं।

हिंदी भाषा का विकास

हिंदी भारतीय संघ की राजभाषा होने के साथ ही हमारे देश के ग्यारह राज्यों एवं तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी को एक विशेष स्थान प्राप्त है। वर्तमान में हमारे देश के अधिकांश सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों के काम-काज की भाषा हिंदी ही है।

भाषा के दो रूप होते हैं - एक मौखिक और दूसरा लिखित। मौखिक भाषा (जिसे बोली भी कहा जाता है) शिक्षित-अशिक्षित सभी लोगों की भाषा होती है और वह गतिशील तथा परिवर्तनशील होती है। लिखित भाषा केवल शिक्षित वर्ग की भाषा होती है, जो विकसित होते-होते प्रौढ़ होकर स्थायी रूप प्राप्त कर लेती है और यही मानव की भाषा कहलाती है और शिक्षा एवं साहित्य का माध्यम होती है। हमारे देश के मूर्धन्य साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अभिव्यक्त किया है कि

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।'

हमारी उन्नति का मूलाधार हमारी अपनी भाषा (मातृभाषा) ही है। अपनी भाषा की उन्नति बिना हमारी उन्नति असंभव है। हमारी अपनी भाषा के ज्ञान बिना हमारी पीड़ा का निवारण संभव नहीं है।

हमारी भारतीय संपर्क भाषा हिंदी ने जहाँ वैदिक संस्कृत से निरंतर यात्रा करते हुए आधुनिक हिंदी का स्वरूप ग्रहण किया है, वह एक सामाजिक क्रिया का आधार है। हर समाज अपने सामाजिक विकास के साथ-साथ भाषा का विकास भी करता है। समाज में होने वाले परिवर्तन की ही भाँति उसकी अपनी भाषा में भी कभी स्थिरता नहीं रहती। इसलिये निरंतर परिवर्तन के प्रवाह पर चलकर हिंदी अपने अनेक रूपों के साथ वर्तमान में समाज के सम्मुख उपस्थित है। वर्तमान में हिंदी की प्रयोजनीयता के आधार पर उसके निम्नांकित विभिन्न स्वरूप विद्यमान हैं - साहित्यिक हिंदी, कार्यालयीन हिंदी, व्यावसायिक हिंदी, विधिपरक हिंदी, वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी एवं सामाजिक हिंदी इत्यादि।

जहाँ साहित्यिक हिंदी, हिंदी के कवियों, साहित्यकारों के द्वारा साहित्य सृजन में प्रयुक्त होती है, वहीं कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग हमारे देश के शासकीय, अर्द्ध शासकीय, निगम, मंडल कार्यालयों में किया जाता है। जहाँ हमें शासकीय एवं अर्द्ध शासकीय पत्र लेखन, दैनंदिनी लेखन, जानकारियाँ तैयार करने, सूचना पत्र देने, समीक्षा बैठक की रपट तैयार करने आदि में कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग किया जाता है। व्यावसायिक हिंदी का प्रयोग व्यापारी वर्गो के द्वारा अपने व्यापार के संचालन के लिये किया जाता है। विधिपरक हिंदी का ज्यादातर प्रयोग माननीय न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं एवं तत्संबंधी कार्य करने वाले कारकुनों के साथ-साथ माननीय श्रम, औद्योगिक, न्यायाधिकरणों, जिला एवं सत्र न्यायालयों, उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायालय में किया जाता है।

दुःखद स्थिति यह है कि हमारे देश के माननीय उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायालय में आज भी अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है। कई माननीय न्यायालयों में सुनवाइयाँ तो हिंदी भाषा में होती हैं। किंतु निर्णय अंग्रेजी भाषा में दिये जाते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी का प्रयोग वैज्ञानिकों एवं अभियंताओं के द्वारा किया जाता है। वैसे तो ज्यादातर वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों का प्रयोग अंग्रेजी भाषा में किया जाता है। किंतु अब तो हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली भी उपलब्ध हो चुकी है और हिंदी भाषा में इसका प्रयोग प्रचलन में आ चुका है। आजकल तकनीकी शिक्षा भी हिंदी भाषा में दी जाने लगी है। सामाजिक हिंदी का प्रयोग समाज के मध्य किया जाता है। कई समाज अपनी सामाजिक भाषा-बोलियों का भी प्रयोग करती हैं।

हमारा देश विविधताओं में एकता का देश है। हमारे देश में लगभग 453 भाषाएँ बोली जाती हैं। साथ ही लगभग 19500

बोलियाँ मातृभाषा के रूप में बोली जाती हैं। परंतु देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही है। हिंदी हमारे घर, परिवार, समाज एवं देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।

समूचे विश्व में लगभग **175** से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। आज ज्ञानविज्ञान की पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध होने लगी हैं। आज सामाजिक माध्यमों, संचार माध्यमों एवं इंटरनेट में हिंदी का निरंतर प्रयोग बढ़ता जा रहा है। हिंदी का शब्द भंडार विशाल और व्याकरण समृद्ध है। देश के अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों में शैक्षणिक कार्यों के साथ ही शोध कार्यों में भी हिंदी को प्राथमिकता दी जा रही है। देश एवं प्रदेश प्रशासनिक सेवाओं में भाग लेने वाले अभ्यर्थियों द्वारा हिंदी भाषा एवं विषय को चयन में प्राथमिकता दी जाने लगी है। देश की असैनिक सेवाओं में हिंदी माध्यम और हिंदी विषय से चयनित होने वाले अभ्यर्थियों की संख्या भी लगातार बढ़ती रही है।

बहुत से साहित्यकार, हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में कालजयी कृतियों का सृजन कर न केवल देश अपितु विदेश में भी हिंदी को पहुँचा रहे हैं। मंचीय कवि भी अपनी काव्य रचनाओं को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। हिंदी की सरलता, सुगमता एवं मधुरता के कारण लोगों में इसके प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। देश में लोगों के मध्य संवाद का सबसे उपयुक्त माध्यम हिंदी ही है। वास्तव में हिंदी देश में संपर्क भाषा की भूमिका निभाने लगी है। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं के कारण पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने कहा था कि 'हिंदी अनुवाद की नहीं, बल्कि संवाद की भाषा है।'

4 अक्टूबर **1977** का दिन भारत एवं हिंदी के लिए गौरवशाली इतिहास बना, जब पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए हिंदी में ऐतिहासिक भाषण दिया था और विश्व के नेताओं ने उसका आत्मीय स्वागत किया था। अनेक राजनेताओं, शिक्षाविदों एवं अन्य हिंदी प्रेमियों के सत्प्रयास से अब संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी हिंदी की गूँज सुनाई देने लगी है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार हिंदी विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। हिंदी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। हिंदी भले ही संवैधानिक रूप से देश की राजभाषा घोषित है। परंतु बोलचाल, वार्तालाप एवं अनेकानेक क्षेत्रों में यह राष्ट्रभाषा के सर्वाधिक गौरवशाली पद पर आसीन है। सरकार राजभाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। ऐसा विश्वास है कि शीघ्र ही मातृभाषा-राजभाषा हिंदी राष्ट्रभाषा के प्रतिष्ठित पद पर विराजमान होगी।

भाषा के सकारात्मक पहलू

यदि हमारी सोच सकारात्मक हो तो हमारे दृष्टिकोण में भी सकारात्मक बदलाव आता है। हमारे जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। यदि हम एक परिष्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं तो हमारी मन:स्थिति भी परिष्कृत होती है। हम परोपकार एवं विश्व कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होते हैं। जैसा कि हमारी सांस्कृतिक भावना - 'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो। प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो', के द्वारा उद्घोषित करती है।

भाषा में सकारात्मकता का प्रश्न हमारे आचार-विचार और व्यवहार से जुड़ा होता है, जो मूलत: किसी को भी अपनी मातृभाषा में दिखाई देता है। यदि कोई बात हमें अपनी मातृभाषा में समझाई जाती है तो हम बहुत ही अच्छे ढंग से समझ और सीख जाते हैं। मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर माना गया है कि बच्चों का आशातीत मानसिक विकास, सूझबूझ और समझ की क्षमता अपनी मातृभाषा में ही ज्यादा विकसित हो सकती है। जब हम अपने लोगों में मातृभाषा के शब्दों का उपयोग करते हैं, तब उन पर उसका सीधा प्रभाव पड़ता है, जबकि अन्य भाषा के उपयोग में उस तरह के भाव नहीं पैदा होते। भाषा की सकारात्मकता स्थिर संबंधों एवं परस्पर विकास की प्रतिबद्धता का समर्थन करती है। भाषा के द्वारा हमारे विचार प्रभावित होते हैं और हमारे विचार हमारी भावनाओं को प्रभावित करते हैं, जिससे समग्र कल्याण व लाभ का भाव उत्पन्न होता है।

दुनिया के अन्य देशों में भी हिंदी को लेकर रुझान बढ़ा है। भारत में किसी भी बहुराष्ट्रीय कंपनी अथवा भारत से व्यापारिक संबंध वाले देशों के लिए अपने उत्पादों को आम आदमी तक पहुँचाने हेतु हिंदी का सहारा लेना नितांत आवश्यक है। इस वजह से भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायता मिल रही है। विश्व के लगभग **150** से अधिक देशों में लगभग दो करोड़ से ज्यादा भारतीय निवास करते हैं। अधिकांश प्रवासी भारतीय आर्थिक रूप से समृद्ध हैं और अपनी भाषा एवं संस्कृति के साथ मजबूती से जुड़े हुए हैं।

पूरी दुनिया में अब हिंदी साहित्य प्रचुर लिखा व पढ़ा जाने लगा है। विश्व के लगभग **100** से अधिक देशों में हिंदी साहित्य लिखा व पढ़ा जा रहा है। सूचना तकनीक के विकास के कारण एक देश के लेखन को दूसरे देशों के पाठक आसानी से पढ़ पा रहे हैं। हिंदी का जितना प्रचार-प्रसार तकनीकी विकास के कारण हुआ है, उतना किसी अन्य प्रयास से नहीं हुआ है। सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणिक, कला-साहित्यिक एवं नैतिक मूल्यों के पुनर्जीवन की जीवंतता एवं स्वर्णिम भविष्य की कल्पना को साकार करने हेतु हिंदी के संवर्धन एवं संरक्षण के प्रति जागृत होना नितांत आवश्यक है।

भाषा का नकारात्मक पहलू

यदि हमारी सोच, विचार एवं भाषा नकारात्मक हो तो इससे भी हमारे दृष्टिकोण में भी नकारात्मकता आती है। यदि अपशब्दों, दूषित विचारों का प्रयोग करते हैं तो हमारे भाव दूषित होते हैं तो हमारी मन:स्थिति खराब होती है। जीवन में नकारात्मक ऊर्जा का संचार होने लगता है। अच्छा सोचने-समझने की हमारी क्षमता नष्ट होने लगती है।

अंग्रेजी, हिंदी के मार्ग में दुर्गम-दुर्लघ्य पर्वत की भाँति खड़ी है। क्योंकि अंग्रेजी में वैश्विक स्तर पर नौकरियाँ एवं तकनीकी साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। यूरोप एवं अमेरिका में तकनीकविदों, वैज्ञानिकों एवं अन्य पेशेवर लोगों के लिए आकर्षक नौकरियाँ अंग्रेजी एवं उनके तकनीकी ज्ञान के कारण ही मिल रही हैं, जो हिंदी में संभव नहीं है। रोजी-रोटी की भाषा होने के कारण ही अंग्रेजी बेगानी होकर भी अपनी है और हिंदी अपनी होकर भी बेगानी। अंग्रेज अपने शासन काल में इसका इतना प्रचार-प्रसार नहीं कर पाये, जितना अब स्वतंत्र भारत के लोग स्वेच्छा से कर रहे हैं।

इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि अंग्रेजों के जाने के बाद भी अंग्रेजी से हमारा क्या नाता है? अंग्रेजी बोलते समय हमारा मस्तक ऊँचा क्यों होता है। सीना क्यों चौड़ा होता है और चेहरे पर चमक क्यों आ जाती है? नगर-नगर, गाँव-गाँव, गली-गली में कान्वेंट स्कूल क्यों फैल रहे हैं? केंद्रीय विद्यालयों एवं उच्चशिक्षा में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी क्यों है? एक अरब से ऊपर की आबादी में कितने शिक्षार्थी इससे लाभान्वित होते हैं? क्या कभी हमने इन बातों पर गंभीरता से सोचा है? हमारे कितने जनप्रतिनिधि, कितने प्रशासकीय अधिकारी, कितने शिक्षाविद, कितने अध्यापक, कितने विचारक, कितने पत्रकार इन प्रश्नों पर विचार करते हैं? अंग्रेजी हमारे शासकों, नेताओं और नौकरशाहों की भाषा बन गई है। उनके छल-कपट और दुराव-छिपाव की भाषा है। यदि शासकों और शासितों की भाषा एक हो जाएगी तथा सत्तासीन लोग आम आदमी की भाषा बोलने लगेंगे तो उनकी और जनता के बीच की दूरी मिट न जाएगी? कानून का काम जनभाषा में होगा तो अंग्रेजी-दाँ वकीलों की रोजी-रोटी छिन न जाएगी? एक अरब चालीस करोड़ की जनता पर आँख बंद करके अंग्रेजी थोपी जा रही है। यहाँ हर एक नागरिक को ठहर कर सोचना चाहिए।

- टी.एच.-11, अपर वैनगंगा कॉलोनी
शास्त्री वार्ड
जिला-सिवनी (मध्य प्रदेश)
मोबाइल नंबर: **9406752797**
ईमेल: narendrachattan@gmail.com

पढ़ी-लिखी

- सुश्री रेणु गुप्ता -

'अरी कमली, ये तू क्या ले जा रही है इस थैली में?' मैंने अपनी गृह-सहायिका को अपनी आड़ में एक थैली छुपाती सी हुई दरवाजे से बाहर ले जाते हुए देख कर पूछा।

मेरे इस सवाल पर कमली तनिक ठिठकते हुए बोली, 'कुछ नहीं आंटी जी, कुछ नहीं।' मन में आशंका हुई। घर की कोई कीमती चीज तो नहीं ले जा रही। उसके चेहरे के हावभाव और बॉडी लैंगुएज से मेरी आशंका गहरा गई और मैं झट से उठ कर उसके पास गई और उसके हाथ से थैली लेकर उसमें झाँका।

थैली में दोपहर में खाये आमों की गुठलियाँ थीं। मैं जैसे आसमान से गिरी। 'अरी, तू इन चूसी हुई गुठलियों का क्या करेगी।' 'बीवी जी, वो मैं... वो मैं... ।' 'अरे बता न क्या करेगी इन गुठलियों का?' 'आंटी जी, मेरे घर के रास्ते में सड़क के दोनों किनारों पर पेड़-पौधे हैं ना, मैं इन्हें वहाँ डाल देती हूँ। बरसात में ये गुठलियाँ जड़ पकड़ लेंगी और पौधे उग आयेंगे। आंटी जी, उस दिन कोई कह रहा था, धरती पर हरियाली की कमी की वजह से ही आजकल इतनी गर्मी पड़ने लगी है। सो आज कल मैं सब घरों से आम की गुठलियाँ जमा कर लेती हूँ और खाली जमीन में डाल देती हूँ। बहुत दिनों पहले वह सामने वाली आंटी के यहाँ इमली की रसम बनी थी। उनके यहाँ से इमली के सारे बीज लेकर मैंने खाली जगह में डाल दिये थे। पता है आंटी जी, वहाँ सारे बीजों के पौधे उग आये हैं।'

अन्तर्मन में यक्ष प्रश्न उठ खड़ा हुआ, 'कमली जैसी जागरूकता हम पढ़े-लिखे होने का दंभ भरने वालों में क्यूँ नहीं?'

- जी-2, प्लॉट नंबर-61
रघु विहार, महारानी फार्म
दुर्गापुरा, जयपुर-302018
मोबाइल नंबर: 9024579762

डिजिटल मीडिया में भूमंडलीकृत हिंदी का विस्तारित स्वरूप

- श्री प्रवीण कुमार सहगल -

प्रगतिशीलता मनुष्य की आदिम प्रवृत्ति है, जो समय और परिस्थिति के अनुसार लगातार बदलती रही है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यह परिवर्तन बहुत बड़े रूप में देखा जा सकता है, जहाँ से भूमंडलीकरण का प्रभाव और ग्लोबल गाँवों की रूपरेखा की शुरुआत होती है। वास्तव में इस गाँव की सवारी धड़धड़ाती हुई भूमंडलीकृत ट्रेन से की जा रही है, जो प्रत्येक जगह अपनी छाप छोड़ती जा रही है। यह छाप इतनी गहरी है कि प्रत्येक गाँव की रूपरेखा ही बदल गयी है। इस ट्रेन के प्रत्येक कोच का स्तर एक दूसरे से जुड़ाव रखने के बावजूद स्वतंत्र है। वैश्वीकरण का जुड़ाव बाजारवाद से है, जहाँ हर व्यक्ति एक उपभोक्ता है और अपनी क्षमता तथा सुविधानुसार कोच में अपनी जगह बना रहा है।

वर्तमान में हिंदी भाषा एक संक्रमण के दौर से गुजर रही है। यह संक्रमण भाषाई तो है ही, साथ ही सांस्कृतिक भी। आज हिंदी पर डिजिटलीकरण अपना व्यापक प्रभाव डाल रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से विश्व ने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में आर्थिक एकीकरण की प्रक्रिया में भूमंडलीकरण की अवधारणा को महसूस किया, जिसमें हिंदी का क्षेत्र पहले तो सिमटता है, परंतु यह लड़खड़ाने के पश्चात पुनः अपने आपको इस नयी व्यवस्था में तकनीकी-सूचना एवं नव-संचार माध्यमों जैसे व्हाट्सएप्प, फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग्स, वेबसाइट्स आदि द्वारा एक विशिष्ट स्तर पर स्थापित करता है। डिजिटल मीडिया पर उपलब्ध इन नये माध्यमों से हिंदी साहित्य का दायरा लगातार बढ़ रहा है। पहले जहाँ हिंदी पढ़ने वालों की संख्या हजारों में थी, वहीं अब यह संख्या लाखों में हो चुकी है। इस दायरे में परंपरागत हिंदी साहित्य वर्ग समूह के अलावा एक नये प्रकार का रचनाकार और पाठकों का वर्ग समूह भी जुड़ा हुआ है और यह जुड़ाव डिजिटल मीडिया से संभव हो पाया।

डिजिटल मीडिया के आने से हिंदी के अस्तित्व का स्वरूप बेहद विस्तृत हो गया है। विशेष रूप से कोरोना महामारी के दौरान डिजिटल माध्यमों ने लोगों की जिंदगी में आशा की किरण जगायी। कठिन दौर में डिजिटल मीडिया बच्चों के लिए स्कूल तथा मनोरंजन का साधन बना, युवाओं के लिए लाइफ-लाईन बना और रोजगार के सारे साधन भी इसी माध्यम से जुड़ गये। भूमंडलीकरण के बाद जिन लोगों को यह डर था कि हिंदी का अस्तित्व मिट सकता है, आज वो भी इस नये माध्यम का उपयोग कर न सिर्फ नयी, बल्कि अपनी पुरानी रचनाओं को भी संरक्षित कर रहे हैं।

पहले जहाँ सुविधाओं, पैसों व पहुँच की कमी की वजह से शोधार्थियों के पास स्रोत का अभाव था, वहाँ अब इंटरनेट ने उसका दायरा बढ़ा दिया है। उदाहरणस्वरूप आज शोधार्थी काम करते-करते यूट्यूब, ईपीजी पाठशाला पर होने वाले पाठ को सुन सकते हैं, साहित्य पर फिल्माये गये वीडियो आसानी से देख सकते हैं, फेसबुक पर अपने विषय संबंधी पोस्ट पढ़ सकते हैं और साथ-साथ लिखकर अपना ज्ञान विस्तार कर सकते हैं। अपने विषय से संबंधित शोध पत्रों के बारे में शोधगंगा जैसी वेबसाइट का प्रयोग कर छानबीन कर सकते हैं। हर विश्वविद्यालय अपनी लाइब्रेरी में मौजूद पुस्तकों की सूची ऑपैक सिस्टम के द्वारा अपनी वेबसाइट पर मुहैया करा रहा है।

कंप्यूटर की दुनिया में हिंदी का प्रवेश सबसे पहले डॉस के जमाने में अक्षर, शब्दरत्न आदि जैसे वर्ड प्रोसेसरों के रूप में हुआ। बाद में विंडोज का पदार्पण होने पर 8-बिट एस्की फांटों जैसे कृतिदेव, चाणक्य आदि के द्वारा वर्ड प्रोसेसिंग, डीटीपी तथा ग्रॉफिक्स अनुप्रयोगों में हिंदी में मुद्रण संभव हुआ। अब तक हिंदी केवल मुद्रण के काम तक ही सीमित थी। यूनिकोड के आगमन से यह स्थिति बदली। माइक्रोसॉफ्ट के विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम में विंडोज 2000 तथा एप्पल के मैक ओएस में ओएस एक्स (संस्करण 10) से यूनिकोड हिंदी का समर्थन आया। इससे अंग्रेजी आदि यूरोपीय भाषाओं की तरह कंप्यूटर पर सभी अप्लिकेशनों में हिंदी का प्रयोग संभव हो गया। हिंदी की मानक की-बोर्ड इंस्क्रिप्ट सभी आधुनिक ऑपरेटिंग सिस्टमों में अंतर्निर्मित आती है। हिंदी टाइपिंग टूल्स की सुलभता से इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग लोकप्रिय हो गया। अधिकतर पुराने नॉन-यूनिकोड फांटों का प्रयोग करने वाली वेबसाइटों ने यूनिकोड को अपना लिया। वर्तमान में इंटरनेट पर हिंदी प्रयोक्ताओं की अच्छी-खासी संख्या है।

मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिंदी का प्रवेश वर्ष 2005 के बाद शुरु हुआ। नोकिया के मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम सिंबियन के कुछ संस्करणों में आंशिक हिंदी समर्थन संभव हुआ। माइक्रोसॉफ्ट के विण्डोज मोबाइल के कुछ संस्करणों में आयरॉन्स हिंदी सपोर्ट नामक थर्ड पार्टी सॉफ्टवेयर के जरिये हिंदी समर्थन सुविधा हुई। बाद में एपल के मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम आइओएस, गूगल के मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम

एंड्रॉयड तथा रिम के ब्लैकबेरी ओएस में भी हिंदी समर्थन उपलब्ध हुआ। वर्तमान में माइक्रोसॉफ्ट के विण्डोज फोन को छोड़कर लगभग सभी प्रमुख मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिंदी समर्थन है।

अब बात करते हैं कि विभिन्न कम्प्यूटिंग डिवाइसों और प्लेटफॉर्म पर हिंदी में काम करने हेतु शोधार्थियों को डिजिटल मीडिया पर किस प्रकार के स्रोतों की आवश्यकता है:

माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज

माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज सर्वाधिक लोकप्रिय डेस्कटॉप ऑपरेटिंग सिस्टम है। विण्डोज एक्सपी तथा विण्डोज 7 इसके दो सबसे प्रचलित विण्डोज संस्करण हैं। इनमें से विण्डोज एक्सपी में हिंदी समर्थन है, परंतु इसे कंट्रोल पैनल में जाकर सक्षम करना पड़ता है तथा इस कार्य हेतु विण्डोज सीडी की आवश्यकता होती है। इस कार्य को सरल बनाने के लिये लेखक द्वारा निर्मित इंडिक एक्सपी नामक टूल उपलब्ध है, जो यह कार्य बिना विण्डोज सी डी के स्वचालित रूप से करता है। विण्डोज 7 में इण्डिक सपोर्ट पहले से सक्षम होता है। विण्डोज 8, 10 में भी हिंदी समर्थन है।

टंकण

हिंदी टंकण हेतु विण्डोज में हिंदी का मानक इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड अंतर्निर्मित है, जिसे कंट्रोल पैनल के रिजनल एण्ड लैंगुएज ऑप्शन्स में जाकर जोड़ना होता है। फोनेटिक तथा रेमिंगटन ले-आउट द्वारा टंकण हेतु बाहरी टूल इंस्टाल करने पड़ते हैं। फोनेटिक हेतु गूगल आईएमई रेमिंगटन के लिए इंडिक आईएमई प्रचलित टूल हैं। विण्डोज का यूजर इंटरफेस भी हिंदी में किया जा सकता है। इसके लिए माइक्रोसॉफ्ट की वेबसाइट पर लैंगुएज इंटरफेस पैक उपलब्ध है।

लिनक्स

लिनक्स के अधिकतर नये वितरणों में हिंदी आदि भारतीय भाषाओं के प्रदर्शन हेतु समर्थन पहले से सक्षम किया होता है। हालांकि टेक्स्ट इनपुट एवं स्थानीय भाषाई इंटरफेस हेतु उस भाषा का सपोर्ट सक्षम करना पड़ता है। अधिकतर प्रचलित वितरणों जैसे उबंटू, लिनक्स मिंट तथा रैडहैट आदि में इंस्टालेशन के समय ही वांछित भाषा का विकल्प चुनकर इण्डिक सपोर्ट सक्षम किया जा सकता है। यदि इंस्टालेशन के समय नहीं किया गया तो बाद में इंटरनेट से कनेक्ट करके यह सक्षम किया जा सकता है। लिनक्स में हिंदी टंकण हेतु इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड अंतर्निर्मित होता है। कुछ संस्करणों में बोलनागरी नामक फोनेटिक की-बोर्ड भी होता है। ये की-बोर्ड इसकी सेटिंग्स में जाकर एससीआईएम (SCIM) या आई बस (IBUS) के द्वारा जोड़े जा सकते हैं। लिनक्स का यूजर इंटरफेस लगभग पूरी तरह हिंदी में उपलब्ध है।

मैक ओ एस तथा आई ओ एस

एपल के डेस्कटॉप ऑपरेटिंग सिस्टम मैक ओएस में संस्करण 1ए (ओएस एक्स) से भारतीय भाषाई समर्थन दिया जाना शुरु हुआ था। संस्करण 10.7 में लगभग सभी भारतीय भाषाओं का समर्थन आ चुका है। हिंदी इनपुट के लिए इनस्क्रिप्ट की-वोर्ड अंतर्निर्मित होता है, जिसे सेटिंग्स में जाकर जोड़ना पड़ता है। ओएस एक्स में अभी हिंदी इंटरफेस ढंग से नहीं है।

आइओएस एपल का मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम है, जो कि आइफोन (एपल का स्मार्टफोन), आईपॉड टच (एपल का पोर्टेबल म्यूजिक प्लेयर) तथा आइपॉड (एपल का टैबलेट) में प्रयुक्त होता है। आइओएस 4 से इसमें पूर्ण हिंदी दर्शन समर्थन आ गया। आइओएस के नये संस्करण में हिंदी कीबोर्ड आ गया है, जिससे डिवाइस में कहीं भी सीधे हिंदी में लिखना संभव हो गया है।

एंड्रॉइड

एंड्रॉइड गूगल का मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम है, जो कि विभिन्न स्मार्टफोन एवं टैबलेट निर्माताओं द्वारा अपने उपकरणों में प्रयुक्त किया जाता है। शुरुआत में तो सिर्फ कुछ स्मार्टफोन निर्माताओं ने अपने कुछ मॉडलों में अपने स्तर पर फर्मवेयर को संशोधित करके हिंदी समर्थन उपलब्ध कराया था, परंतु एंड्रॉइड के नवीनतम संस्करण में न सिर्फ हिंदी, बांग्ला तथा तमिल भाषाओं का समर्थन आ गया है, वरन इसके तहत गूगल इंडिक की-बोर्ड, गूगल वॉइस टाइपिंग तथा कई अन्य तरह की सुविधाएँ भी मौजूद हैं।

हिंदी संगणन टूल

हिंदी संगणन टूल्स की बात होने पर सबसे पहले टंकण टूल्स की बात आती है। लगभग सभी ऑपरेटिंग सिस्टमों में मानक इंस्क्रिप्ट की-वोर्ड अंतर्निर्मित होता है। हिंदी टंकण के लिए सामान्य मोबाइल फोन पर टी9 इनपुट व्यवस्था तथा टचस्क्रीन फोन पर इंस्क्रिप्ट ऑनस्क्रीन की-वोर्ड होता है।

हिंदी एवं दूसरी भाषाओं के मध्य दूरी पाटने के लिये मशीनी लिप्यंतरण तथा मशीनी अनुवाद सेवाएँ उपलब्ध हैं। मशीनी लिप्यंतरण सेवाओं द्वारा देवनागरी एवं अन्य भारतीय लिपियों के मध्य परिवर्तन संभव है। इनके प्रयोग से आप किसी पंजाबी में लिखे वेबपेज को पलक झपकते ही देवनागरी में पढ़ सकते हैं। दूसरी ओर मशीनी अनुवाद सेवाएँ इतनी बेहतर तो नहीं, पर किसी दूसरी भाषा में लिखी सामग्री का हिंदी में अर्थ समझने में बहुत हद तक सहायता कर देती हैं। मशीनी अनुवाद के लिये गूगल ट्रांसलेट, मंत्र-राजभाषा तथा बिंग ट्रांसलेटर आदि कुछ सेवाएँ हैं।

ओसीआर तकनीक किसी इमेज में से टेक्स्ट को पहचान कर उसे संपादन योग्य टेक्स्ट में बदलती है। ओसीआर मुद्रित

हिंदी सामग्री के डिजिटलीकरण हेतु एक महत्वपूर्ण टूल है। अंग्रेजी के लिये जहाँ कई ओसीआर हैं, वहीं हिंदी हेतु सही परिणाम देने वाला हिंदी/संस्कृत ओसीआर नामक एक ही टूल है। इस दिशा में अभी और काम किया जाना बाकी है।

इलेक्ट्रॉनिक शब्दकोश किसी शब्द का अर्थ, उच्चारण आदि ढूँढ़ना सरल बनाते हैं। हिंदी के लिए शब्दकोश.कॉम, ई-महाशब्दकोश, अरविन्द-लैक्सिकन, विक्शनरी आदि ऑनलाइन शब्दकोश हैं। इनके अतिरिक्त कई ऑफलाइन इलेक्ट्रॉनिक शब्दकोश भी उपलब्ध हैं। किसी दस्तावेज में टंकित हिंदी सामग्री हेतु कई वर्तनी जांचक (स्पैल चैकर) भी उपलब्ध हैं।

'पाठ से वॉक्' ऐसे सॉफ्टवेयर तंत्र हैं, जो टेक्स्ट को पढ़कर सुनते हैं, इन्हें टीटीएस (Text to Speech) भी कहा जाता है। हिंदी के लिए ऐसे कई प्रोग्राम हैं और उनका प्रदर्शन भी अच्छा है। इनमें फेस्टिवल, वॉजमी, वाचक वर्ड प्लगइन, ध्वनि, शक्ति इत्यादि शामिल हैं।

दूसरी ओर वाक् से पाठ ऐसे तंत्र होते हैं, जो माइक्रोफोन में बोली गयी ध्वनि को इनपुट के तौर पर लेकर उसे टेक्स्ट में बदलते हैं। अंग्रेजी के लिए जहाँ ऐसे कई प्रोग्राम हैं, वहीं हिंदी के लिए एकमात्र प्रोग्राम सी-डैक का श्रुतलेखन-राजभाषा है।

भारत सरकार का उपक्रम सीडैक पिछले करीब **25** साल से कंप्यूटरों पर भारतीय भाषाओं की उपलब्धता बढ़ाने और उन्हें बेहतर काम करने में सक्षम बना रहा है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की तकनीक में जो सुधार किये जा रहे हैं, उससे इंटरनेट पर उनकी उपयोगिता बढ़ेगी। सी-डैक शुरुआत से ही हिंदी को डिजिटल जगत में प्रयोग के लिए तकनीकी तौर पर और आसान बनाने हेतु काम कर रहा है। कंप्यूटरों पर हिंदी के स्थाई उपयोग के लिए कई सॉफ्टवेयर भी बनाये गये, जिसमें 'आई लीप' सर्वाधिक लोकप्रिय रहा। हिंदी का टाइपिंग अब भी कई लोगों के लिए एक समस्या है, लोग ज्यादातर अंग्रेजी में टाइप करते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए सी-डैक द्वारा स्पीच और हैंडराइटिंग रिकग्नीशन तकनीक पर काम किया जा रहा है।

फॉण्ट कोड परिवर्तक ऐसे कन्वर्टर प्रोग्राम हैं, जो पुराने एस्की फॉन्टों (जैसे कृतिदेव, चाणक्य आदि) में टंकित हिंदी सामग्री को यूनिकोड में बदलते हैं। कई मुफ्त कन्वर्टर प्रोग्राम उपलब्ध हैं, जिनसे पुरानी एन्कोडिंग में टंकित हिंदी सामग्री को वेब पर प्रकाशन हेतु यूनिकोड में बदल सकते हैं। वर्तमान में अधिकतर सभी नई प्रोग्रामिंग भाषाओं तथा डाटाबेस सिस्टमों में हिंदी यूनिकोड समर्थन आ चुका है।

हिंदी वेबसाइटें एवं वेब सेवाएँ

यूनिकोड के आगमन के बाद हिंदी वेबसाइटों की संख्या तेजी से बढ़ी है। पहले जहाँ अधिकतर हिंदी वेबसाइट नॉन-यूनिकोड फॉण्ट में होने से आम जन तक नहीं पहुँच पाती थी, वहीं अब नयी वेबसाइटों के अतिरिक्त अधिकतर पुरानी साइटें भी यूनिकोडित हो चुकी हैं। यूनिकोड में बनी वेबसाइटें बिना फॉण्ट के झमेले के पढ़ी जा सकती हैं तथा ये सर्च इंजनों द्वारा भी सूचीबद्ध की जाती हैं। आज अधिकतर हिंदी समाचार पत्रों की वेबसाइट हैं। इसके अतिरिक्त अनेक मनोरंजन पोर्टल, ई-कॉमर्स वेबसाइटें आदि भी हिंदी में हैं। दूसरी ओर विकिपीडिया, विकिट्रैवल, भारतकोश आदि ज्ञानवर्धक विश्वकोश भी हैं।

वर्तमान में अधिकतर सर्च इंजन गूगल, बिंग आदि हिंदी यूनिकोड खोज का समर्थन करते हैं। हिंदी खोज के मामले में गूगल का प्रदर्शन अन्य सर्च इंजनों की तुलना में सबसे बेहतर है। गूगल इंटरफेस हिंदी एवं अन्य दूसरी भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध है, तभी शायद हिंदी वाले गूगल को 'गूगल बाबा' कहते हैं। ईमेल की बात करें तो वैसे तो अधिकतर वर्तमान ईमेल सेवाएँ हिंदी यूनिकोड का समर्थन करती हैं, परंतु गूगल की 'जी मेल' हिंदी के लिये सर्वोत्तम है। जीमेल में हिंदी में मेल लिखने हेतु गूगल का ट्रांसलिट्रेशन टूल भी इनबिल्ट है।

हिंदी चिट्ठाकारी (Blogging) की इंटरनेट पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सन **2003** में 'नौ दो ग्यारह' नामक चिट्ठे (Blog) से आरंभ होकर आज हिंदी चिट्ठे की संख्या लगभग **30000** तक पहुँच गयी है। यद्यपि अब भी हिंदी चिट्ठाजगत अंग्रेजी चिट्ठाजगत जितना विस्तृत नहीं, पर यह निरंतर प्रगति कर रहा है। हिंदी चिट्ठाकारी ने कंप्यूटर और इंटरनेट पर हिंदी में रुचि रखने वाले विभिन्न लोगों का समुदाय विकसित करने में सहायता की है। ब्लॉगर तथा वर्डप्रेस के ब्लॉग प्लेटफॉर्म हिंदी के लिए उपयुक्त हैं।

गूगल मीटिंग, जूम मीटिंग, यूट्यूब आदि के द्वारा होने वाले ऑनलाइन सेमिनार तथा कॉन्फ्रेंस ने लोगों को एक साथ किसी भी स्थान से किसी भी मीटिंग में जुड़ने की आजादी दे दी है। अब तो ऑनलाइन सेमिनारों को भी यूजीसी के तहत उतनी ही मान्यता मिलने लगी है, जितनी परंपरागत स्वरूप को दी जाती थी।

गूगल अनुवाद

गूगल अनुवाद का कार्य हिंदी सुविधाएँ उपलब्ध कराना है। कृत्रिम मेधा व यंत्र अभिगम के उपयोग से इसे लगातार बेहतर बनाया जा रहा है। इससे हिंदी बोलने वालों के लिए अन्य भाषाओं की सामग्री प्राप्त करना और अपनी सामग्री को अन्य भाषाओं में अनुवाद करना आसान हो रहा है।

फेसबुक हिंदी बोलने वालों के लिए कृत्रिम मेधा और यंत्र अभिगम के उपयोग द्वारा नई सुविधाएँ विकसित कर रहा है। इससे हिंदी बोलने वालों के लिए फेसबुक पर एक-दूसरे से बातचीत करना आसान हो रहा है। यूट्यूब, उपयोगकर्ताओं की

रुचियों के आधार पर उन्हें हिंदी वीडियो की सुविधा उपलब्ध करने के लिए कृत्रिम मेधा और यंत्र अभिगम का उपयोग कर रहा है। इससे हिंदी बोलने वालों को नई हिंदी सामग्री खोजने में मदद मिल रही है। जैसे-जैसे ये प्रौद्योगिकियाँ विकसित होती रहेंगी, हिंदी बोलने वालों के लिए इनके उपयोग के और भी अधिक नवीन तरीके देखे जा सकते हैं।

मेटावर्स और वेब 3.0

मेटावर्स एक आभासी दुनिया है, जहाँ लोग एक-दूसरे के साथ और डिजिटल सामग्री के साथ बातचीत कर सकते हैं। भविष्य में, हम हिंदी बोलने वालों के लिए इमर्सिव अनुभव बनाने के लिए मेटावर्स में हिंदी का उपयोग होते देखेंगे। उदाहरण के लिए, हिंदी बोलने वाले मेटावर्स का उपयोग भारतीय सांस्कृतिक स्थलों की आभासी प्रतिकृतियाँ देखने या हिंदी भाषा के संगीतकारों द्वारा वर्चुअल संगीत समारोह में शामिल होने के लिए कर सकते हैं।

वेब 3.0 (Web3) इंटरनेट का एक नया संस्करण है, जो ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित है। उदाहरण के लिए, हिंदी बोलने वाले वेब 3.0 का उपयोग हिंदी भाषा के विकेंद्रीकृत स्वायत्त संगठन (DAO) बनाने या हिंदी भाषा के गैर-फंगिबल टोकन (NFT) लॉन्च करने के लिए कर सकते हैं।

डिजिटल हिंदी का भविष्य

कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन तथा टैबलेट आदि डिजिटल उपकरण हमारे दैनिक जीवन के हिस्सा बन चुके हैं। आजकल लगभग इन सभी उपकरणों में हिंदी में काम करना संभव है। भाषाई समर्थन ने तकनीकी विभाजन की दूरी को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यूनिकोड सिस्टम ने हिंदी को सभी कंप्यूटिंग डिवाइसों तक पहुँचा दिया है। यूनिकोड सिस्टम के कारण कंप्यूटर पर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में काम करना अंग्रेजी जैसा ही सरल हो गया है। इसी कारण अब इंटरनेट पर हिंदी चिट्ठों तथा वेबसाइटों की भरमार है।

ऑपरेटिंग सिस्टमों की बात करें तो माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज, लिनक्स तथा एपल के मैक ओएस आदि डेस्कटॉप ऑपरेटिंग सिस्टमों के अतिरिक्त आइओएस तथा एंड्रॉइड जैसे मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टमों में भी इण्डिक यूनिकोड का समर्थन आ गया है। कंप्यूटर पर ऑफिस सुइट जैसे माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, लिब्रे ऑफिस इत्यादि में भारतीय भाषाओं में भी काम किया जा सकता है। इससे कंप्यूटर पर भारतीय भाषायें अब केवल टाइपिंग तक सीमित न रहकर सॉर्टिंग, इंडेक्सिंग, सर्च, मेल मर्ज, हैडर-फुटर, फुटनोट्स, टिप्पणियाँ (कमेंट) आदि कार्यों में सक्षम हैं।

आने वाले समय में लगभग सभी कंप्यूटरों में हिंदी समर्थन पूरी तरह अंतर्निर्मित होगा। प्रकाशन उद्योग द्वारा अत्यधिक उपयोग किये जाने वाले ग्राफिक्स तथा डीटीपी पैकेजों फोटोशॉप, कोरलड्रॉ तथा इनडिजाइन आदि में हिंदी यूनिकोड समर्थन आने से भविष्य में प्रकाशन उद्योग भी यूनिकोड को अपनायेगा। यूनिकोड के प्रति बढ़ती जागरूकता और प्रकाशन के सॉफ्टवेयर पैकेजों के यूनिकोड समर्थित संस्करणों के आगमन के दृष्टिगत इस दशक के अंत तक कंप्यूटर और इंटरनेट पर सारा कार्य यूनिकोड हिंदी में होने लगेगा।

इंटरनेट पर भी अब अंतरराष्ट्रीय वर्ण-कूट मानक यूनिकोड खूब लोकप्रिय हो रहा है और सभी प्रमुख वेबसाइट जैसे गूगल, विकिपीडिया आदि इसे अपना चुकी हैं। यूनिकोड आधारित वेबसाइटों को देखने के लिए पाठक के पास संबंधित फॉण्ट होने की अनिवार्यता भी नहीं है। अगर कोई वेबसाइट यूनिकोड में है तो उसे किसी भी यूनिकोड सक्षम कंप्यूटर पर देखा जा सकता है। यूनिकोड की लोकप्रियता संसार भर में दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ती जा रही है तथा इसके साथ ही हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भी वेबसाइट, ब्लॉग, ऑनलाइन वेब आधारित टूल्स/उपकरणों/सुविधाओं का प्रयोग धड़ाधड़ बढ़ता जा रहा है। ईमेल में सीधे हिंदी में संप्रेषण किया जा रहा है।

गूगल सर्वेक्षण बताता है कि इंटरनेट पर डिजिटल दुनिया में हिंदी सबसे बड़ी भाषा है। गूगल, सेंसस इंडिया और आईआरएस की सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार इंटरनेट पर हिंदी की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगा सकते हैं कि इंटरनेट पर हिंदी पढ़ने वालों की संख्या हर साल 94 फीसदी बढ़ रही है, जबकि अंग्रेजी में 17 फीसदी। इस रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2024 में इंटरनेट पर हिंदी का उपयोग करने वालों की संख्या अंग्रेजी की तुलना में अधिक हो जाएगी। एक अनुमान के मुताबिक 2024 तक 25 करोड़ लोग इंटरनेट पर हिंदी का उपयोग करने लगेंगे। 2024 तक 8.7 करोड़ लोग डिजिटल पेमेंट के लिए हिंदी का उपयोग करने लगेंगे, जबकि 2016 में यह संख्या सिर्फ 2.2 करोड़ थी। सरकारी कामकाज के लिए 2016 तक 2.4 करोड़ लोग हिंदी का इस्तेमाल करते थे, जो 2024 में 10 करोड़ हो जायेंगे। 2016 में डिजिटल माध्यम में हिंदी समाचार पढ़ने वालों की संख्या 5.5 करोड़ थी, जो 2024 में बढ़कर 16 करोड़ होने का अनुमान है। भूमंडलीकरण की जिस आंधी में कुछ लोगों को हिंदी का भविष्य डूबता नजर आ रहा था, आज वही इस पतझड़ के बाद एक नये रंगो-रौनक के साथ पुनः स्थापित हो रहा है।

- डी-1209, डबुआ कालोनी, सैक्टर-50,
फरीदाबाद-121001 (हरियाणा)
मोबाइल नंबर: 9871346063

लेख

हिंदी भाषा और तकनीक के मिलन की अद्वितीय यात्रा

- सुश्री रश्मि किरण -

महात्मा गांधी ने वर्ष 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में कहा कि 'हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा माना जाए, क्योंकि यह जनमानस की भाषा है।' हिंदी तो ऐसे ही बेहद उदार भाषा है। इसमें अपने में हर भाषा को आत्मसात कर लेने की अद्भुत क्षमता है। परंतु हिंदी भाषा पर अंग्रेजी का प्रभाव बहुत अधिक पड़ने लगा।

आजादी के साथ ही हमारे देश ने कई देशों की मदद से अपने कई क्षेत्रों को बेहतर करने और तरक्की करने का रास्ता अपनाया। 1991 तक सोवियत संघ भारत का सबसे करीबी दोस्त और सहायक बना रहा था। उस समय तक देश में नव उदारीकरण की आर्थिक नीतियाँ लागू की गई और वही समय था जब सोवियत संघ का पतन तेजी से हो रहा था। कारण साफ था, समाजवाद का पतन हो रहा था और पूंजीवाद और नई प्रौद्योगिकी का अभ्युदय हो रहा था। नई प्रौद्योगिकी के कारण उसकी सहायता के लिए नई प्रकार की सेवाओं एवं उद्योगों का विकास होने लगा। इससे अर्थनीति में बहुत ही बड़ा और महत्वपूर्ण बदलाव आया। कृषि की तरफ झुकाव कम होने लगा और सहायक छोटे उद्योगों की तरफ लोगों का रुझान बढ़ने लगा। भारत एक कृषि प्रधान देश होते हुए भी कृषि का अंशदान 20% से कम रह गया। इसका असर हिंदी भाषा के विकास पर भी पड़ा।

प्रौद्योगिकी ने अंग्रेजी भाषा की महत्ता बढ़ा दी है। लोगों को नौकरी के लिए, आगे बढ़ने के लिए व विकास के लिए ऐसे बढ़ते प्रौद्योगिकी के माहौल में अंग्रेजी ही सफलता की डोर दिखी। लोगों के पास इस माहौल ने समय का भी अभाव उत्पन्न कर दिया। अधिकतर लोगों ने हिंदी पर अपना समय बर्वाद करना उचित नहीं समझा। लोग हिंदी बोलने से कतराने लगे। यह स्थिति ज्यादा समय तक नहीं रही और प्रौद्योगिकी विकसित हुई। ध्वनि से इलेक्ट्रॉनिक तरंगों तक विकसित प्रौद्योगिकी ने भाषा के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला तथा विभिन्न मीडिया प्रगति के माध्यम से इसने भाषा, जीवन और सामाजिक विकास को आकार दिया।

तकनीक और भाषा, ये दो अवधारणाएँ जब एक साथ आती हैं तो एक अद्भुत और प्रेरणादायक कहानी बनती है। आज के डिजिटल युग में, तकनीक ने न केवल हमारे जीवन को बदल दिया है, बल्कि भाषाओं के विकास में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कहानी है हिंदी भाषा की, जो भारत की सबसे प्रिय और व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, और तकनीक की, जिसने इस भाषा को एक नई पहचान और दिशा दी है। इस लेख में, हम हिंदी भाषा और तकनीक के इस मिलन की अद्वितीय यात्रा पर चर्चा करेंगे, जिसमें उनके विकास, चुनौतियाँ, और सफलता की कहानियाँ शामिल होंगी।

कंप्यूटरों पर हिंदी में कार्य के लिए भाषा प्रौद्योगिकी में सर्वप्रथम शुरुआत हुई वर्ल्ड प्रोसेस एप्लीकेशन से। प्रारंभ में आई.आई.टी. कानपुर ने हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के लिए कंप्यूटर पर काम करने हेतु फांट उपलब्ध करवाये गये। भारत सरकार द्वारा सी.डैक. में भारतीय भाषाओं के लिए विशेष प्रकोष्ठ की व्यवस्था की गई और उनके द्वारा जिस्ट टेक्नॉलाजी का प्रयोग करते हुए कंप्यूटर में हिंदी कार्य करने की सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गई।

इंटरनेट के आगमन ने हिंदी की राह और जटिल कर दी। परंतु वह समय भी आया, जब विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं की तरह भारतीय भाषाओं के लिए भी यूनिकोड फांट्स की व्यवस्था हुई, जिसे माइक्रोसॉफ्ट, आई बी एम, गूगल सहित कई ऑपरेटिंग प्रणालियों द्वारा स्वीकार किया गया। नतीजा यह हुआ कि आज सोशल मीडिया के दौर में लोग अपनी बातें हिंदी भाषा में लिखते हैं, पढ़ते और पढ़ाते हैं। इसके अलावा मुख्य धारा वाले समाचार कंपनियाँ भी हिंदी में वेबसाइट के सहारे आलेख हर उस इंसान तक बेहद कम समय में पहुँचाती हैं, जिसके हाथ में 'स्मार्टफोन' हैं।

प्रौद्योगिकी विकास, समय के साथ हिंदी भाषा की प्रासंगिकता पर अपनी मुहर लगाते दिखता है। 'गूगल ट्रांसलेटर' और 'वाइस टाइपिंग' जैसी तकनीक हिंदी की प्रासंगिकता में चार चाँद लगाने का काम कर रहे हैं। यांत्रिक तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा हिंदी के कार्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अब मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों तथा अन्य अनेक सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाओं में प्रयास किये जा रहे हैं तथा उनसे जनमानस को अवगत कराया जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के अनेक स्तर जैसे केबल, टेलिविजन, दूरदर्शन, कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया आदि में हिंदी का प्रयोग और अधिक बढ़ गया है।

डिजिटल इंडिया के तहत, ई-गवर्नेंस सेवाओं को हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता रही है। इससे ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में लोगों

को सरकारी सेवाओं का लाभ मिल रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) ने भी हिंदी भाषा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गूगल असिस्टेंट, सिरी, और अन्य वर्चुअल असिस्टेंट अब हिंदी में भी उपलब्ध हैं। इससे हिंदी भाषी उपयोगकर्ताओं को तकनीक का लाभ उठाने में आसानी हो रही है।

गूगल की एक रिपोर्ट के अनुसार, गूगल असिस्टेंट के हिंदी उपयोगकर्ताओं की संख्या **2020** में दोगुनी हो गई है। यह दर्शाता है कि लोग अपनी भाषा में तकनीकी सेवाओं का उपयोग करना अधिक पसंद कर रहे हैं। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या **2020** में **50** करोड़ से अधिक हो गई है, जिसमें से **53%** ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं। इनमें से अधिकांश उपयोगकर्ता हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में इंटरनेट का उपयोग करते हैं।

यूट्यूब इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, हिंदी में सामग्री देखने वालों की संख्या **2019** में **85%** बढ़ी है। हिंदी कंटेंट क्रिएटर्स की संख्या भी तेजी से बढ़ी है, जो दर्शकों के लिए आकर्षक और रोचक सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं। KPMG की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय भाषाओं में डिजिटल कंटेंट का बाजार **2021** तक **3** बिलियन डॉलर तक पहुँचना है, जिसमें हिंदी का प्रमुख हिस्सा है। एनएएसकॉम की एक रिपोर्ट के अनुसार, ई-लर्निंग प्लेटफार्म पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में पाठ्यक्रमों की माँग में **60%** की वृद्धि हुई है।

कुछ समय पहले की ही बात है। अभिभावक हिंदी भाषी होते हुए भी अपने बच्चों को अंग्रेजी में बोलना व काम करना सिखाने पर जोर देते थे। इसका यह परिणाम हुआ कि आगे आने वाली हमारी पीढ़ियाँ हिंदी बोलती भी हैं तो बहुत ही त्रुटिपूर्वक बोलती हैं, जो बेहद अशुद्ध होती है। तब कुछ विवेकपूर्ण लोगों ने समुदाय बनाया और लोगों को जगाने की कोशिश करने लगे। घर-परिवार में, नई पीढ़ियों की जबान से हिंदी भाषा न उजड़ने पाए, इस बाबत बहुत सी कोशिशें हो रही हैं। इन कोशिशों के परिणामस्वरूप **2016** में विश्व आर्थिक मंच (WEF) ने **10** सर्वाधिक शक्तिशाली भाषाओं की जो सूची जारी की थी, उस में हिंदी का भी स्थान था।

2006 से भारत, **10** जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाता है। हिंदी की बढ़ती प्रासंगिकता का ही परिणाम है कि संयुक्त राष्ट्र रेडियो अपना प्रसारण हिंदी में भी करना शुरू कर दिया है। चूँकि भारत में कई भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। इसीलिए स्वतंत्र भारत को एक राजकीय भाषा में बांधने की आवश्यकता हुई तो स्वतंत्र भारत की कौन सी भाषा राजभाषा के तौर पर अपनाई जाए, इस बारे में काफी विचार-विमर्श हुआ और यह निर्णय लिया गया कि हिंदी को ही राजभाषा का सम्मान दिया जाए। यह निर्णय भारतीय संविधान के भाग **17** के अध्याय की धारा **343**(**1**) में इस प्रकार लिखा गया - 'संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।' यह निर्णय **14** सितंबर **1949** को लिया गया। इसलिए संपूर्ण भारत में यही तारीख अर्थात **14** सितंबर हिंदी दिवस मनाने के लिए निश्चित कर दिया गया।

यह जानकारी बहुत ही अहम है कि सन **1953** से यह हिंदी दिवस प्रतिवर्ष **14** सितंबर को मनाया जाता रहा है। आखिर वह देश जिसका नाम हिंदुस्तान है, जहाँ इकबाल ने कहा 'हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्ताँ', वहाँ **1953** से आज **2024** में पहुँच गये हैं और आज भी हम हिंदी को स्थापित रखने की भरपूर कोशिश में ही लगे हुए हैं।

भविष्य में, हिंदी भाषा और तकनीक का संबंध और भी मजबूत हो सकता है। वर्चुअल रियालिटी, ऑगमेंटेड रियालिटी, और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसी नई तकनीकों में हिंदी भाषा के उपयोग की संभावना है। इससे न केवल हिंदी भाषी समुदाय को लाभ होगा, बल्कि यह हिंदी भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। टेक्नोलॉजी रिसर्च फर्म Gartner के अनुसार, **2025** तक,

लेख

IoT उपकरणों का उपयोग करने वाले **60%** से अधिक भारतीय उपभोक्ता अपनी स्थानीय भाषा में संवाद करेंगे।

यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व के लगभग एक सौ सैंतीस देशों में हिंदी भाषा विद्यमान है। हिंदी भाषियों की कुल संख्या अनुमानत: सौ करोड़ है। नेपाल, चीन, सिंगापुर, बर्मा, श्रीलंका, थाईलैंड, मलेशिया, तिब्वत, भूटान, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालदीव आदि ऐसे देश हैं, जिनमें से अनेक बृहदतर भारत के अंग थे। यहाँ हिंदी भाषी परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी निवास कर रहे हैं। नेपाल की भाषाएँ हिंदी की विभाषाएँ ही हैं। बर्मा और भूटान की स्थिति भी कुछ ऐसे ही है। पाकिस्तान और बांग्लादेश में जो उर्दू और बांग्ला प्रचलित हैं, उन्हें यदि देवनागरी में लिख दिया जाय तो वे हिंदी से भिन्न प्रतीत नहीं होंगी। जावा, सुमात्रा और इंडोनेशिया में जो उर्दू बोली जाती है, उसे देवनागरी में लिखा जाए तो वह हिंदी ही है। दुबई की अधिकांश जनता न केवल हिंदी समझती है, बल्कि बोलती भी है।

हिंदी में आज कई तरह से रोजगार के मौके सामने आये हैं। सभी सरकारी अधिकारियों के लिऐ दफ्तरों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का उपयोग अनिवार्य बनाया गया है। आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रतिवेदन, प्रेस-विज्ञप्ति, निविदा, अनुबंध व विभिन्न प्रारूपों को हिंदी में बनाना और जारी करना अनिवार्य है। इसका सीधा-सा अर्थ है कि केंद्र सरकार व राज्य सरकारों के सभी विभागों, उपविभागों में हिंदी अधिकारी, अनुवादक, प्रबंधक, उप-प्रबंधकों के रूप में रखे जा रहे हैं। सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में हिंदी अधिकारी के पद बनाये गये हैं।

14 सितंबर का दिन जब हिंदी दिवस मनाने के लिए तय किया गया तो इस निर्णय का स्वागत पूरे देश में नहीं हुआ। गैर हिंदी भाषी राज्यों ने इसका बहुत ही जोरदार विरोध किया। एक भाषा को कारण बना कर लगभग आधा भारत सुलग उठा। इस आग को जोरदार हवा राजनैतिक और अवसरवादिता ने दी। अवसरवादी ताकतों ने अपना-अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए आम जनता को समझाने का काम नहीं किया और इसका परिणाम यह रहा कि अंग्रेजी को भी राजभाषा का दर्जा देना पड़ा। हम भारतीयों ने अपनी गुलामी की इस सबसे अहम निशानी का अपने ऊपर ठप्पा लगा लिया और शांत हो गये। परंतु इसका असर हिंदी पर गहरा पड़ा। हिंदी ने हार नहीं मानी और इसी का परिणाम है कि हिंदी भाषा और तकनीक का मेल एक अद्वितीय और प्रेरणादायक कहानी बन गई। तकनीक ने हिंदी भाषा को नया आयाम और दिशा दी है। इससे न केवल हिंदी भाषी समुदाय को फायदा हुआ है, वल्कि हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर पर प्रसार भी हुआ है। भविष्य में, हिंदी भाषा और तकनीक का यह संबंध और भी प्रगाढ़ होगा और इससे नये-नये अवसर उत्पन्न होंगे।

'इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) की रिपोर्ट के अनुसार, डिजिटल प्लेटफार्म पर हिंदी भाषा का उपयोग आने वाले वर्षो में और अधिक बढ़ने की संभावना है, जिससे हिंदी भाषी उपयोगकर्ताओं को नई संभावनाओं और अवसरों का लाभ मिलेगा।' मातृभाषा को उजड़ने से रोक लिया जाए, इसके लिए हम सब को आगे आना होगा और अपने अपने स्तर पर कार्य करना होगा। हिंदी दिवस के दौरान स्कूलों, कॉलेजों में व सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिंदी दिवस पर हिंदी के प्रति लोगों का रुझान बनाने के लिए कई प्रकार के सम्मान की शुरुआत की गई है। एक सम्मान है 'भाषा सम्मान', यह सम्मान प्रतिवर्ष देश में ऐसे एक व्यक्ति को दिया जाता है, जिसने हिंदी के प्रयोग एवं उत्थान में विशेष योगदान दिया है।

परंतु जैसा परिणाम इतनी कोशिशों के बाद मिलना चाहिए, वह अब तक हासिल नहीं हो पाया है। हिंदी दिवस मनाने के तुरंत बाद लोग पुन: हिंदी भाषा को भूल जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक हुआ कि राजभाषा सप्ताह का भी आयोजन किया जाए। हिंदी दिवस के पहले एक सप्ताह तक राजभाषा सप्ताह मनाया जाता है। इससे मात्र इतना ही हो पाया कि एक वर्ष में कम से कम एक सप्ताह तो हम हिंदीमय रहने की कोशिश करते हैं। आवश्यक है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास के लिए काम करें। हमें गर्व करना चाहिए कि पूरी दुनिया में चीनी व अंग्रेजी के बाद दूसरी सबसे बड़ी भाषा हिंदी बनी हुई है।

हिंदी भाषा और तकनीक की यह यात्रा न केवल भारतीय समाज के लिए गर्व की बात है, बल्कि यह दिखाती है कि जब भाषा और तकनीक का सही तालमेल हो, तो सफलता की ऊँचाइयों को छूना कोई असंभव कार्य नहीं है। यह यात्रा हमें यह भी सिखाती है कि भाषा की समृद्धि और तकनीक की प्रगति एक साथ मिलकर एक नये युग की शुरुआत कर सकती हैं, जहाँ संचार और शिक्षा के नये द्वार खुल सकते हैं, और हर व्यक्ति को समान अवसर मिल सकते हैं। तो आइए, आज हम संकल्प लें कि हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग कर हम अपने देश और अपने आप पर गर्व महसूस करेंगे।

- दीपाटोली, राँची
झारखंड-**834001**
मोबाइल नंबर: **9599173998**
ई-मेल: onbalancedimperfection@gmail.com

लेख

परसाई साहित्य और सुधारवादी चिंतन

- डॉ एस कृष्ण बाबु -

हिंदी गद्य साहित्य में व्यंग्य कृतियों की मात्रा कुछ कम है। व्यंग्यकारों की संख्या भी बहुत कम है। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि व्यंग्यकार बनने के लिए सामान्य साहित्यकार से अधिक व विशेष प्रतिभा व तर्कशीलता की आवश्यकता होती है। अन्योक्ति, समासोक्ति, श्लेष, व्यतिरेक, प्रतीप जैसे अलंकारों का प्रयोग करते हुए गद्य रचनाओं का प्रणयन आसान नहीं होता। इसीलिए व्यंग्यकारों और व्यंग्य साहित्य की मात्रा किसी भी भाषा में कम ही रहती है।

हरिशंकर परसाई हिंदी भाषा के अद्वितीय व्यंग्यकार माने जाते हैं। उन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से समाज के ऊपर प्रखर व्यंग्य प्रहार किया है। वैसे तो उन्होंने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी व्यंग्य प्रधान शैली का उन्नयन दिखाया। विशेष रूप से उनका कथा साहित्य उनकी व्यंग्य प्रधान शैली के प्रस्तुतीकरण में पूर्ण रूप से सफल माना जा सकता है। कथा साहित्य के अंतर्गत उपन्यासों और कहानियों को ही लिया जाता है। परंतु परसाई जी के कथा साहित्य में उन्होंने कथा साहित्य से संबंधित कुछ अन्य रचनाएँ भी प्रस्तुत की हैं, जिनके लिए उन्होंने लघुकथा, दीर्घकथा, उपन्यासांश जैसे नये नाम दिये। इस दृष्टि से देखा जाए तो उनका कथा साहित्य अत्यंत व्यापक, समग्र एवं प्रभावशाली है।

'राणी नागफणी की कहानी' उनका अत्यंत लोकप्रिय व्यंग्य उपन्यास है, जो अस्सी पृष्ठों में प्रणीत है। यह एक ऐसा उपन्यास है, जिसमें ऐतिहासिक वातावरण उत्पन्न करके उसमें वर्तमान युग के विविध सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, व्यावसायिक और यहाँ तक कि सांस्कृतिक विडंबनाओं के प्रति भी व्यंग्य किया गया है।

'तट की खोज' उनका चालीस पृष्ठों का एक और उपन्यास है, जिसे उन्होंने दीर्घ कथा का नाम दिया। यह सामाजिक परिवेश में लिखा गया उपन्यास है, जिसमें सामाजिक संबंधों के खोखलेपन को दूर करने का व्यंग्यात्मक प्रयास दिखाया है। इसके पश्चात 'कबिरा खड़ा बाजार में' उनका अस्सी पृष्ठों वाला एक और उपन्यास है, जिसे उन्होंने काल्पनिक भेंट का नाम दिया है। श्री परसाई जी का यह उपन्यास कथोपकथन प्रधान उपन्यास है, जिसमें विश्व के विविध नेताओं, राजनीतिज्ञों, व्यावसायियों आदि के साथ उनकी प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए निर्गुण भक्ति शाखा के प्रवर्तक कबीर द्वारा किया गया आलोचनात्मक वार्तालाप शामिल किया गया है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त परसाई जी ने लगभग 184 छोटी और बड़ी कहानियाँ लिखीं, जिनमें समाज के प्रत्येक क्षेत्र के अंतर्गत दिखाई देने वाले कठोर यथार्थ की विकृति के प्रति प्रहारात्मक व्यंग्य करते हुए उन क्षेत्रों में सुधार लाने का सक्रिय प्रयास किया गया है। इन कहानियों की वस्तु चेतना, व्यक्ति चेतना और सामाजिक चेतना अथवा व्यंग्य के माध्यम से मानव जीवन में सुधार लाने का भरसक प्रयत्न करती हुई दृष्टिगोचर होती है।

प्रभुता और प्रशासन किसी भी समाज में विकसित राजनीति के दो अनिवार्य अंग हैं। वैसे तो ये दोनों एक दूसरे के पूरक भी हैं। परंतु किसी भी समाज का हित व कल्याण तभी संभव होगा, जब ये दोनों ही अंग निस्वार्थ व निष्ठा के साथ अपने दायित्व निभायेंगे। इन दोनों में भी समाज कल्याण और मानव हित के लिए प्रभुता की तुलना में प्रशासन का अधिक महत्त्व इसलिए है कि वह सदैव जनता से जुड़ा रहता है। अत: उसे और भी अधिक आदर्शवान होकर जनता और समाज की सेवा करते रहना चाहिए। किंतु क्या वर्तमान में प्रशासन इसी प्रकार कार्य कर रहा है? यह यक्ष प्रश्न है। परसाई जी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से प्रशासन में व्याप्त विविध प्रकार के भ्रष्टाचारों का पर्दाफाश किया है। उन्होंने अपनी अनेक कथा कृतियों में वर्तमान प्रशासन में व्याप्त चालबाजी, धोखाधड़ी, धांधली आदि को अत्यंत प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

'लंका विजय के बाद' नामक अपनी लघुकथा में वे इसी तथ्य को बड़े ही व्यंग्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनका कहना है कि लंकाविजय के पश्चात अयोध्या में आये वानरों ने बड़ा ही उत्पात मचाना आरंभ कर दिया। वे परिश्रम करना नहीं चाहते, क्योंकि उन्होंने रावण के साथ संग्राम में बहुत परिश्रम कर लिया है। अब उन्हें अयोध्या के शासन में उच्च पद चाहिए। लेकिन जब उन पदों हेतु योग्यता की बात आती है तो वे कहते हैं कि युद्ध के दौरान उनके शरीर पर हुए घाव ही उनकी योग्यता के प्रमाण हैं। वे अयोध्यानाथ राम से माँग करते हैं कि उनके शरीर पर हुए घाव गिने जायें और उन घावों की संख्या के आधार पर उनकी योग्यता निर्धारित करके उन्हें शासन में पद दिये जायें। इस पर अयोध्या में घाव पंजीयन कार्यालय खुलता है और प्रत्येक वानर वहाँ के अधिकारी को अपने सच्चे घाव दिखाकर प्रमाण पत्र पाने लगता है।

एक वानर अपने घर में बैठकर अपनी ही तलवार से अपने शरीर पर घाव बनाने लगता है। पत्नी के पूछने पर वह उसे सारी स्थिति समझाकर कहता है कि वह राम रावण युद्ध में भय के कारण भागकर वन में छिप गया था। रावण की मृत्यु

के पश्चात अयोध्या लौटनेवाली विजयी वानर सेना में जाकर मिल गया। इसलिए उसके शरीर पर उस समय कोई घाव नहीं था। अब चूँकि वानरों के घाव गिनकर उन्हें पद दिये जा रहे हैं, वह भी अपने शरीर पर घाव बना रहा है। इस पर उसकी पत्नी उससे पूछती है, 'परंतु प्राणनाथ, क्या कार्यालय वाले यह नहीं समझेंगे कि ये घाव राम-रावण संग्राम के नहीं हैं? तब वह मुस्कुराते हुए कहता है, 'प्रिये, तुम बहुत भोली हो। वहाँ भी धाँधली चलती है।' प्रशासन में व्याप्त धांधली का इससे बड़ा प्रतीकात्मक उदाहरण और क्या हो सकता है।

परसाई जी ने अपनी कथाओं में प्रशासन में कार्यरत कर्मचारियों के आलस्य और अकर्मण्यता की प्रवृत्ति का कई स्थानों पर बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से वर्णन किया है। वे मानते हैं कि सरकारी कर्मचारी जनता के धन से ही अपना जीवन सुखमय ढंग से व्यतीत तो करते हैं, लेकिन उसी जनता को न्यायपूर्ण सेवा देने में कोई रुचि नहीं दिखाते। उन्हें नहीं लगता कि वे अपने दायित्व के प्रति अन्याय कर रहे हैं। परसाई कृत 'सुदामा के चावल' नामक कथा में दरिद्र सुदामा बड़ा संकोच करते हुए जब अपने बाल्य मित्र श्रीकृष्ण से मिलने के लिए द्वारका पहुँचते हैं तो वहाँ नगर द्वार पर प्रवेश कक्ष के कर्मचारियों की उपर्युक्त प्रवृत्ति का सुंदर वर्णन करते हैं। आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई यह कहानी पठनीय है।

रिश्वतखोरी प्रशासन की एक आम प्रवृत्ति हो गई है। सरकारी विभागों में इसकी कोई सीमा नहीं है। कोई उसे 'खुरचन' कहता तो कोई 'वजन'। किसी साधारण नागरिक को इन कार्यालयों में अपना काम करवाना हो तो उन्हें संबंधित कर्मचारियों अथवा अधिकारियों को संतुष्ट करने के लिए 'खुरचन' या 'वजन' देना ही पड़ता है।

'त्रिशंकु बेचारा' नामक एक लघु कथा में भी परसाई जी इसी तथ्य को उजागर करते हैं। आधुनिकीकृत प्रस्तुत मिथकीय कथा में त्रिशंकु एक स्कूल मास्टर है। वह शहर के किसी गंदे मोहल्ले के एक कच्चे मकान में रहता है। विश्वामित्र उस शहर का रेट कंट्रोलर है। उसका लड़का त्रिशंकु के पास पढ़ता है। अक्ल से बहुत कमजोर उस लड़के को त्रिशंकु गलत रास्ते से किसी प्रकार उत्तीर्ण करा देता है। इस पर प्रसन्न होकर विश्वामित्र त्रिशंकु से कुछ माँगने को कहता है। पहले तो त्रिशंकु कुछ माँगता नहीं। लेकिन विश्वामित्र के जोर देने पर अपने लिए किराये पर एक अच्छा सा मकान दिलाने की माँग करता है। इस पर विश्वामित्र उसी शहर के सिविल लाइंस में स्थित इंदुपुरी का एक मकान दिलाता है, जो इंद्रदेव नामक एक आसामी का है। इंद्रदेव के बारे में विश्वामित्र कहता है, 'इंद्रदेव पहले लोक निर्माण विभाग में इंजीनियर था और राष्ट्र निर्माण का काम उसने इतनी दिलचस्पी से किया कि रिटायर होते-होते उसके भी अपने पंद्रह बीस मकान हो गए।'

'भोलाराम का जीव' श्री परसाई जी की एक अन्यतम लोकप्रिय कथा है, जिसमें उन्होंने प्रशासन की रिश्वतखोरी वाली प्रवृत्ति की धज्जियाँ उड़ा दी हैं। इस कहानी में एक स्थान पर चित्रगुप्त धर्मराज को बताते हैं कि 'महाराज आजकल पृथ्वी पर एक प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ उपहार भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवेवाले उड़ा लेते हैं। होजरी के पार्सलों के मौजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे के डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के पश्चात खराबी करने के लिए उड़ा तो नहीं दिया?' इन पंक्तियों में लेखक ने आज के प्रशासनिक यथार्थ की विकृति को बड़े ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

आगे चलकर जब नारद भोलाराम के जीव का पता लगाने के लिए भूलोक में आते हैं तो उन्हें पता चलता है कि भोलाराम सेवानिवृत्त होने के पश्चात पेंशन न मिलने के कारण निर्धनता से मर गया था। जब वे इस कार्यालय में पहुँचते हैं, जहाँ भोलाराम काम करके सेवानिवृत्त हुआ था। वहाँ जाकर उन्हें मालूम होता है कि भोलाराम ने पेंशन के लिए आवेदन तो दिया था, परंतु उसपर कोई 'वजन' न रखने के कारण कहीं उड़ गया है। वर्तमान भारत की कार्यालयीन भाषा न समझने के कारण बेचारे नारद 'वजन' को कोई 'पेपर वेट' समझते हैं। मामले की पूछताछ करते हुए वे जिस किसी भी टेबुल पर जाते, वहाँ बैठे हुए अधिकारी अथवा कर्मचारी इसी 'वजन' की बात करते हैं। आखिरकर वे चपरासी की बात सुनकर बड़े अधिकारी के कमरे में जाते हैं तो वे भी 'वजन' की बात कहकर उनकी वीणा को 'वजन' के रूप में माँग लेता है। परसाई जी की प्रस्तुत कथा में इस तथ्य को बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से प्रकाश में लाया गया है कि भारत के प्रत्येक कार्यालय में कदाचित सभी अधिकारी रिश्वत लेते ही हैं। कोई उसे 'वजन' कहता है, कोई 'उपहार', कोई 'भेंट'।

निष्कर्ष यह है कि श्री हरिशंकर परसाई ने अपने कथा साहित्य में वर्तमान प्रशासन की नकारात्मक प्रवृत्तियों का बड़े ही व्यंग्यपूर्ण ढंग से वर्णन किया है। वास्तव में ये प्रवृत्तियाँ वैविध्यपूर्ण हैं और समय तथा संदर्भ के अनुसार इनका स्वरूप बदलता रहता है। परंतु परसाई जी के अनुसार इनके कारण निम्नवर्ग के जन साधारण को असंख्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और मामलों की पेचीदगियों से क्षुब्ध होकर उन्हें अदालतों का दरवाजा भी खटखटाना पड़ता है। वैसे तो वहाँ भी उन्हें पर्याप्त लंबी अवधि के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है और इसी प्रतीक्षा में कभी-कभी उनकी इहलीला भी समाप्त हो जाती है।

- अध्यक्ष वाजा ए पी एवं
हिन्दी साहित्य भारती, आन्ध्र प्रदेश इकाई
फ्लैट नं.201, श्री वेंकट सौशील्यम
लॉसंस बे कॉलोनी, विशाखपट्टणम-530017
मोबाइल नंबर: 8885990777

'ग्रीनिंग स्टील: सतत् विकास के मार्ग' कार्यक्रम आयोजित

इस्पात मंत्रालय द्वारा **10** सितंबर, **2024** को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के सी डी देशमुख हॉल में आज 'ग्रीनिंग स्टील: सतत् विकास के मार्ग' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं माननीय केंद्रीय इस्पात व भारी उद्योग मंत्री श्री एच डी कुमारस्वामी ने 'भारत में इस्पात क्षेत्र को हरित बनाना: रोडमैप और कार्ययोजना' संबंधी रिपोर्ट जारी की। यह रिपोर्ट इस्पात मंत्रालय द्वारा गठित **14** कार्यबलों की अनुशंसाओं के आधार पर तैयार किया गया है, जिसमें भारतीय इस्पात क्षेत्र के विकार्बनन से जुड़ी समग्र रणनीतियों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

'इस्पात आयात निगरानी प्रणाली' 2.0 पोर्टल का शुभारंभ

माननीय केंद्रीय इस्पात व भारी उद्योग मंत्री श्री एच डी कुमारस्वामी ने **25** जुलाई, **2024** को इस्पात व भारी उद्योग राज्य मंत्री श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा, इस्पात मंत्रालय के तत्कालीन सचिव श्री नागेंद्र नाथ सिन्हा एवं भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में उन्नत 'इस्पात आयात निगरानी प्रणाली - एस आई एम एस **2.0** का शुभारंभ किया। माननीय मंत्री महोदय ने इसे घरेलू इस्पात उद्योग को बढ़ावा देने एवं इस्पात उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने में महत्त्वपूर्ण कदम माना है। यह पोर्टल डी जी एफ टी, बी आई एस व इस्पात मंत्रालयाधीन उपक्रम एम एस टी सी लिमिटेड के सहयोग से विकसित किया गया है।

'एक पेड़ माँ के नाम' पौधरोपण अभियान संचालित

'स्वच्छता ही सेवा **2024**' के तहत **26** सितंबर, **2024** को माननीय केंद्रीय इस्पात व भारी उद्योग मंत्री श्री एच डी कुमारस्वामी के नेतृत्व में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान संचालित किया गया। यह अभियान लोगों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में एक महत्त्वपूर्ण सावित हुआ। इस अवसर पर विभिन्न प्रतिभागियों ने सामूहिक तौर पर प्रतिवद्ध प्रयासों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को सुनिश्चित करते हुए बेहतर भविष्य के निर्माण की अनिवार्यता का उल्लेख किया। कार्यक्रम में इस्पात मंत्रालय के तत्कालीन सचिव (इस्पात) श्री संदीप पौंड्रिक एवं विभिन्न संगठनों के प्रमुख उपस्थित थे।

प्रक्रिया व उत्पाद नवाचारों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

माननीय इस्पात व भारी उद्योग राज्य मंत्री श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा द्वारा **28** सितंबर, **2024** को एम एम एम एम **2024** - व्यापक कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के तहत 'धातु उत्पादन में प्रक्रिया एवं उत्पाद नवाचार' पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एवं हरित इस्पात उत्पादन पर खुली संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय राज्य मंत्री ने इस्पात क्षेत्र में अपनाये जा रहे तकनीकी नवाचारों एवं सामग्री दक्षता की सराहना की। कार्यक्रम में उन्होंने भारतीय धातु संस्थान - दिल्ली चैप्टर द्वारा धातु उत्पादन में प्रक्रिया एवं उत्पाद नवाचारों पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के सम्मेलन खंड व स्मारिका का विमोचन किया।

माननीय केंद्रीय इस्पात मंत्री एवं राज्य मंत्री का आर आई एन एल में आगमन

माननीय केंद्रीय इस्पात व भारी उद्योग मंत्री श्री एच डी कुमारस्वामी ने 11 जुलाई, 2024 को माननीय इस्पात राज्य मंत्री श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा के साथ आर आई एन एल - विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र का दौरा किया। दौरे के दौरान माननीय मंत्री महोदय ने संयंत्र की विविध उत्पादन इकाइयों का अवलोकन किया एवं संयंत्र के निष्पादन की समीक्षा की। इस अवसर पर संयुक्त (सचिव) डॉ संजय रॉय, स्थानीय सांसद श्रीयुत श्रीभरत, स्थानीय विधायक श्री पल्ला श्रीनिवास राव एवं संयंत्र के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

संगठन में 'स्वच्छता ही सेवा 2024' अभियान का शुभारंभ

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में 14 सितंबर 2024 को 'स्वच्छता ही सेवा 2024' अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर संगठन के निदेशक गण, विभिन्न विभागाध्यक्षों, वरिष्ठ प्राधिकारियों, कर्मचारियों ने स्वच्छता शपथ ग्रहण की। इस अभियान के तहत संगठन द्वारा 14 सितंबर से 1 अक्टूबर तक 'स्वभाव स्वच्छता - संस्कार स्वच्छता' विषय पर 'स्वच्छता पखवाड़ा' मनाया जा रहा है। इस अवसर पर संगठन के कर्मचारियों, ठेका श्रमिकों एवं स्कूली वच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न गतिविधियों के आयोजन का निर्णय लिया गया।

क्यू सी एफ आई द्वारा दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन

क्वालिटी सर्किल फोरम ऑफ इंडिया, विशाखपट्टणम चैप्टर द्वारा 19-20 सितंबर 2024 को गुणवत्ता अवधारणा 2024 पर राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के उक्कु क्लव के एम पी हॉल में दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन ए टी सी टायर्स प्राइवेट लिमिटेड के एक्जेक्यूटिव वाइस चैयरमैन श्री बी प्रह्लाद रेड्डी द्वारा किया गया। संगठन के मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री जी गांधी ने अपेक्षा की कि इस सम्मेलन से 'एक दूसरे से सीखने एवं रचनात्मक विचारों के आदान-प्रदान हेतु उपयुक्त मंच प्रदान होगा।' कार्यक्रम में गुणवत्ता अवधारणाओं पर केस स्टडी की प्रस्तुति, मॉडल प्रदर्शनी जैसी विभिन्न गतिविधियों के संचालन की रूपरेखा बनाई गई।

डॉ राधिका प्रतिष्ठित 'जेंडर डायवर्सिटी' पुरस्कार से सम्मानित

नई दिल्ली 04 सितंबर, 2024 को आयोजित भारतीय इस्पात सम्मेलन में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन) डॉ दासरि राधिका को उनके उत्कृष्ट निष्पादन हेतु 'लैंगिक विविधता (जेंडर डायवर्सिटी) पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ राधिका ने इस्पात मंत्रालय के पूर्व सचिव श्री नागेंद्र नाथ सिन्हा के करकमलों से यह पुरस्कार ग्रहण किया। डॉ राधिका एक अनुभवी मानव संसाधन पेशेवर हैं, जिन्होंने अब तक के अपने 28 वर्षों के सेवाकाल में अपने दायित्व निर्वहण में उत्पन्न सभी चुनौतियों का दृढ़तापूर्वक समाधान प्रस्तुत किया। डॉ राधिका को उनकी इस उपलब्धि पर संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट ने बधाई दी।

संगठन में हिंदी माह का आयोजन

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में पूरे सितंबर, 2024 माह के दौरान हिंदी माह मनाया गया है। इस अवधि में संयंत्र के मुख्यालय एवं क्षेत्रीय व शाखा बिक्री कार्यालयों के कर्मचारियों तथा परित: क्षेत्रों के स्कूली बच्चों के लिए विविध प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनका विवरण निम्नवत है।

हिंदी कार्यान्वयन दिवस

03 सितंबर को एल एम एम एम, एम एम एस एम व डब्ल्यू आर एम-1 विभागों के लिए डब्ल्यू आर एम-1 में एवं 17 सितंबर, 2024 को एस टी एम, एस वी एम व डब्ल्यू आर एम-2 के लिए एस टी एम विभाग में हिंदी कार्यान्वयन दिवस मनाया किया गया। इस अवसर पर उन विभागों के कर्मियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, ई-ऑफीस में हिंदी और ई-अनुवाद पर प्रस्तुतीकरण दिया गया। तत्पश्चात सुंदर लिखावट और शब्दजाल प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। इस अवसर पर संबद्ध विभागाध्यक्षों ने भी कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम में 38 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

स्कूली बच्चों के लिए प्रतियोगिताएँ आयोजित

उक्कुनगरम के स्कूली बच्चों के लिए 10 सितंबर, 2024 को नाटक प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें 7 विद्यालयों के 69 बच्चों ने ऐतिहासिक, समसामयिक विषयों पर नाट्य मंचन प्रस्तुत किया। मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री जी गाँधी ने सभी प्रतिभागी बच्चों को ज्ञापिका और प्रमाण पत्र प्रस्तुत किये।

उक्कुनगरम के परित: जिलापरिषद स्कूलों के बच्चों के लिए 11 सितंबर, 2024 को अगनंपूडि के जिला परिषद हाई स्कूल में कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इसमें 8 सरकारी स्कूलों से कनिष्ठ श्रेणी, अर्थात छठवीं से आठवीं कक्षा तक के 30 और वरिष्ठ श्रेणी, अर्थात नौवीं से दसवीं कक्षा तक के 31 छात्रों ने भाग लिया।

जिला परिषद स्कूलों के बच्चों के लिए 'जीवन में खेलों क महत्व' विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसके लिए कनिष्ठ और वरिष्ठ दोनों श्रेणियों में क्रमश: 27 और 27 बच्चों से प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई।

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के संदेश का विमोचन

14 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस के अवसर पर अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के संदेश का निदेशक (वाणिज्य) श्री जी वी एन प्रसाद द्वारा विमोचन किया गया। इस उपलक्ष्य में, सभी कर्मियों को अपने कार्यालयीन कार्य में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की सलाह दी गयी।

कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

12 और 13 सितंबर, 2024 को मुख्यालय स्थित अधिगम व विकास केंद्र में कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने हेतु दो यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें संयंत्र के विविध विभागों के कुल 44 कर्मियों ने भाग लिया। इस दो सत्रों में कर्मियों को यूनिकोड के माध्यम से एम एस वर्ड में हिंदी टंकण का प्रशिक्षण दिया गया।

क्षेत्रीय एवं शाखा बिक्री कार्यालयों में हिंदी कार्यक्रम आयोजित

14 सितंबर, **2024** को सभी क्षेत्रीय एवं शाखा बिक्री कार्यालयों में अध्यक्ष महोदय के संदेश का पठन किया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर सभी शाखाओं के कर्मियों के लिए ऑनलाइन के माध्यम से हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। महाप्रबंधक (राजभाषा एवं आतिथ्य) डॉ ललन कुमार ने प्रतिभागियों को संसदीय राजभाषा समिति की अद्यतन प्रश्नावली में संशोधनों पर संक्षिप्त विवरण दिया। तत्पश्चात प्रतिभागियों के लिए शब्दजाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें चेन्नई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय (दक्षिण), मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय (पश्चिम), अहमदाबाद, फरीदाबाद, हैदराबाद, जयपुर, नागपुर, भुवनेश्वर आदि शाखाओं के **35** कर्मियों ने भाग लिया।

कर्मचारियों व समन्वयकों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित

संगठन के कर्मियों के लिए 'वी एस पी को टर्न एराउंड करने के विविध उपाय' विषय पर हिंदी निबंध-लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसके लिए विविध विभागों से कुल **12** कर्मियों की प्रविष्टियाँ ई-मेल और वॉट्सॉप के माध्यम से प्राप्त की गई।

23 सितंबर, **2024** को मुख्यालय के विविध विभागों तथा अनुभागों में कार्यरत हिंदी समन्वयकों के लिए कार्यपालक निदेशक के सम्मेलन कक्ष में विशेष समन्वयक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर राजभाषा नीति के संवैधानिक पहलुओं पर प्रस्तुतीकरण दिया गया। तत्पश्चात प्रतिभागियों के लिए सुंदर लिखावट, राजभाषा प्रश्नोत्तरी तथा शब्दजाल प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। इस सम्मेलन में कुल **19** हिंदी समन्वयकों ने भाग लिया।

25 सितंबर, **2024** को मुख्यालय के कर्मियों के लिए प्रबंधन विकास केंद्र के नागार्जुन हॉल में अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में संयंत्र के विविध विभागों से कुल **8** टीमों में **44** कर्मियों ने भाग लिया। संयंत्र के वरिष्ठ कर्मचारी इस प्रतियोगिता के न्यायनिर्णेताओं के रूप में उपस्थित थे।

हिंदी माह का समापन समारोह आयोजित

30 सितंबर, **2024** को प्रबंधन विकास केंद्र के नागार्जुन हॉल में हिंदी माह समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। नाटक प्रतियोगिता में विजेता विद्यालयों के प्राचार्यों और अध्यापक सहित प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारी और बच्चे उपस्थित थे। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में निदेशक (कार्मिक) डॉ सुरेश चंद्र पाण्डेय उपस्थित थे। उन्होंने सभी विजेताओं को बधाई दी। साथ ही आर आई एन एल में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। उन्होंने अपने संदेश में कर्मचारियों को अपने कार्यालयीन कार्य में यथासंभव सरल हिंदी के अधिकतम प्रयोग की सलाह दी। तदुपरांत मुख्य अतिथि और महाप्रबंधक (राजभाषा व आतिथ्य) के करकमलों से विजेताओं को शील्ड, पुरस्कार व प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह समाप्त हुआ।

दो सौ तिरसठ गाँव

- सुश्री रजनी शर्मा बस्तरिया -

'जो री झट के!' (चलो री जल्दी!) भुंईली ने जल्दी-जल्दी अपने कदम बढ़ाये। पहाड़ पर चढ़ना जितना कठिन होता है, उतना ही कठिन उतरना भी! गप्पा (टोकनी) में जंगली वनोपज, लाहुन-लाहुन (नरम-नरम) पत्तियाँ, पतरी, चार, गोंद, महुआ और न जाने क्या-क्या? सर्दियाँ शुरू होते ही जंगल से वापस घर जल्दी लौटना होता था। 'भुंईली' यथा नाम तथा गुण। अपने ही तासीर से फलने-फूलने वाली, अपने ही शर्तो पर जीने वाली। पुष्ट, कसा शरीर, घुटनों के ऊपर बंधी बरकी (साड़ी), नाक, ठुड्डी बाँहों, माथे पर गोदने के टप्पे। यही आदिवासियों का सबसे सहज, दीर्घ, श्रृंगार रहा है।

भुंईली की जुबान प्रतिउत्तर में और तेज हो जाती थी। आग बसती थी उसकी जिह्वा में। अपने काम से काम और किसी ने उलझने की कोशिश की तो बन जाती थी वह 'अग्निमुखा'। पूरा गाँव सुबह से निकल पड़ता था, समतल जमीन की तलाश में। आखिर एकत्र किये गये बीजों को छिड़कना जो होता है। यह गाँव भी मौसम की गिलौरी मुँह में दबा कर रखता है। नब्बे से एक सौ बीस दिनों में बदलते मौसमों को अपनी आटी में खोंच कर जाने यह क्यों ठीहा, बसेरा बदलता रहता है।

अंगुरी ढेंटा 'रागी' के फूल। अहा! किसी बस्तर बाला की नाजुक उँगलियों-सी, अपने पोर-पोर में दाने समेटे हुए। हल्की सी बयार चली नहीं कि लोर गई, झुकी बालियाँ लरज जाती थीं और बदले में बीजों को झरा कर अपनी, देहाती निश्चल, लापरवाह सी बस्तरिया हँसी बिखेर देती थी। इन दिनों के बाद क्वार-कार्तिक तक 'कुटकी' की बुवाई और फिर जब जेठ अपना जेठिया तेवर दिखाता तो तपती दोपहरी में 'तीखुर' काटकर उसका तरल बनाकर यह गाँव गटक लेता था। 'मड़िया पेज' में तो उनकी जान बसती थी। एक मुट्ठी है आनाज गंज भर पानी में खौला कर पकाते, फिर मड़िया का पाउडर डालकर बना लिया 'पेज।' तुमा में रख गाँव के आदिवासी जंगल की ओर जाते। फसल काटने के बाद भात और पेज की पंगत...। बरसों से उनके बीज सहेज कर एक पीढ़ी आने वाली दूसरी पीढ़ी को देती आ रही थी। इनके बोने और काटने के बीच इन खेतों में जहाँ हल नहीं चलाई जाती, वहाँ न जाने कितने किस्से, कहानियाँ इन गाँवों में उगते, परवान चढ़ते और किंवदती बन जाते। जहाँ बस्तर के सालवन इन्हें अपने अंतस में सहेजे एक ऋतु से दूसरी ऋतु का हाथ पकड़े आगे बढ़ते जाते।

शांत, बिना किसी प्रसव पीड़ा के वसुधा भी इन श्रीअन्नों को जन्म देती रही है। जाने कौन सा अक्षत वरदान इन गाँवों को मिला हुआ था, इसलिए ये श्रीअन्न के अलावा कुछ चाहते भी नहीं थे। हँसते-हँसते जंगल जो कुछ भी इन्हें फकीर की तरह स्वेच्छा से दे दे, ये बड़े विनम्र भाव से अपने ओली में ले लेते थे। चाहे वह कंगनी, कोदो, कुटकी, रागी, तिखूर, बाजरा, मड़िया, ज्वार, चना, बाथरी हो या फिर छाल, गोंद, पत्ते, सल्फी, चापड़ा (चिंटियाँ) ही क्यों न हो। जिनसे लिया है, उन्हें बिना कष्ट पहुँचाये अपनी यायावरी जीवन जीते आये थे। ऐसे थे ये गाँव...। इन कोदो-कुटकी से इनका जीवन यापन मजे से होता आया था। रही बात नोन (नमक) की तो, वह साप्ताहिक हाट में वनोपज के बदले में मिल जाया करता था। साप्ताहिक हाट तो बस्तर के जनमानस की प्राणदायिनी इंद्रावती ही थी।

गोंदली ने भुंईली को पुकारा - 'ऐ बाटे आसा री...! (इधर आओ)।' 'काय होली (क्या हुआ)?' 'कांही नही! (कुछ नहीं)।' साप्ताहिक हाट में रंग-बिरंगे फीते, दर्पण, बजरिया पान को देखकर वह खुशी से किलक उठी। साथ ही पास की गुमटी में प्लास्टिक की रंग-बिरंगी चूड़ियाँ भी बिक रही थीं। अचानक बाजू से आवाज आई - 'यह अच्छा लगेगा।' जब वह पीछे पलटी तो आवाज वाला गायब...। लड़कों की टोली पास से गुजर रही थी। भुंईली और उसकी सहेलियों ने उचटती नजरों से उनकी ओर देखा और चल पड़ीं अपनी राह...।

यह गाँव 'बाहपानी' बिल्कुल पहाड़ों की गोद में बैठा हुआ गाँव। अपनी ही 'फकीरी राग' गाता हुआ गाँव। आस-पास के गाँवों का नाम तेलियापानी, बांसाटोला। हर गाँव अपनी कहानी खुद कहता हुआ। गाँव का नाम 'बाहपानी' जरूर था, पर पानी के लिए भुंईली जैसे अनेक लेकियों (कन्याओं), बायले (स्त्रियों) को मीलों चलना पड़ता था। पहाड़ पर बूढ़ा-देव के मंदिर पर भी जल चढ़ाने के बाद ही आस-पास के दस गाँव मिलकर मेले का आयोजन करते थे। मेले में सबसे कीमती चीज पानी ही हुआ करता था। शायद इसी कारण जल चढ़ाने की प्रथा रही होगी। आखिर देव भी तो परीक्षा लेते हैं कि आप अपनी सबसे कीमती चीज को न्यौछावर कैसे करते हैं?

सारा का सारा गाँव 'अहलि' (बिना हल के) ही था। हल की जरूरत उन्हें पड़ती ही नहीं थी। या यूँ कहिए कि हल का प्रयोग उन्होंने कभी किया ही नही। भुंई (धरती) पर हल चलाने से उसे तकलीफ होती है, बस उन्हें इतना ही मालूम था। यह सालद्वीप भी अपनी संतानों के पदचाप को पहचानता है,

उनकी रग-रग में बहता है, उनकी धड़कनों को सुनता है, उनकी परवाजों को आसमान देता है, उनके सपनों को अपनी टहनियों पर अरझा कर रखता है। तो भला ये आदिवासी सालवन के धड़कनों का मर्म नहीं समझेंगे क्या? कब यह हँसता है, कब यह पंडकी चिरई के राग में राग मिलाता है, कब उदास होता है? तो क्या इसकी संतानें नहीं समझेंगी बस्तर के प्रस्तर, खोह, कंदरा, पहाड़ और वसुधा की पीड़ा को? और फिर इस भूमि, इस धरती की बात हो तो इसकी पीड़ा से अनभिज्ञ, निर्लिप्त बस्तर कैसे रह सकता है? उसका महत्व तो जनजातियों में इतना है कि वे सबसे बड़ी कसम 'माटी कीरिया' (मिट्टी की कसम) को ही मानते हैं, जो सदियों से इनको अपनी छाती में पनाह दिए हुए हैं। इन गाँवों के लिए सदियों से यह भुंई ही उनका मान, सम्मान, स्वाभिमान, पहचान और उनके अस्तित्व तथा अनश्वरता का प्रतीक है।

सालद्वीप बस्तर की छाती में अनेकों वनोपज उपजते हैं और वसुधा उन्हें बड़े ऊछाह से अपनी छाती में थपकियाँ देती है। चाहे वह कोदो, कुटकी, रागी, कंगनी, बाथरी, ज्वार, मड़िया, तीखुर, रागी, फुटु हो या फिर बोड़ा (जंगली कंद)। चमकती सुनहरी धूप जब इनकी झिलमिल बारिश वाली चुनर हटाती है तो सरई पेड़ मुँह दिखाई में बोड़ा जैसे नायाब रत्न दिया करते हैं। सच है सालद्वीप 'रत्नगर्भा' ही है।

इन गाँवों के लोग कोदो, कुटकी के बीज छिड़कने जंगल-जंगल फिरते हैं। भुंईली को अल्पायु में ही यह प्रशिक्षण अपने बाबा से मिला था। जब उसके बाबा आगे-आगे चलते थे, तो एक पतली छड़ी उनके हाथों में होती, जिसके सिरे के आखिरी हिस्से को भुंईली कस कर पकड़ी रहती थी कि कहीं वह खो न जाये। जंगल की समतल जगह का चयन करके फिर माटी को प्रणाम कर 'माटी किरिया', कसम खा कर सूखे बीज धरती पर छिड़क दिये जाते थे। भुंईली अब इस काम में सिद्धहस्त हो चुकी थी।

अगली सुबह जब वह जंगल गई तो भूली बिसरी सी पर कभी, कहीं सुनी सी आवाज उसे सुनाई दी, 'कोन गांव चो आसीस लेकी?' (कौन से गाँव की हो तुम लड़की?) भुंईली तो थी ही अग्निमुखा, तड़ से पलट कर जवाब दिया 'तुझे क्या?' 'ऐसे ही, मैं बाँसाटोला गाँव का हूँ', उसने कहा। 'मैं बाहपानी की' न चाहते हुए भी न जाने उत्तर कैसे उसके मुँह से निकल गया। उसकी जुबान, दिल, दिमाग में खींचा-तानी चल रही थी। जुबान दिल की बात मान रही थी दिमाग की नहीं।

'यहाँ एक अच्छी जगह है, चलोगी?' भुंईली न चाहते हुए भी जगह को देखने के लिए सहमत हो गई। जाने सालद्वीप बस्तर के एक-एक हिस्से को देखने की कैसी प्यास बस्तर के आदिवासियों के मन में रहती है। वे उसमें पारंगत भी होते हैं। ईश्वर ने स्त्री को छठी इंद्री भी दी है, जिससे वह एक पल के हजारवें हिस्से से भी कम समय में भाँप लेती है कि अमुक व्यक्ति की मंशा कैसी है?

निश्छल भाव से पगा आमंत्रण उसने स्वीकार किया और अगले ही दिन बाबा को किलक कर बताने लगी कि उसे एक नई जगह का पता चल गया है। जहाँ वह कोदो, कुटकी के बीज छिड़क कर आयेगी और इस बार फसल अच्छी होगी। बाबा भी प्रसन्न दिखे। अब बूढ़ी टाँगें भी जवाब दे रही थीं । 'समय रहते तेरा का लगिन हो जाए तो बूढ़ादेव पर महुआ के फल और सल्फी चढ़ायेंगे। तेरा बिहाव करना है।' बाबा ने कहा। 'क्या हो गया है आपको?' भुंईली ने आँखें तरेर कर कहा। बाबा की आँखों में पानी भर आया।

भुंईली छोटी थी, तभी उसकी आया (माँ) कहीं चली गई थी। यह उसने सुना था, पर जब समझने लायक मति हुई, तब समझी कि माँ ने 'उधारिया' विवाह किया था। बाबा को छोड़कर किसी शहरिया से विवाह किया था। माँ पर एक लोटा गरम पानी डाल कर पवित्र किया गया, फिर पुराने पति के सामने खपरैल पर महुआ के फूल और धागा बाँध कर फिर उसे तोड़ा गया। अब पूर्व पति से संबंध खत्म। पर सच में ऐसा हुआ क्या? इसके बाद बाबा गुमसुम से रहने लगे थे।

अगले माह ही उसकी बाल-सखी 'कनेर' का लगिन होना था। कनेर के गालों के अनार दहकने लगे थे। 'तेलियापानी गाँव का मुनुख है' यह बताते लजा उठी थी कनेर। भुंईली को बीच-बीच में मौसमों के संदेशे आते, पत्ते हरकारा बन कर टेर लगाते। 'आओ भुंईली देखो तुम्हारे कोदो, कुटकी, रागी उपज गये हैं, आ जाओ! मौसम के पंचांग में अपनी पढ़ाई यानी कि कोदो-कुटकी की फसल उगाने के हुनर का परिणाम देख लो! पास हुई या फेल? सालवन बस्तर का जंगल जीवन की प्रतिष्ठित पाठशाला है। जहाँ अपने अनुभव से, अपनी जिजीविषा से सभी को परीक्षा देनी होती है। और यही जंगल उनके पास-फेल का ऐलान करता है। आदिवासी बनना, आदिवासी तेवर रखना और आदिवासी होने पर गर्व करना, क्या इतना आसान है? प्रशिक्षण, कठिन पढ़ाई, प्रतिक्षण... परीक्षा, मौसम का मिजाज, पहाड़ों की नब्ज, नदियों की तरलता, खाइयों की गहराई सब मापना आना चाहिए। तब जाकर यह कुदरत अपनी अनमोल उपज, जिसे आज दुनिया मिलेट मानकर पगलाई हुई है, उसे अपने नैसर्गिक संतानों को देती है। इन अनमोल उपजों पर सर्वप्रथम अधिकार इन आदिवासियों का ही है।

आज रात को गाँव में नाट परब, करमा नृत्य की टोली आई थी। बैगा, सिरहा पूरी टोली का सत्कार, सम्मान करने आ गये थे। स्वर लहरियाँ बस्तर की जंगलों में माँदर की थाप के साथ गूँजने लगीं थीं। गीत... नर्तक दलों के होठों से झरने लगे

थे... करमा लहकी/तेज डारे बाई सुरता ला तेज डारे/अंगरी के मूंदरी रुन-झुन बाजे.../तेज डारे सुरता/परान ला तेज डारे... (जब-जब तेरी याद आती है, पैरों की पायल, उँगली की अंगूठियाँ झनझना उठती हैं, बातें करने लगती हैं।) टोली में लड़के-लड़कियों ने अपनी स्थिति बदली। कमर में एक दूसरे के हाथों से एक साथ आरोह-अवरोह...।

अचानक जाना पहचाना सा स्पर्श! भुंईली ने महसूस किया 'जोंधरा' बाजू में नृत्य-साथी के रूप में आ चुका था। नेह की ताल पर मन में उमंग-पूरी रात नृत्य... जीवन नृत्य।

झूरा-झूरी पान मांगे जाय/कैसे सोसी पड़े/पान मंगावत सीता गगरी खवाये/अंगना में बैठकी मन में बिचारए/कैसे सांसी पड़े.../कौन तोरे लानय कारे पान सिरैपान/कौन तोरे लाने बीड़ा पान/कैसे सोसी पड़े...। (मन तो कर रहा है तेरे लिए खूब सारे पान के पत्ते लाऊँ, पर पान माँगते ही गाली खाती हूँ और मन भी नहीं मान रहा है। कैसे चैन पड़े?)

मन लहक-लहक जा रहा था, चाँदनी झर रही थी और झर रहा था निश्छल देहाती नेह...। पर नृत्य की टोली में दो जने कम दिखे 'कनेर और आयतू'। कनेर ने जाते-जाते भुंईली की कमर में रुमाल खोंच दिया था। यह संदेश था 'मैं जा रही हूँ।' भुंईली दौड़ते-दौड़ते कनेर के घर गई। यह रुमाल दे गई है कनेर। कनेर के द्वारा दिये गये रुमाल को देखकर सन्नाटा सा पसर गया घर में।

घर में बैठक हुई। आदिवासी समाज में लड़कियों की इच्छा को पर्याप्त सम्मान दिया जाता रहा है। बाजे-गाजे के साथ कनेर व आयतू को लाया गया। 'पैठुल' (विवाह) होगा अब। आम, सरईपाना, जंगली हल्दी की गाँठें, सल्फी, कुकरी, लांदा, बोबो लाया गया। आयतू के विवाह में बिमला गीत गाया जा रहा था। सल्फी परोसी गई। कनेर बस्तर के पारंपरिक अलंकारों ठिसकी, लाह्दा, पिछौरी, मुंदरी पाटा, बांहटी, नागमोहरी में सज चुकी थी। आयतू सलूखा, काली जैकेट पहने हुए था। सारे बाराती-घराती भुंईया में बैठ गये थे। गाँव के एक रसूखदार को एक बोतल मुगदम (शराब) दी गई।

आवाज आई 'अब मैं गाँव का मुखिया बन गया हूँ, सारी लड़कियाँ अब मेरी ही संतान होंगी।' सिर्फ घोषणा? मुखिया की मद्य से पगी आँखें भुंईली पर जाकर अटक गई थीं। भुंईली सकपका गई। गाँव का मुखिया बनते ही लंपटता हावी...? 'गाँव की सारी लेकियाँ मेरी संतान होंगी।' इस फर्जी उद्घोषणा का क्या?

वह मुखिया अब रोज-रोज बाबा के पास आकर जाने क्या-क्या गिटिर-पिटिर करता रहता था। वह अब गाँव के लोगों से कहने लगा - 'इस कोदो-कुटकी में भला क्या रखा है? नई तकनीक मैं शहर से सीख कर आया हूँ, हल, नागर से खेती किया करो अब। 'हाँय' पूरे गाँव का मुँह खुला का खुला रह गया। मुखिया जब इस तरह के ज्ञान का बखान तेतर रुख, (इमली के पेड़) के नीचे किया करता था। गाँव के लोग बगलें झाँकने लगते थे। 'मैं, शहर से बीज लाऊँगा, इससे उपजी फसल को शहर में बेचने से अच्छी आमदनी होगी।' यह कहते- कहते वह लंपट पूरे गाँव की भोली - भाली, निश्छल, सहज, सरल नैसर्गिक मति को अपने लालच की मथनी से मथ डालता था। भुंईली को तो खासकर... आखिर कोदो-कुटकी जैसी फसलों की उपज का शानदार ज्ञान तो विरासत में जो मिला था।

भुंईली को ऐसा लगा, मानो उसकी देह पर कोई कुदृष्टि का हल चला रहा हो। सिर्फ नजरों के हल चलने से इतनी पीड़ा होती है तो फिर लोहे की फल वाली हल से इस धरती को कितनी पीड़ा होती होगी? भुंईली की आँखें भींग गईं। सिरहा, मुग्दम पीते ही वह झूपने लगा, बड़बड़ाने लगा, भुंईली के जाऊन पड़े दे। शहर गेले देवता मानेदे (भुंईली को जाना पड़ेगा। उसके शहर जाने से ही देवता खुश होंगे। काली मुर्गी लाओ! सिरहा समझ चुका था कि इस आदिवासी कन्या को जबरिया तो हासिल नहीं किया जा सकता है तो क्यों न देवता के दंड का भय दिखाकर इस भोले गाँव की मति को फेर दिया जाए।

भुंईली भौंचक थी, यह क्या है? उसे शहर क्यों जाना होगा? भुंईली रुँआसी हो गई। सारा दंड मंजूर है, पर शहर जाना उसके लिए जीते जी मरने के समान था। कोई ऐसी सजा देता है क्या? गाँव में जब सजा मिलती है तो गाँव में ही उसे सजा का निपटाना होता है।

क्या अपने बस्तर में रहना गुनाह है, कोदो-कुटकी की उपज की जानकारी, अपनी मिट्टी की जानकारी होना क्या गुनाह है? भुंईली को विरासत से मिला ज्ञान अब उस सिरहा के लिए एक अकूत खजाने की तरह था और भुंईली उसके लिए एक स्वर्ण रत्न उगलने वाली भंडार बन सकती थी। वह नैसर्गिक ज्ञान को शहरिया रैपर में लपेटकर बेचना चाह रहा था। वह बार-बार भुंईली पर दबाव बनाये जा रहा था। शहर चल, शहर चल...।

भुंईली के इनकार पर उसने एक निकृष्ट षड़यंत्र रचा। वह जोर-जोर से चीखने लगा... 'आखिर इस गाँव में फसल कम क्यों हो रही है? तुम लोग जानते हो इसका कारण क्या है? तो सुनो - मुझे रात सपने में देव ने बताया है कि कुछ दिनों से कोदो-कुटकी का उत्पादन घटा है। जमीन का व्रत तभी टूटेगा जब 'घमंडी लेकी' शहर जायेगी और कोदो-कुटकी का उन्नत बीज लाकर प्रायश्चित्त करेगी। तभी इस गाँव का दोष कटेगा।' पूरा गाँव जानता था कि सालद्वीप से शहर की ओर जाना, अपने आप में काले पानी की सजा से भी बदतर सजा है।

भीड़ चिल्लाई - 'किसके साथ जायेगी?' बाबा रोते-रोते, थरथराई आँखों से कहने लगे - 'लेकी कभी शहर नहीं गई है, किसके साथ जाएगी?' वह भी अच्छी तरह से जानते थे कि अब भुंईली अकेले दंड नहीं भोगेगी, बल्कि उसके बुढ़ापे को भी नरक बना दिया जाएगा, इस सिरहा के द्वारा। लंपट सिरहा ने उद्घोषणा की - 'मेरे संग जायेगी।' गाँव की वनोपजों के साथ आज भुंई ली की विदाई हो रही थी। भुंईली सुन्न, यह कैसा फरमान है, कोई विरोध क्यूँ नहीं कर रहा है? 'हे आंगा देव!' भुंईली सिसक उठी।

आखिरकार वह घड़ी भी आ गई। जब वनोपजों के साथ अपने देहातीपन को तिलांजलि देकर भुंईली शहर जा रही थी। शहर में चमचमाती सड़कें, चिल्ल-पों, मोटर-गाड़ी की शोर-शराबों के बीच शहर की दूकान के सामने वनोपजों की बोरियाँ पटक दी गई। वाह... बाईस किस्म के मिलेट क्या बात है? सिरहा घचपचाई हँसी के साथ दाँत दिखा रहा था। बोरियों के साथ भुंईली के शरीर के गोश्त की भी नुमाइश हो रही थी। बाद में दबड़े नुमा कमरे में भुंईली को छोड़कर सिरहा गायब, जाने कौन सा षड़यंत्र करने वह गया था? रात में भुंईली की नींद जरा सी लगी। सपनों में ही वह घबराकर जाग उठी। भुंईली लगभग चीख पड़ी। सपने में उसने देखा बस्तर की भुंई बेहद अस्त-व्यस्त है। उसका सारा शरीर लहूलुहान... भुंईली पसीने से भींग गई। अगली सुबह भुंईली गायब। सिरहा उसे बदहवास ढूँढ़ रहा था। उसे पूरा यकीन था कि पहली बार गाँव से निकली भुंईली अकेले शहर से वापस जा ही नहीं सकती। वह भी एक ही रात में।

वह भुंईली को खोजने वापस गाँव की ओर भागा। अरे, जिस शहर पर उसे इतना घमंड था, वही शहर उसे कच्चा ही निगल जाएगा, क्योंकि उसने पेशगी ले रखी थी, गाँव की वनोपज को अधिक दाम में शहर में बेचने की। जैसे ही उसने गाँव में प्रवेश करना चाहा, अपने चेले-चपाटियों, शहरियों के साथ, पूरा **263** गाँव हाथ में तीर कमान लिए खड़ा दिखा। रात में ही किसी ने तुरही से संदेश दे दिया था।

अब तो पारी थी मरने या मारने की। अपनी भूमि के ऊपर हो रहे अत्याचार को रोकने, अपने अस्तित्व बचाने का। यह अहलि गाँवों का निर्णय था, सामूहिक निर्णय। आखिर **263** गाँव कौन से थे? इन **263** गाँवों में कभी भी हल नहीं चला। इन्हें अपनी माँ के समान जमीन की छाती, जिस पर हल चलाने से वसुधा को बहुत ही मर्मांतक पीड़ा होती है, बस इतना ही ज्ञान था। इससे ज्यादा न वह कुछ सीखना चाहते थे, न पढ़ना चाहते थे। ये वही अहलि गाँव थे, जहाँ हल चलाना सदियों से वर्जित था। गाँवों ने पिछली रात में ही किसी के रोने की आवाज, आर्तनाद सुना था। पता नहीं, यह कौन रो रहा था? बस्तर की वसुधा कि साक्षात भुंईली! जाने वह क्या कह रही थी? भुंईली कहीं नहीं दिखी। गाँव से शहर आते वक्त बोरियों के छेद से निकल कर कोदो-कुटकी ने भुंईली को शहर से गाँव की ओर वापसी का रास्ता दिखाया, यह रास्ता जंगल में जाकर कहीं खो गया...?

गाँव के गाँव लामबंद हो गये थे। रात में ही उन्हें भुंईली के आर्तनाद ने सकपका दिया था। बस..., नहीं, कभी नहीं, नहीं चाहिए। धरती पर हल नहीं चाहिए, ना ही कोई नई फसल। सदियों से पहाड़ जस के तस खड़े हैं। इनकी जड़ें जहाँ हैं, वहीं पर ये सारे गाँव कोदो-कुटकी उगाते हैं। मानो ये अहलि बीजों का आचमन कर पहाड़ों को अर्घ्य देते हैं और यह अर्घ्य सीधे पहाड़ों तक जा पहुँचता है। यह पहाड़ भी जानता है कि सालवन उसकी नींव को कभी ध्वस्त नहीं करते, पहाड़ों के तल पर वसुधा पर आघात याने कि पहाड़ों के भीतर मौन का टूट जाना।

सदियाँ बीत गई। अब उन **263** गाँवों में कभी भी हल नहीं चला और अहलि भुंई में उगती है बस्तर की कोदो-कुटकी की सरसराती फसलें। कहते हैं भुंईली ही बीज बन कर, बगर कर उगती है आज भी इन्हीं बस्तर के जंगलों में...।

- 116, सोनिया कुंज
सामने देशबंधु प्रेस, नगर निगम कॉलोनी
रायपुर, छत्तीसगढ़-**4920001**
मोबाइल नंबर: **9301836811**

कोकिंग कोयला संकट की स्थिति में कोक ओवेन बैटरियों का प्रचालन

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के कोक ओवेन व कोयला रसायन संयंत्र में 7 मीटर ऊँचाई, 16 मीटर लंबाई एवं 0.4 मीटर चौड़ाई तथा 67 ओवेन्स वाली कुल 5 कोक ओवेन बैटरियाँ हैं। इनमें से कोक ओवेन बैटरी संख्या 1, 2 व 3 पिछले तीन दशकों से भी अधिक समय से प्रचालित हैं और ये देश में सबसे समय से प्रचालित होने वाली बैटरियाँ हैं। कोक ओवेन बैटरी-4 एवं 5 का क्रमश: पिछले 15 एवं 3 वर्षो से प्रचालनरत हैं।

इन कोक ओवेन बैटरियों में कार्बनीकरण हेतु प्रत्येक ओवेन में लगभग 31.6 टन मिश्रित एवं चूर्णित शुष्क कोकिंग कोयले का प्रभरण किया जाता है। इन ओवेनों में कोकिंग कोयले को कोक में परिवर्तित करने हेतु उसे वायुरहित परिस्थिति में गरम किया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान कोयले में मौजूदा उड़नशील पदार्थ अपरिष्कृत कोक ओवेन गैस में परिवर्तित हो जाते हैं, जिसका परिष्करण पश्चात कोक ओवेनों तथा संयंत्र की अन्य भट्ठियों में ईंधन गैस के रूप में उपयोग किया जाता है।

दरअसल कोक ओवेन बैटरियों से निकलने वाली गैस बहुत ही जहरीली एवं ज्वलनशील होती है। दोनों ही कारणों से इस पर नियंत्रण एवं उपयोग बहुत जरूरी हो जाता है। अत: इसके लिए बेहद सटीक तकनीक का उपयोग करके इसे साफ एवं शीतल किया जाता है एवं तत्पश्चात इसका उपयोग ईंधन गैस के रूप में उपयोग किया जाता है।

कोक ओवेन बैटरी के सुरक्षित एवं दीर्घकाल तक प्रचालन क्षमता को सुनिश्चित करने हेतु उसके स्थिर प्रचालन तथा बेहतर प्रौद्योगिकी अनुरक्षण अनिवार्य हैं। लेकिन पिछले ढाई वर्षो से कोयला मिश्रण में लगातार परिवर्तन, अस्थिर प्रचालन, दीर्घकाल से प्रचालित रहने के कारण उत्पन्न समस्याओं एवं उनके निदान हेतु की जा रही मरम्मतों के कारण संगठन की 5 में से 4 कोक ओवेन बैटरियों के प्रचालन में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

कोकिंग कोयला संकट

अप्रैल 2024 के दौरान अडानी गंगावरम पोर्ट लिमिटेड (ए जी पी एल) में हड़ताल के कारण आर आई एन एल के लिए कोकिंग कोयले की आपूर्ति अचानक रोक दी गई, जिससे आर आई एन एल की कोक ओवेन बैटरियों के लिए संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई। कोक ओवेन बैटरियों में रिफ्रैक्टरी के के रूप में सिलिका ब्रिक लगे होते हैं जिन्हें लगातार गरम करते रहने की आवश्यकता होती है और इसके लिए रिफ्रैक्टरी के संयोजन हेतु सिलिका ब्रिकों का तापमान 870 डिग्री सेंटिग्रेड से कम नहीं होना चाहिए। कोक ओवेन गैस को कोक ओवेन बैटरी-1, 2, 3 व 5 में तापन (ईंधन) गैस के रूप में उपयोग किया जाता हे और कोक ओवेन गैस व धमन भट्ठी गैस (बी एफ जी) के मिश्रित गैस को बैटरी-4 में उपयोग किया जाता है। अत: कोक ओवेन गैस के उत्पादन एवं बैटरी को गरम रखने के लिए कोकिंग कोयले की सतत आपूर्ति नितांत आवश्यक है। लेकिन कोयले की आपूर्ति के संकट ने कोक ओवेन बैटेरियों के प्रचालन को संकट में डाल दिया था।

इसके पहले जब कभी कोयले की मात्रा कम होती थी, तो बैटरी के सुरक्षित प्रचालन हेतु प्रत्येक बैटरी के लिए प्रति घंटे दो पुशिंग को ओवेनों के न्यूनतम स्वीकार्य पुशिंग माना गया। हालाँकि, 12 अप्रैल 2024 से कोकिंग कोयले के बाधित प्रेषण एवं सी एच पी में कोकिंग कोयले की बहुत ही कम मात्रा (11334 टन आई सी सी व 2800 टन एम सी सी) के कारण यह निर्णय लिया गया कि ओवेन पुशिंग 1 से 1.5 प्रति घंटे तक बनाये रखें। इस प्रकार कुल ओवेन पुशिंग 140 प्रति दिन तक सीमित कर दिया। उपलब्ध कोकिंग कोयले की खपत करने एवं कोक ओवेन बैटरी की तापन प्रक्रिया को बनाये रखने तथा सिलिका रिफ्रैक्टरी को खराब होने से बचाने हेतु यह निर्णय लिया गया था।

इसके पहले कोक ओवेन बैटरियों में कभी पुशिंग इतने कम नहीं किये गये। अत: विदेशी विशेषज्ञ एवं संयंत्र में कोक ओवेन प्रचालन एवं भारी मरम्मत समूह से जुड़े सदस्यों से गठित समिति द्वारा इस स्थिति के संभाव्य खतरों का आकलन किया गया और अपेक्षित कार्यकारी योजना बनाकर उसका कार्यान्वयन किया गया। जैसे -

- कोक ओवेन के प्रचालन एवं एच व आर से संबंधित सभी अधिकारियों एवं वरिष्ठ फोरमैनों को बैटरी प्रचालन मापदंडों की बारीकी से समीक्षा तथा हीटिंग वाल्स के जी सी एम प्रेशर व फ्लू टेंपरेचर के अनुश्रवण हेतु तैनात किया गया।
- गुणवत्ता आश्वासन व प्रौद्योगिकी विकास के सहयोग से सी ओ जी सैंपलिंग के संयोजन, खासकर ऑक्सीजन की मात्रा के अनुश्रवण एवं विस्फोटक मिश्रण के जमने से बचने हेतु हर दो घंटे के अंतराल पर सी ओ जी सैंपलिंग किया गया।
- सी सी पी की ओर से चौबीसों घंटे एक्जॉस्टर प्रचालन का अनुश्रवण किया गया, ताकि दाव की तीव्रता एवं नेटवर्क में गैस की कमी से बचा जा सके।
- कोकिंग कोयले की आपूर्ति लॉजिस्टिक्स का प्रतिदिन अनुश्रवण किया गया और कोयले की उपलब्धता के दृष्टिगत कोयला मिश्रण समिति की नियमित बैठकों के आयोजन द्वारा कोयला मिश्रण के अनुकूलतम संयोजन के प्रयास किये गये।

समस्याएँ व उनका समाधान

कोक ओवेन बैटरियों में बहुत ही कम पुशिंग स्तर के दौरान उत्पन्न समस्याओं से निपटने हेतु अपनाई गई प्रचालन पद्धतियों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है:

1. ओवेन चैंबर्स में वायु का बहाव:

कोकिंग कोयले की प्रक्रिया की पूर्ति के पश्चात ओवेन चैंबर में वायु के प्रवेश से बचने के लिए जी सी एम के दाब को 23 मिलिमीटर डब्ल्यू सी एवं उससे ऊपर तक बनाये रखा गया। प्रत्येक बैटरी के दो जी सी एम के बीच संतुलन बनाये रखते हुए ओवेन पुशिंग समय निर्धारित किए गए। जी सी एम आउटलेट गैस वॉल्व्स को नियंत्रित किया गया। जहाँ अपेक्षित हो, नाइट्रोजन इंजेक्ट किया गया। ओवेन के द्वारों और उनके फ्रेमों को टाइट करके उनमें वातावरण की हवा प्रवेश न कर सके यह सुनिश्चित किया गया तथा वातावरण की वायु के प्रवेश के सभी संभावित प्वाइंट्स को सेरामिक वूल/रिफ्रैक्टरी मोर्टार से बंद किया गया।

2. जी सी एम में तार एकत्रीकरण

प्रति दिन तार स्तर का नियमित मापन किया गया। जी सी एम के तापमान को एक स्तर पर बनाये रखने एवं तार के निर्बाध बहाव की सुविधा हेतु अमोनिकल लिकर आपूर्ति को कम किया गया। साथ ही अपेक्षित अनुसार वाष्प को प्रेषित किया गया।

3. हीटिंग वाल्स की अंत चिमनियों के तापमान में कमी लाना

ओवेन हीटिंग वाल्स के दोनों ओर की अंत चिमनियों का कम तापमान सिलिका रिफ्रैक्टरी के लिए बहुत बड़ा खतरा है। प्रत्येक हीटिंग वाल के कंट्रोल वर्टिकल्स का तापमान हर पारी में दो बार मापा गया और समय पर सुधारात्मक कार्य किये गये। वाशर के आकार के इष्टतमीकरण के माध्यम से अंत चिमनियों में गैस के बहाव को बढ़ाया गया। प्रत्येक नलिका में बेहतर हेडर दाब को बनाये रखने हेतु हीटिंग गैस का दाब > **70-75** मिलिमीटर डब्ल्यू सी पर रखा गया। तदनुसार सिलेंडर का आकारों का इष्टतमीकरण किया गया।

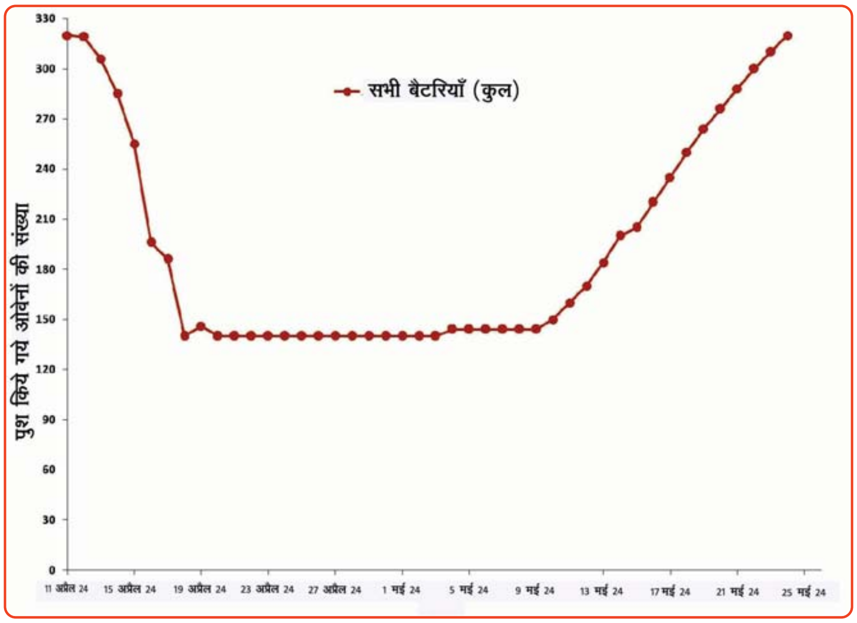

4. हीटिंग वाल रिफ्रैक्टरी का अपकर्षण:

कोकिंग प्रक्रिया की बहुत ही दीर्घावधियों (50-60 घंटे) के कारण शुष्क गनिटिंग जैसे रिफ्रैक्टरियों की नियमित मरम्मतें रोक दी गई। बाहर दिखनेवाले पुराने खराब हिस्सों की मरम्मत नहीं की जा सकी। अत: ऐसे अपकर्षण को कम करने हेतु सीधा प्रभरण, खाँचे में लगाना तथा वायु के बहाव से बचने हेतु रिसाव प्वाइंट्स को बंद करना आदि उपाय किये गये। सभी पारियों के दौरान हीटिंग वाल्स की रिफ्रैक्टरी स्थिति का अनुश्रवण किया गया तथा सुधारात्मक सभी उपाय किये गये।

5. अन्य समस्याएँ:

कोकिंग प्रक्रिया की लंबी अवधि के कारण हीटिंग वाल्स के ग्रेफाइट सील को क्षति पहुँची, जिससे एस पी एम की अत्यधिक मात्रा का उत्सर्जन हुआ। अंत चिमनियों के तापमान में कमी एवं रिफ्रैक्टरी ईंटों की क्षति से कुछ हीटिंग वाल्स में छेद बन गये। दरवाजा बदलना, शुष्क गनिटिंग, चिमनियों की मरम्मत जैसे बैटरी के अनुरक्षण से संबंधित कुछ मरम्मत कार्य किये गये।

सार

निम्न पुशिंग अवधि **41** दिन तक बनी रही, जिसमें **24.05.2024** को पुशिंग दर को कम करने से लेकर **320** ओवेन प्रति दिन तक बढ़ाने से संबंधित गतिविधियाँ भी शामिल हैं। इस अवधि के दौरान **22** दिन तक सभी पाँच बैटरियों का प्रचालन बहुत कम पुशिंग दर पर किया गया, जो राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के कोक ओवन के इतिहास में अप्रत्याशित था। यह कार्य बेहद चुनौतीपूर्ण था और इसके लिए प्रतिबद्ध सामूहिक प्रयास अपेक्षित थे। इसका मुख्य उद्देश्य बैटरी का प्रचालन बंद होने से रोकना था। कोक ओवेन एवं कोयला रसायन संयंत्र समूह के ज्ञान एवं अनुभव से इस लक्ष्य को पूरा करने एवं बैटरी प्रचालन को सुरक्षित बनाये रखने में सहयोग मिला। हालाँकि ऐसी आकस्मिक स्थिति कोक ओवेन बैटरियों, खासकर संगठन की ऐसी बैटरियों, जो पुरानी होती जा रही हैं और जिनका पुनर्निर्माण आवश्यक है, के लिए बिल्कुल अवांछनीय है।

कृतज्ञता

कृतज्ञता दुनिया के सभी धर्मो, सामाजिक आचरणों एवं सांस्कृतिक विचारों के केंद्र में रहा है। भारत और विश्व के कई अन्य देशों की संस्कृतियों में नदी, पहाड़, वृक्ष, सूर्य, चंद्र आदि जैसे प्राकृतिक प्रतीकों की बहु विधि से पूजा-अर्चना सदियों से की जाती है। विशेष रूप से उन लोगों द्वारा प्रकृति पूजा अधिक की जाती है, जिन पर उपभोगवादी प्रवृत्तियों का बहुत प्रभाव नहीं पड़ा है।

इन प्राकृतिक प्रतीकों की पूजा-अर्चना उनके प्रति व्यक्त की जाने वाली कृतज्ञता ही है। क्योंकि इन पूजा-अर्चनाओं की भावनाओं एवं प्रविधियों में कृतज्ञता के भाव छिपे हुए हैं। इससे पता चलता है कि मनुष्य में कृतज्ञता का भाव उसकी संवेदनाओं की उत्पत्ति समय से ही है। धर्मो, संप्रदायों, पंथों आदि की उत्पत्ति के बाद भी सभी के प्रचार-प्रसार की विधियों में ईश-स्तुति का प्रचुर मात्रा में समावेश हुआ और सभी में कृतज्ञता का बोलबाला रहा। मनुष्य ने जब भी अपने आप को असमर्थ पाया, वह ईश्वर की स्तुति करने लगा और जब उसके मनानुकूल परिणाम आये तो उसने कृतज्ञतावश ईश्वर की पूजा-अर्चना की।

सामाजिक एवं व्यावहारिक धरातल पर भी यह अपेक्षा की गई कि यदि कोई किसी की सहायता अथवा सहयोग करता है तो सहायता अथवा सहयोग प्राप्त करने वाले के प्रति कृतज्ञता का भाव उपजता है और इसी भाव को प्रकट करना अथवा व्यक्त करना कृतज्ञता कहलाता है। धर्म निरपेक्षता के दृष्टिकोण से भी कृतज्ञता को मानव व्यवहार एवं परस्पर सौहार्द्र के लिए आवश्यक माना गया है।

प्रसिद्ध आर्थिक ग्रंथ 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' के लेखक एडम स्मिथ ने मानव जीवन में कृतज्ञता के महत्त्व पर काफी कुछ लिखा है। उनका मानना है कि 'समाज के लिए कृतज्ञता आवश्यक है। कृतज्ञता के लिए जब कोई अन्य कानूनी या आर्थिक प्रोत्साहन अनिवार्य नहीं है तो सहायता के पारस्परिक आदान-प्रदान को कृतज्ञता जैसे तत्व ही प्रेरित करते हैं।'

बुद्ध ने भी कृतज्ञता को एक अच्छे मनुष्य के आवश्यक गुणों का अंग माना है और कहा है 'एक महान व्यक्ति दूसरों से प्राप्त उपकारों के प्रति सचेत और आभारी रहता है।' सुप्रसिद्ध रोमन दार्शनिक मार्क्स टुलियस सिसेरो ने कहा है 'कृतज्ञता मनुष्य का न केवल सबसे बड़ा गुण है, बल्कि अन्य सभी गुणों का जनक भी है।' एडम स्मिथ ने कृतज्ञता को 'नैतिक' अथवा 'सामाजिक' प्रभाव में काम करने वाला एक सकारात्मक गुण के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने कृतज्ञता को एक ऐसा नैतिक प्रेरक माना है, जो मनुष्य के अपने आचार-व्यवहार में और अधिक लचीलापन लाने के लिए बाध्य एवं सहयोग व सहायता करने वाले को प्रोत्साहित करता है।

कृतज्ञता बोध से ओत-प्रोत व्यक्ति व्यावहारिक तौर पर अध्यात्मिक होता जाता है और कृतज्ञता व्यक्त करना एवं परमार्थ कार्य करना उसकी जीवन शैली का अंग बन जाते हैं। अनेक शोध-अध्ययनों से पता चलता है कि जो लोग कृतज्ञता बोध से ओतप्रोत होते हैं, वे अच्छी नींद और अच्छे स्वास्थ्य के धनी होते हैं। वे प्रसन्न अधिक और उदास कम रहते हैं तथा वे बहुदा तनावमुक्त होकर जीते हैं। उन्हें सर्वदा अच्छाई ही देखने की आदत बन जाती है। साथ ही वे अपने स्वार्थ का त्याग आसानी से कर पाते हैं। उन्हें उसका थोड़ा भी मलाल नहीं होता।

कृतज्ञता नकारात्मकता का नाश करती है और सकारात्मकता को बढ़ावा देती है। उनके रिश्ते बेहतर होते हैं और लोग उनके व्यक्तित्व के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं, जिससे प्रोत्साहित होकर वे और अच्छे काम कर पाते हैं। कृतज्ञ लोग अपने आसपास के वातावरण पर अधिक नियंत्रण कर पाते हैं तथा औरों के लिए भी व्यक्तित्व विकास का माहौल तैयार करते हैं। वे जीवन के उद्देश्य को भली-भाँति समझने लगते हैं और उसमें और बेहतरी का तलाश करते हैं। वे अपने जीवन में घटने वाली घटनाओं को सहर्ष स्वीकार करने में सक्षम होते हैं और चुनौतियों का दृढ़ता से सामना कर पाते हैं।

कृतज्ञता विषयक एक अनुसंधान किया गया। यह अनुसंधान आभूषण विक्रेताओं के व्यवहार पर अधारित था। अध्ययन से पता चला कि जिन दूकानदारों ने ग्राहकों के साथ आत्मीयतापूर्वक व्यवहार किया और पुन: आने का आग्रह किया, उनके यहाँ ग्राहकों का बार-बार आना जारी रहा और उनके कारोबार में लगभग 70 प्रतिशत तक की वृद्धि देखी गई। लेकिन जिन दूकानदारों ने अपने ग्राहकों के साथ सद्व्यवहार नहीं किया या उन्हें पुन: बुलाने के आग्रह में संकोच किया, वहाँ ग्राहकों के बार-बार आने में कमी देखी गई।

इसी प्रकार 300 कॉलेजों के विद्यार्थियों को तीन समूहों में बाँटकर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कृतज्ञता के प्रभाव का अध्ययन किया गया। एक समूह को कहा गया कि वे तीन सप्ताह तक हर रोज कृतज्ञता भाव से पत्र लिखें। दूसरे समूह को कहा गया कि वे ऐसा ही नकारात्मक भाव से पत्र लिखें तथा तीसरे समूह को बस कुछ निर्देश देकर छोड़ दिया गया। अध्ययन में पाया गया कि कृतज्ञता भाव से पत्र लिखने वाले विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति बहुत ही सकारात्मक हो चुकी थी। इस प्रकार कृतज्ञता भाव हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व है।

लूडो

- श्रीमती सुधा गोयल -

मुझे बचपन के वे दिन कभी नहीं भूले, जब मैं, बीनू, मम्मी और पापा मिल कर लूडो खेलते थे। बड़ा मजा आता था। खेल में अक्सर पापा ही जीतते थे और हम सब मिलकर ताली बजाकर खुश होते थे। पापा, मम्मी की गोटियाँ खूब पिटतीं। कभी-कभी मम्मी भी जीत जातीं। लेकिन खेल में हमारा नंबर तीसरा या चौथा रहता। मम्मी के जीतते ही बाजी खत्म हो जाती, जबकि पापा के जीतने तक मम्मी अंत तक साथ देतीं।

असली खेल तो मम्मी-पापा खेलते थे। हम तो मोहरे भर थे। फिर भी मैं हमेशा लाल गोटी लेता, क्योंकि मेरे साथी अक्सर कहा करते थे - 'हरी हराए, लाल जिताए, नीली-पीली टक्कर खाए।' फिर भी मैं हार जाता। यद्यपि मम्मी-पापा की गोटियाँ नीली-पीली ही होतीं और उनमें खूब टक्कर होती। पता नहीं, क्यों खेल में हमेशा एक बात होती। पापा की गोटी तभी बाहर निकलती, जब मम्मी की गोटी उनके घर के सामने से निकल जाती। आधा सफर तय की हुई गोटी को पापा एकदम पीट देते। अब समझता हूँ, यह पापा की एक चाल थी। लेकिन जब मम्मी, पापा की गोटी न पीट पाती तो हमें चाल बतातीं और हमारे द्वारा उनकी गोटियाँ पिटवा देतीं।

अपनी छ: वर्षीय बालक बुद्धि में उनकी चालें कहाँ आती थीं। हम सोचते - 'पापा-मम्मी बड़े हैं, चाल ठीक ही बता रहे हैं।' लेकिन हमें चाल बताकर वे अपना रास्ता साफ करते थे। अपनी नासमझी के कारण हम अक्सर मात खा बैठते। बड़ी खीज होती। बीनू तो खीज कर सारा खेल ही बिगाड़ देती। खेलने से पहले उसे अच्छी तरह समझा दिया जाता कि चिढ़ कर खेल न बिगाड़े। वरना उसे नहीं खिलायेंगे। बीनू खेल के लालच में उस समय तो 'हाँ' कर देती, लेकिन बाद में रुआँसी हो जाती। जब मम्मी की गोटी पापा के घर के सामने पहुँचती, मम्मी हँसकर कहतीं - 'अब निकलेगी आपकी गोटी।' गोटियों को भी सुगंध आने लगी है। उनकी बातों का व्यंग्य हम कहाँ समझ पाते? बस हँसी में उनका साथ देते और खुलकर हँसते।

खेलते-खेलते बचपन के दिन कब निकल गये। आँखें तो तब खुलीं, जब यही गोटी का खेल जीवन में खेला जाने लगा। मम्मी-पापा एक दूसरे को मात देने की कोशिश में अपनी-अपनी गोटियाँ फिट करना चाहते थे। और हम मोहरे बने चुपचाप देख रहे थे। मम्मी जो कहीं 'हाँ' कर देतीं, पापा भी 'हाँ' में हाँ मिलाते। हम जैसे अस्तित्व हीन हो गये थे। उनकी मर्जी में हमारी मर्जी थी।

उनकी नजरों में हम अभी वही बच्चे थे, जिन्हें गोटी चलने की तमीज नहीं थी। अब भी वे अपनी तरह ही चाल चलनी चाहते। अजीब खींचा-तानी मची थी। कोई यह समझने को तैयार ही न था कि हमें भी अपनी गोटी चलनी आती है। मन करता पापा से कहूँ - 'आप गलत चाल चल रहे हैं। मात खा जायेंगे। मम्मी जरा धीरे चलो , कहीं ठोकर न लग जाए। या फिर ऐसा न हो कि हम सब भटक जायें। और अलग-अलग दिशाओं में चलने लगे। कभी कोई दिन ऐसा न आ जाए कि हम अपनी ही पहचान खो दें। और एक दूसरे को पहचान न पाए। हमारी सलाह मानकर देखो। कभी-कभी बच्चों की बताई चाल से भी बाजी पलट जाती है।'

मन मसोस कर रह जाते। इतनी हिम्मत कहाँ थी कि बड़ों के सामने मुँह खोल सकें। कहना बहुत कुछ था, लेकिन जुबान तालू से चिपक जाती। मम्मी की हर वक्त की बकझक और रोना मौन में तब्दील हो गया। समय से घर लौटने वाले पापा देर-सबेर या कई कई दिन बाद घर लौटने लगे। पता नहीं, पापा कहाँ रहते थे और क्या खाते थे। लेकिन घर में व्याप्त मौन तूफान आने से पूर्व की शांति जैसा था।

हँसी के फव्वारे बंद हो गये थे। हमें बड़ी झुंझलाहट होती। लगता - किन्हीं अदृश्य हाथों ने हँसी के गुलदस्ते हमसे छीन लिये हैं और हम उन्हें पाने के लिए छटपटा रहे हैं। एक दिन मामाजी घर आये तो मम्मी उनके सामने फूट-फूटकर रोने लगीं। रोते-रोते बताया कि पापा किसी और के चक्कर में पड़ गये हैं। वह महिला पापा के ऑफिस में ही काम करती है और तलाकशुदा है।

पता नहीं, यह चक्कर कब से चल रहा था। एक दिन मम्मी बाजार सामान लेने गई थीं। लौटते वक्त दोनों को दोपहर का शो देखकर ऊर्वशी से हाथ में हाथ डाले निकलते देखा था। मैं सोचता - इसमें इतना शोरगुल मचाने की क्या जरूरत है। सही अर्थ मुझे भी मालूम न था। मैंने अपने एक दोस्त से पूछा तो वह बोला - 'तुम्हारे पापा नयी मम्मी ला रहे हैं।' सुनकर थोड़ा अजीब लगा। 'जब हमारा काम एक मम्मी से चल जाता है तो भला दूसरी की क्या जरूरत?' मैंने बीनू से कहा।

वह बोली - 'अरे बस इतनी सी बात है। मैं मम्मी को बोलूँगी कि आप भी एक नये पापा ले आयें। बस लड़ाई खत्म। हिसाब बराबर हो जाएगा।' मुझे भी बीनू की बात सही लगी। लेकिन ये नये पापा और नयी मम्मी कैसे होंगे। हमारा क्या काम करेंगे? हमारी लूडो में तो चार ही घर हैं। इन दोनों को कैसे खिलायेंगे? घर में इतनी भीड़ क्या अच्छी लगेगी?

आखिर बीनू ने अपने मन की बात कह ही दी। सुनकर मम्मी ने एक जोरदार तमाचा जड़ दिया। फिर स्वयं भी रोने लगी। बीनू तो गला फाड़कर चीख रही थी। मैं भी नहीं समझ पा रहा था कि बीनू ने ऐसी क्या गलत बात कह दी कि मम्मी ने उसे मारा। मुझे मम्मी पर खूब गुस्सा आया। मैं जब मम्मी को रोते देखता तो मुझे उनपर तरस आ जाता। पापा, मम्मी को इतना क्यों सताते हैं। पहले की तरह दफ्तर से लौटकर सीधे घर क्यों नहीं आते? यदि गलती की है तो माफी माँग लेनी चाहिए। हमें तो सब यही सिखाते हैं कि माफी माँगने से कोई छोटा नहीं हो जाता। पापा भी मम्मी से माफी माँग लेंगे तो क्या...? फिर भी हमारे पापा ही रहेंगे।

एक दिन डरते-डरते पापा के गले में बाहें डाल कर कहा - 'पापा, आज हम सब फिर लूडो खेलें?' सुनते ही पापा ने झिड़क कर गले से बाहें निकाल दीं और चुपचाप अपने कमरे में चले गये। पापा की झिड़की मम्मी के कानों में भी पड़ गई थी। फिर दोनों में खूब वाक् युद्ध हुआ। मैं अपनी प्रताड़ना के दु:ख को भूलकर विस्मय से देख रहा था।

ये मम्मी-पापा कैसे हो गये हैं, सारे दिन झगड़ते रहते हैं। पापा पहले तो ऐसे नहीं थे। मारते भी नहीं थे। प्यार करते थे। मम्मी ही कभी-कभी पीट देती थीं। तब पापा, मम्मी को डाँटते और हम दोनों को अपने साथ बाजार ले जाते। चॉकलेट दिलाते, पार्क में घुमाते। लेकिन अब मम्मी न प्यार करती हैं, न मारती हैं। न जाने कैसे खोई-खोई सी रहती हैं। साड़ी भी ढंग से नहीं बाँधतीं। चेहरा भी कितना खराब हो गया है। पहले मेरी मम्मी सभी दोस्तों की मम्मी से सुंदर लगती थीं।

उस दिन कितने उत्साह में भरकर घर लौटा था। अपनी कक्षा में प्रथम जो आया था। सोच रहा था कि कार्ड देखते ही मम्मी उछल पड़ेंगी। खूब प्यार करेंगी और शाबाशी भी देंगी। मोहल्ले के बच्चों में मिठाई भी बाँटेंगी। लेकिन मम्मी ने कार्ड देखकर चुपचाप एक तरफ रख दिया। कहा कुछ भी नहीं। मुझे बहुत बुरा लगा। यदि एक बार प्यार से चूम ही लेती तो इनका कुछ बिगड़ जाता?

बीनू भी चिड़चिड़ी और गंदी लड़की हो गई है। हर वक्त मैली सी फ्रॉक पहने गली में बच्चों के साथ खेला करती है। जरा भी कहना नहीं मानती। पापा को घर आये दो महीने हो गये। एक दिन मामाजी हम सबको अपने साथ ले गये। उसके बाद हम कभी अपने घर नहीं गये। मामाजी के घर में मुझे जरा भी अपनापन नहीं लगता था। जब चिंटू-पिंटू मामाजी से पापा-पापा कहकर लिपट जाते, तब मुझे अपने पापा की बहुत याद आती। हमें यहाँ आये एक साल हो गया था। पापा की शक्ल तो दूर, न कोई चिट्ठी आई, न पापा ही मिलने आए।

अब तो मुझे भी लगने लगा कि पापा पहले वाले पापा नहीं रहे। मेरे जन्म-दिन पर कोई उपहार भी नहीं भेजा। क्या उन्हें हम लोगों की जरा भी याद नहीं आती। मम्मी भी अब नौकरी करने लगी हैं। मैं और बीनू स्कूल से थके-हारे लौटते और चुपचाप घर में अकेले पड़े रहते। मम्मी के पीछे घर में अकेले कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

तभी एक दिन मामाजी ने आकर बताया कि नोटिस आ गया है। तलाक का मुकदमा शुरू हो गया है। तलाक का अर्थ जानने के लिए मुझे फिर से दोस्त की मदद लेनी पड़ी। अब धीरे-धीरे सारी बातें, समझ में आने लगी थीं। मम्मी को अक्सर छुट्टी लेकर कचहरी जाना पड़ता। मेरे मन में पापा से मिलने की बड़ी इच्छा थी। बिना किसी को बताए चोरी-चोरी चुपचाप मम्मी के पीछे-पीछे चल दिया।

कचहरी के बाहर ही मामाजी मिल गये। मम्मी उनसे बात करने लगी। तभी मेरी नजर पापा पर पड़ी। वे एक काले कोट वाले से बात कर रहे थे। मैं दौड़कर उनके पास पहुँचा और धीरे से पुकारा - 'पापा।' आवाज सुनकर पापा ने मुड़कर देखा और मुझे चूम लिया। मैंने पापा की आँखों में झाँका और बोला - 'आप हमारे साथ क्यों नहीं रहते पापा? हमें आपसे अलग रहना जरा भी अच्छा नहीं लगता।'

'मैं कोशिश कर रहा हूँ कि तुम और बीनू मेरे साथ ही रहो', पापा ने कहा। '...और मम्मी?' मैंने बीच में ही बात काटकर कहा। 'तुम्हारी मम्मी हमारे साथ नहीं रहेंगी।' पापा के मुँह से सुनकर बड़ा गुस्सा आया। 'मम्मी साथ नहीं रहेंगी तो हम

भी नहीं रहेंगे।' गुस्से में कहकर भाग आया। मुझे पापा पर बहुत गुस्सा आ रहा था। उस दिन मम्मी बहुत उदास थीं। कह रही थीं - 'बीनू तुम्हें और तुम्हारे भैया को भी कल कचहरी चलना है। देखें, फैसला किसके पक्ष में होता है।'

मुझे अब समझ आ गई थी। फैसला मेरा और बीनू का होना था। मैंने निश्चय कर लिया कि गोटियों के इस खेल में कल मम्मी को ही जितवाना है। पापा का समय तो बाहर आराम से कट जाता है, लेकिन हमारे न होने से मम्मी अकेली कैसे रहेंगी? मम्मी सारे दिन रोती रहेंगी तो कौन कहेगा - 'मम्मी रोती क्यों हो, तुम्हारे पास तुम्हारा बेटा है।' और मैं अपनी शर्ट से मम्मी के आँसू पोंछ दूँगा। मम्मी मुस्करा उठेंगी।

अगले दिन मैं और बीनू मम्मी के साथ कचहरी गये। मामाजी भी साथ थे। पापा भी आये थे। शायद पापा कुछ कहना चाहते थे। लेकिन मैंने उधर से दृष्टि फिरा ली। तभी अदालत की कार्यवाही शुरू हो गई। मम्मी पापा का तलाक हो गया था। तभी जज साहब ने मेरा और बीनू का नाम लेकर पूछा - 'बच्चों तुम अपनी मम्मी के साथ रहना चाहोगे या पापा के साथ?'

हमने बारी-बारी से दोनों की ओर देखा। दोनों की नजरें हम पर लगी थीं। मैंने और बीनू ने एक साथ मम्मी के पक्ष में अपना निर्णय सुना दिया। आज मम्मी को जीत मिली थी और पापा हार गये थे। पापा का वह मुरझाया चेहरा हर वक्त मेरे सामने रहता है। लेकिन मम्मी भी फैसला सुनकर हम दोनों को पकड़कर सिसक उठी थीं।

तभी पापा को वहाँ से गुजरते देखकर मैंने झट साथ लाई लूडो उन्हें पकड़ा दी - 'पापा, अपनी लूडो संभालिये। जब खेलने वाले ही नहीं रहे तो इसे रखकर क्या करूँगा?' और बिना उनकी ओर देखे मम्मी के साथ लौट आया था। लूडो का एक कोना फट गया था और गोटियाँ बिखर गयी थीं...।

- 290-ए, कृष्णानगर
डॉ दत्ता लेन, बुलंदशहर-203001
मोबाइल नंबर: 9917869962
ईमेल: sudhagoyal0404@ gmail.com

चतुर सुजान

- सुश्री मीरा जैन -

'माँजी ! बहुत चतुर हैं, तुम्हारे सामने तो एकदम सीधी बनती हैं। मुझ पर माँ जैसा प्यार उड़ेलती हैं। किंतु तुम ऑफिस के लिए जैसे ही घर से बाहर निकलते हो, फिर उनका रूप देखो - सोफे पर पसर कर बैठ जाएँगी। ऐसे हुकुम चलाएँगी, जैसे वे कोई शाहंशाह और मैं नौकर हूँ। यह सब अब बर्दाश्त से बाहर होने लगा है। कब तक सहन करूँ सासू माँ का यह दोहरा रूप। तुम्हें कितना भी कहूँ, पर तुम्हारे कानों में जूँ तक नहीं रेंगती है?'

विजय ने समझाने की गरज से कहा - 'सुरेखा! क्यों नाहक परेशान होती हो? माँ बुजुर्ग है, कभी कुछ कह भी दिया तो क्या हुआ? थोड़ा सहन कर लोगी तो कोई घिस नहीं जाओगी?'

सुरेखा तैश में आ गई - 'तुम हमेशा मुझे ही दोष देते हो। अब मैं एक नहीं सुनने वाली, मुझे नहीं अपनी माँ को समझाओ कि पराई बेटियों से कैसा व्यवहार किया जाता है। कान खोल कर सुन लो, वे नहीं सुधरीं तो इस घर में वे रहेंगी या...?'

'कैसी बात करती हो सुरेखा! इस उम्र में माँ भला कहाँ जायेगी?'

'मैं कुछ सुनना नहीं चाहती हूँ।'

'ठीक है, मै इंतजाम करता हूँ।'

अगले ही दिन घर में कैमरे लग गये। कैमरे देख सुरेखा चीखी - 'तुम्हें मेरी बात पर जरा भी विश्वास नहीं, जो घर में कैमरे लगवा रहे हो?'

'सुरेखा! माँ को सबूत सहित कुछ कहूँगा तो ठीक रहेगा। अन्यथा माँ स्वीकार नहीं करेगी कि वह तुमसे बुरा व्यवहार करती है।'

कैमरा लगा। विजय मन ही मन बेहद खुश था कि अब उसके पीठ पीछे सुरेखा के तानों से माँ को मुक्ति मिल जाएगी। क्योंकि उसे भली-भांति मालूम था 'कौन चतुर है और कौन सीधा'।

- 516, साईनाथ कालोनी, सेठीनगर
उज्जैन-456010
मोबाइल नंबर: 9425918116

हिंदी का बढ़ता वैश्विक प्रभाव

- श्री दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' -

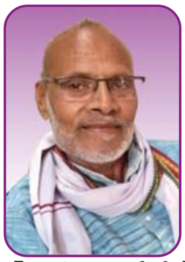

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसके सामने संघर्ष के दरवाजे न कभी बंद थे और न आज बंद हैं। फिर भी यह स्वस्फूर्त भाव से निरंतर प्रगतिमान है। वास्तव में भाषा कोई भी हो, केवल विचार विनिमय का माध्यम नहीं होती। वह अपने क्षेत्र की सांस्कृतिक चेतना की संरक्षक और संवाहक होती है। इसमें लोगों के सपने पलते हैं। इस तथ्य को भारतेंदु हरिश्चंद्र ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में विधिवत पहचान लिया था। वे अपनी 'निज भाषा' शीर्षक कविता में कहते हैं -

'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के सूल।
अंग्रेजी पढ़िके जदपि सब गुण होत प्रवीन,
पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।'

उनका आशय यह था कि अंग्रेजी पढ़ के सभा-संगोष्ठी और रोजी-रोजगार के स्तर पर हम सफल हो सकते हैं, लेकिन आत्मविश्वास, आत्म- विकास और आत्मोत्कर्ष के धरातल पर कमजोर रह जायेंगे। भाषा ज्ञान का माध्यम है, पराये माध्यम से हमारा मानस कितना मजबूत बन सकता है? पराधीनता से मुक्त होने वाले देशों ने इसीलिए अपनी भाषा के लिए प्राण प्रण से संघर्ष किया। अपने देश में तो और भी जटिल स्थिति थी। यहाँ राजभाषा की राह में हिंदी के मुकाबले उर्दू एक तरह से बढ़त की स्थिति में थी। इसलिए महात्मा गांधी, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, सेठ गोविंददास, पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी जैसे हिंदी सेवियों को इसे राजभाषा के दरवाजे तक पहुँचने में कड़ी मेहनत करनी पड़ी।

अंततः संविधान सभा में यह बात मानी गई कि आजादी की लड़ाई के दिनों में 'हिंदी' ही वह भाषा थी, जो पूरे देश के अंदर स्वतंत्रता सेनानियों के बीच संपर्क का सेतु बनी थी। अस्तु, **14** सितंबर **1949** को संविधान सभा ने हिंदी को भारतीय गणराज्य के कामकाज की राजभाषा घोषित किया था। इतिहास में झाँकने पर हम पाते हैं कि संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव तमिलभाषी गोपाल स्वामी अयंगर ने रखा था। इसका समर्थन और अनुमोदन करने वालों में मराठी भाषी शंकरराव देव, तेलगु भाषी दुर्गावती, उर्दू भाषी मौलाना अबुल कलाम आजाद, गुजराती भाषी के एम मुंशी और कन्नड़ भाषी कृष्णमूर्ति थे। इनका समेकित मत था कि राष्ट्रीय एकता और विकास का आधार हिंदी ही हो सकती है।

हिंदी राजभाषा बन तो गई, लेकिन कहा गया कि हिंदी में अभी प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी एवं विधि संबंधी शब्दावली का अभाव है। साथ ही हिंदीतर भाषी क्षेत्र के कर्मचारियों और अधिकारियों के बीच इसका जनाधार कमजोर है। इसलिए तत्काल हिंदी नहीं लागू की जा सकती है। ऐसी स्थिति में हिंदी के साथ अंग्रेजी भी सरकारी कामकाज की भाषा बनी रही। आगे चलकर कुछ नकारात्मक राजनीतिक कारक भी उभरने लगे। विशेषकर हिंदीतर भाषी क्षेत्र के राजनेता एवं स्थानीय राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्ता वहाँ के लोगों को अपने साथ जोड़े रखने के लिए हिंदी विरोध को एक भावात्मक हथियार के रूप में अपना लिये, जबकि ये ही राजनेता अपने बच्चों को उन स्कूलों में पढ़ाते हैं, जहाँ हिंदी भी सीखने की व्यवस्था होती है। क्षेत्रीय विरोध के कारण केंद्रीय सत्ता भी खुलकर हिंदी की पक्षधरता का प्रदर्शन नहीं कर पाती।

इसके बाद भी हिंदी की विकासयात्रा गतिमान है। आज स्थिति यह है कि प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, विधि, पुरातत्व, वाणिज्य, प्रशासन जैसे किसी भी क्षेत्र और विषय की तकनीकी शब्दावली की हिंदी में कमी नहीं है। प्रतियोगी परीक्षा हो, या फिर शोध, न्यायालय, संसद और प्रशासन-तकनीकी रूप से सब जगह हिंदी के लिए दरवाजे खुल चुके हैं। मगर इसके बाद भी अभी हिंदी की राह में बड़ी रुकावटें हैं। मोरारजी देसाई की 'जनता पार्टी' की सरकार में अटल बिहारी वाजपेयी विदेश मंत्री थे। तब संयुक्त राष्ट्रसंघ में उन्होंने अपना भाषण पहली बार हिंदी में दिया था। इसकी खूब प्रशंसा हुई थी। बाद में सांसदों ने इसके लिए उनको बधाई दी थी। वाजपेयी जी ने कटाक्ष किया था - 'आपकी बधाई मुझे तब स्वीकार्य होगी, जब आप संसद में अपना भाषण हिंदी में देंगे।'

यह कटाक्ष दोहरी मानसिकता पर था। अभी सैद्धांतिक रूप में भले ही हिंदी के लिए कोई दरवाजा न बंद हो, मगर व्यावहारिक स्तर पर उच्च व उच्चतम न्यायालय, अंतरिक्ष विज्ञान, प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रबंधन शैक्षणिक संस्थान, शोध संस्थान और संसद से लेकर बड़ी-बड़ी संगोष्ठियों में अंग्रेजी का दबदबा है। यहाँ तक कि हिंदी बोलने वाला इन स्थानों पर स्वयं झेंप महसूस करने लगता है। यानि हिंदी अपने ही घर में पिट रही है। सन **2014** के बाद माननीय नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने वैश्विक स्तर पर हिंदी को पहचान दिलाने का काफी प्रयास किया है। परिणामस्वरूप अभी **10** जून, **2022** को हिंदी, बांग्ला, उर्दू भी पुर्तगाली, फारसी और स्वाहिली के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ के कामकाज की आधिकारिक भाषा के रूप में चुनी गई है। उपर्युक्त तीनों भारतीय भाषा परिवार से जुड़ी भाषाएँ हैं। कुछ दिन पहले संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी अबूधाबी में वहाँ की सरकार ने अरबी और अंग्रेजी के साथ ही हिंदी को भी अपने यहाँ की

आधिकारिक अदालती भाषा के रूप में शामिल किया है। विदेश में 150 मान्य विश्वविद्यालयों के अलावा सैकड़ों स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में शोध स्तर तक हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है।

हिंदी भाषा का निरंतर बढ़ता जनाधार भी इसका दबदबा बनाने में सहयोगी सिद्ध हो रहा है। सन 1991 की जनगणना में हिंदी को अपनी मातृभाषा बताने वालों की संख्या 33 करोड़ 72 लाख 72 हजार 114 थी, जबकि अंग्रेजी भाषी 33 करोड़ 70 लाख थे (स्रोत - 'राजभाषा भारती' - स्वर्ण जयंती अंक)। इस प्रकार हिंदी बोलने वाले अंग्रेजी भाषियों से अधिक थे। तब हिंदी भाषियों की संख्या विश्व में दूसरे स्थान पर बताई गई थी। अभी जो तात्कालिक आँकड़े उपलब्ध हैं, सन 2011 की जनगणना में देश की जनसंख्या 1.21 अरब थी, इनमें सर्वाधिक 41.03 प्रतिशत हिंदी भाषी हैं। इस प्रकार इस भाषा समुदाय की संख्या 49 करोड़, 64 लाख, 63 हजार बनती है। इसके आधार पर कुछ विद्वान इसे चीन की मंदारिन से भी सघन जनाधार वाली भाषा मानते हुए हिंदी को विश्व की प्रथम भाषा घोषित करते हैं। आज की तारीख में डेढ़ करोड़ से अधिक भारतीय अन्य देशों में कार्यरत हैं। ये वे लोग हैं, जो देश के अंदर क्षेत्र, संप्रदाय और भाषा के स्तर पर भले ही बंटे रहते हैं, मगर विदेश में जाकर वहाँ की चमक-दमक के पीछे छिपी वास्तविकता को देखने और अकेले पड़ने की आशंका के बाद उनको भारतीयता, भारतीय संस्कृति और देश की राजभाषा हिंदी पर बड़ा भरोसा बन जाता है ।

यह देश-विदेश में फैला हिंदी भाषी समुदाय अपने अंदर एक बड़ा मध्यम वर्ग समेटे है। पिछले कुछ वर्षों में इस मध्यवर्ग की क्रयशक्ति बहुत बढ़ गई है। इसे दुनिया एक मजबूत बाजार के रूप में देख रही है। इसे प्रभावित करना, इसके बीच पैठ बनाकर अपना माल बेचना - ये सब बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उद्देश्य हैं। यह तभी संभव है, जब उपभोक्ता की आवश्यकता और सोच को पहचानने और अपने उत्पादों के पक्ष में उसका मानस बनाने के लिए उसी की भाषा में संवाद स्थापित किया जाए।

उदारीकरण के शुरुआती दिनों में जब विदेशी कंपनियाँ भारत में आयीं तो अपने साथ अंग्रेजी का तामझाम लायी थीं। मीडिया महारथी रूपर्ड मरडोक स्टार चैनल के साथ अवतरित हुए। यह धूमधाम से अंग्रेजी में चला। सोनी, डिस्कवरी, एनिमल वर्ड अपने कार्यक्रम अंग्रेजी में लेकर आये। मगर इनको विवश होकर हिंदी की तरफ मुड़ना पड़ा। क्योंकि इनको अपनी दर्शक संख्या बढ़ानी थी। लाभ और व्यापार आगे ले जाना था। आज टीवी चैनल, फिल्म और मनोरंजन की दुनिया में हिंदी सबसे अधिक लाभ देने वाली भाषा है। कुल विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत हिंदी माध्यम में होते हैं। इसलिए अंतरराष्ट्रीय मीडिया तंत्र हों या बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, उनको अगर भारतीय परिक्षेत्र में अपनी जगह बनानी है तो इसके लिए हिंदी को अपनाना उनकी विवशता है। दूसरों की यह विवशता हिंदी की शक्ति और सामर्थ्य की द्योतक है।

एक बार यह कहा गया था कि कंप्यूटर-इंटरनेट के मामले में हिंदी पिट जाएगी। मगर सूचना प्रोद्योगिकी की दिशा में हिंदी के बढ़ते कदम इसके विरोधियों को बेचैन करने के लिए काफी हैं। बस जरूरत है, हिंदी भाषी अज्ञानता, निराशा और हीनभावना को त्याग कर हिंदी के हित में कर्मरत हो जायें। क्योंकि ग्लोबल विलेज में अपनी पहचान और संस्कृति को सुरक्षित रखने का काम हिंदी भाषा के भरोसे ही हो पाएगा।

- ग्राम-पोस्ट: जासापारा
वाया: गोसाईगंज-228119
जिला-सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल नंबर: 7379100261

सॉरी

- श्री राजेश पाठक -

अमर बाबू एक सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त हो स्थाई तौर पर रहने के लिए अपने पैतृक घर लौट आए थे। उनकी पेंशन से संबंधित कागजात अभी भी अधूरे ही थे, जिसके कारण उन्हें समय-समय पर दरियाफ्त करने हेतु घर से 50 किलोमीटर दूर अवस्थित सरकारी कार्यालय जाना पड़ रहा था।

एक दिन की बात है, वे पुन: पेंशन संबंधी कार्य को लेकर घर से दफ्तर जाने के लिए एक कोच बस में सवार हुए। सीट भी मिल गयी। थोड़ी देर बाद एक स्थान पर उस कोच बस में एक युवती सवार हुई और उनसे सटी खाली सीट पर बैठ गई। आगे चलकर सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे होने के कारण बस हिचकोले खाने लगी और उनका शरीर जोर से साथ बैठी उस अनजान युवती के शरीर से जा टकराया। टकराते ही अमर बाबू, अंदर ही अंदर शर्मिंदगी का भाव लिए उस युवती से कहा - 'सॉरी बेटी!...' आगे वे कुछ और बोलने जा रहे थे कि बीच में ही उन्हें टोकते हुए उस युवती ने कहा - 'जब 'बेटी' कह दिया, फिर आगे और कुछ कहने की जरूरत नहीं है...।'

- द्वारा जिला सांख्यिकी कार्यालय
गिरिडीह, झारखंड-814133
मोबाइल नंबर: 9113150917

कल्प-कथा

- श्री संजय कुमार सिंह -

‘रचे दाम से, गये काम से
दिल से बोलो सच्ची बोल
सोच-सोच कर इक चाबी से
बच्चों! मन का ताला खोल
पंख लगा कर उड़े गगन में
जो जाने किस्से का मोल...।’

कोई कहानी सुनाने से पहले दादी उक्त पंक्तियों को दोहराती थी। फिर कोई कहानी सुनाती थी... ‘पहले हमारे गाँव के पूरब में रेवती नाम की नदी बहती थी। नदी के बगल में दूर-दूर तक खहाखोह अगम जंगल-पहाड़ होते थे। लेकिन आज... नदी सूख गयी है और जंगल कट कर ठूँठ रह गए हैं। पहाड़ के नाम पर गिनती के टीले बचे हैं, जहाँ धूल के बगूले उड़ते हैं। रात में नदी रोती है, जंगल बिलखते हैं, पहाड़ के टूटने-दरकने की मर्मांतक चीखें आती हैं... हड़ हड़ हड़ाक... खड़ खड़ खड़ाक... बोल्डर लादने की अवाजें। गाड़ियों के खुलने की आवाजें। क्रेशर का महाशोर... जैसे निर्दोष प्रकृति की अपार संपदा को लूटने का अबाध खेल चल रहा हो।

उस समय ऐसा नहीं था, एक भरी-पूरी नदी होती थी। नदी और पहाड़, पहाड़ और जंगल को लेकर अनगिनत कहानियाँ चलती थीं। उन कहानियों में नदी में जलपरी रहती थी और जंगल में जंगल का राजकुमार। दोनों आपस में प्रेम करते थे और दुनिया से छिप कर रात मिला करते थे। दोनों बहुत उदार थे। बहुत लोगों ने उन्हें जब-तब देखा भी था। आदमी की आहट से वे गायब हो जाते थे। पर... किसी का कोई नुकसान नहीं किया उन्होंने, बल्कि कई बार लोगों को बचाया था।’

दादी कहती थी, ‘रात में बहुत से जीव-जन आदमी का रूप धारण कर मिलते हैं। उनकी भी अपनी दुनिया होती है। सब की अपनी कथा-कहानी। अपना रंग-अभिसार। फिर रेवती नदी तो परम सुहृद थी। पीने के पानी से लेकर खेत सींचने तक वह सबके काम आती। गाँव में भोज हो तो जाकर लोग कहते ‘जलपरी बर्तन देना...’, बस तट पर तरह-तरह के बर्तन-वासन आ जाते। कई बार तो गरीब और जरूरतमंदों को रुपये-पैसे भी देती...। उसकी भलमनसाहत की जितनी कहानियाँ... उतनी ही जंगल के राजकुमार की...। लकड़ी से लेकर फल-फूल जो चाहे, जितना ले जाए। मगर... तब भी, उनके साथ बहुत बुरा हुआ। एक दिन कुछ अंग्रेज हैट-टोप पहनकर सैकड़ों मजदूरों को लेकर आये और डेरा डालकर जंगल में जाँच-पड़ताल शुरू कर दी। मशीन से पहाड़ की छाती छेदने लगे। जंगल की कटाई के साथ जंगली जीवों को गोलियाँ मार कर खाने लगे...। चारों तरफ हाहाकार मच गया। लेकिन इसके बाद ऐसा कुछ उल्टा-सीधा होना शुरू हुआ कि अंग्रेजों के होश उड़ गए।

कहते हैं, हैरीसन साहब के हैट जब-तब उड़ कर रेवती नदी में गिर जाती और उसकी बीबी मैरी के पल्लू दरख्तों की कटी शाखों से उलझ कर फट जाते। एक दिन एक पत्थर के टुकड़े के उछलने से मैरी चोटिल भी हो गयी। किसी अज्ञात अपशगुन के भय से उन्होंने हार कर पूरा ठेका किसी कलकतिया व्यापारी को दे दिया। उसने और तेजी से कारोबार बढ़ाया।

इतनी तेजी से कि... जंगल के राजकुमार की मुश्किलें बढ़ गयीं। रेवती से मिलने के लिए वह छटपटाने लगा। एक रात मौका लगा कर मिलने पर राजकुमार ने परेशान होकर कहा, ‘रेवती ! वे पहाड़ तोड़ रहे हैं, जंगल काट रहे हैं, अब मैं कहाँ रहूँगा?’ ‘तुम नदी में आ जाओ’ विकल होकर रेवती ने कहा। ‘पगली जब जंगल-पहाड़ नहीं रहेंगे, तो नदी रहेगी? वह भी सूख जाएगी।’ उसने उदास होकर कहा। दोनों बहुत देर तक रोते रहे। एक दूसरे से लिपटे रहे...। नदी की लहरें पछाड़ खाने लगीं। जंगल और पहाड़ पर हवा साँय-साँय करने लगी...।

अचानक आकाश और चाँद-तारों को निहार कर राजकुमार ने कहा, ‘अब क्या होगा? क्या हमारे प्रेम का अंत हो जाएगा?’ हवा की साँय-साँय रुक गयी। लहरों ने पछाड़ खाना छोड़ दिया। ‘प्रेम का अंत नहीं होता।’ रेवती बोली, ‘पर ये आदमी लोग बड़े निर्मम होते हैं। इन्होंने हमारे नेह-प्रेम को अपने स्वार्थ में भुला दिया। ये हमें उजाड़ कर क्या कभी सुखी रह सकेंगे? हमने क्या नहीं दिया इनको... पर ये तो फिरंगियों से भी एहसान फरामोश निकले।’

राजकुमार ने उसाँस लिया, ‘असल सवाल हमारा है। हमारा क्या होगा?... अब हम कहाँ जाएँगे? हम तो एक जान दो देह हैं।’ रेवती बोली, ‘नदी से जल, आकाश से सितारे, चाँद से चाँदनी, फूल से खुशबू और आँख से सपने अलग हो जाएँ, पर हम अलग नहीं रह सकते।’ ‘मगर कैसे?’ वह अधीर हुआ, बिना किसी देरी के कोई उपाय करो, ताकि हम यहाँ से निकल चलें। अब एक यही उपाय बचा है...।’ ‘निकल कर कहाँ जाओगे?’ रेवती दुखी होकर बोली, ‘यह दुनिया अब हमारे रहने लायक नहीं। जहाँ जाओगे ये हमें इसी तरह उजाड़ेंगे...।’

‘ऐसा न कहो’, राजकुमार ने कहा। ‘इसमें भोले-भाले ग्रामीणों का क्या दोष? दोषी तो ये व्यापारी लोग हैं, पैसा कमाने वाले... बाहर से आये हैं, इन्हें किसी चीज से क्या मोह।’ ‘सच कह रहे हो!’ वह बोली, ‘इसलिए कभी-कभी इनसे मुझे भी मोह-छोह होता है।’ ‘लेकिन अब मोह-छोह करने से फायदा?’

'कुछ नहीं, पर मन कचोटता है।' 'कोई उपाय करो।' जंगल के राजकुमार ने कहा, 'मेरा जी घबरा रहा है... कहीं भी हमारा रह-बास नहीं रहने दे रहे...।'

'हम पाताल-लोक चले जाएँगे।' वह सहमते हुए बोली। 'क्या?' जंगल के राजकुमार ने खुशी से उछलते हुए कहा, 'चलो, आखिर में हमारा प्रेम तो बच पाएगा रेवती।' मगर रेवती विवर्ण हो गयी, 'वहाँ ऐसी आजादी नहीं होगी?' 'नहीं हो, पर...', वह अकचका कर रुक गया, 'क्या कहती हो?' 'वही जो, तुमने सुना।' 'हाँ रेवती, वह दुनिया तो अंदर होगी। मन की दुनिया की तरह...', उसकी आवाज काँप रही थी। उसने फिर भी उसे ढाढ़स बँधाया। इसके बाद वे दोनों लंबे समय तक वहाँ रहने के बाद विवश होकर बेपरद होने से पहले पाताल-लोक चले गये, बल्कि कहा जाए तो नदी पूर्णत: सूख कर रेत हो गयी। जंगल कटकर ठूँठ और पहाड़ ढह कर रेत हो गये। तब उन्होंने मजबूरन यह निर्णय लिया।

'यह कैसे हो सकता है दादी?' हममें से कोई पूछता, 'ऐसे वे कैसे गायब हो सकते हैं...' 'होता है, किस्सा कहानी में होता है...। 'तुम लोग राजकुमार चंद्रचूड़ और चंद्रमौली की कहानी कैसे भूल गये...? वे दोनों कैसे पेड़ के अंदर रहते थे? फिर पाताल-लोक में भी दुनिया है। क्यों नहीं होगी? किसी को जब तुम यहाँ नहीं रहने दोगे, तो वे क्या करेंगे? चंद्रचूड़ और चंद्रमौली की तरह छिप कर कहीं रहेंगे। क्यों नहीं रहेंगे? याद है कैसे चंद्रमौली को दुष्ट रानियों ने दास और दासियों को मिला कर जंगल में फिंकवा दिया था?' दादी कहती।

'कौन सी कहानी में दादी?' कोई फिर कहता। 'हमें तो कुछ याद नहीं...' हमें याद भी रहता, तो भी हम सुनने के लोभ से अनजान बन कर कहते। दादी के पास हमारी स्मृतियों का सुरक्षित भंडार था, जिसे जब मन होता कुरेद कर हम जगा लेते, फिर तो फिर पूरी पोटली खुल पड़ती! सब सजीव हो उठते। 'सुनाई तो थी', बहाना मार कर वह कहती। यह उसकी कला थी। कहानी कहने की कला। उसकी एक कहानी से दूसरी कहानी नहीं निकले, ऐसा कभी नहीं होता। बस मनाना होता था। 'तो फिर से कहो न दादी।' हम कहते, 'हमें तो कुछ भी याद नहीं... दादी।'

'सुनो! चंदनपुर के राजकुमार चंद्रजीत की सात रानियाँ थीं, पर संतान एक भी नहीं। सो घोर तपस्या के बाद उसकी सबसे छोटी रानी गर्भवती हुई। छोटी रानी गर्भवती क्या हुई, शेष रानियाँ उससे जलने लगीं। एक दिन राजा कहीं बाहर गए हुए थे। रानी को प्रसव हुआ, उसने एक कन्या को जन्म दिया। रानियों ने उसे छिपाकर दास-दासियों से जंगल में फिंकवा दिया और प्रसव वाले घर में एक छोटा सा पत्थर रख दिया। राजा आया तो बता दिया कि छोटी रानी को पत्थर हुआ है। अपने भाग्य पर दु:खी होकर चुप हो गया।

उधर रात को जब वनदेवी घूमने निकली, झाड़ी में एक बच्ची को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। यह दूसरी घटना थी, अभी कुछ दिन पहले ही उसे यहीं एक लड़का फेंका हुआ मिला था, जिसे द्रवित होकर उसने फूल के पेड़ में बदल दिया था। वन दासियाँ उसे पोषाहार देकर जीवित रखे हुए थीं। उसने उसका नाम चंद्रचूड़ रखा था। अब यह लड़की मिली। वह खुश हुई, सो उसे भी फूल का पौधा बनाकर चंद्रचूड़ के बगल में लगा दिया और उसे चंद्रमौली नाम दे दिया। उसकी सेवा-सुश्रूषा का भार भी वनदासियों पर डाल दिया। बाहर आदमी की दुनिया में बढ़ती निर्ममता से उसे दुख भी हुआ।'

दादी दम मारती, कहानी जब तक किसी मोड़ पर नहीं आती, वह भी चैन नहीं लेती। हमें लगता, बादल आकाश में चाँद के पास अटक गये हों। हवा झुरमटों की ओट में विलम गई हो। इस बीच हममें से कोई कह उठता, 'आगे क्या हुआ, दादी?' मानो दादी साँस सँभाल कर आगे कहने के लिए ठहरी हो। फिर वाणी की गंगा बहने लगती, 'तो, बहुत दिनों के बाद चंदनपुर में एक संत आये। वे राज उद्यान में एक रात ठहरे और राजा से सवेरे जाते समय बोले, 'राजन तू चंद्रचूड़ और चंद्रमौली के फूल से अपने इष्ट की पूजा कर, तेरा मनोवांछित काम हो जाएगा।'

राजा को कुछ समझ में नहीं आया। उसने फूल तोड़ने के लिए जंगल की ओर सैनिकों को भेजा, खोजने की जरूरत नहीं पड़ी। सामने ही दिव्य पेड़ दिख गये, जो फूलों से लदे थे। चंद्रमौली ने कुछ सोच कर कहा, 'चंद्रचूड़! राजा के सिपाही इधर ही आ रहे हैं।' 'तो क्या किया जाए?' वह हदस कर बोला। चंद्रमौली बोली, 'एक खेल, खेला जाए... उनके पास आने पर

सारे फूल आसमान में उड़ा दो।'

सैनिक जैसे निकट आये, सारे फूल आसमान में उड़ गये। सैनिक जैसे पीछे हटते, फूल वृक्ष में लग जाते। फिर पास आते, फिर उड़ जाते। हार कर उन्होंने अचरज भरी बात राजा को बतायी। राजा को विश्वास नहीं हुआ। वे सदल बल जंगल पहुँचे। चंद्रचूड़ ने कहा, 'चंद्रमौली राजा खुद आये हैं, अब क्या होगा?' वह हँसी, 'वही जो पहले हुआ। हम फूल उड़ा देंगे।' 'राजा नाराज होगा।' 'होने दो, यहाँ हमारा राज है।' राजा ने गरज कर कहा, 'सैनिकों फूल तोड़ो!' सैनिक आगे बढ़े, सारे फूल हवा में उड़ गये। राजा को अचरज हुआ। जब सैनिक पीछे हटे, फूल फिर टहनियों में लग गये। राजा ने नाराज होकर दोनों वृक्षों को काटने का आदेश दे दिया। वृक्षों को काटा गया।

एक वृक्ष से चंद्रचूड़, तो दूसरे से चंद्रमौली निकली। सभी हैरान रह गये। यह कैसे हो सकता है? जवाब में एक जोगन भेषधारी वृद्धा ने अकस्मात उपस्थित हो कर कहा, 'महाराज जब रानी पत्थर जन सकती है, तो वृक्ष में आदमी क्यों नहीं रह सकते?' वह जोगन पूर्वकाल में राजा की दासी थी, जिसे षडयंत्र में शामिल नहीं होने के कारण रानियों ने निकाल दिया था, मगर राजा ने उसे पहचाना नहीं। 'मतलब?' राजा उत्कर्ण हुआ। 'मतलब तो आपको अपनी रानियों से पूछना चाहिए।' उसने कुछ याद कर कहा। इस बार चौंकने की बारी राजा की थी। 'पर इनमें दूसरा कौन है? यह कहाँ से आया?' 'महाराज चंद्रमौली आपकी पुत्री है, दूसरे को मैं नहीं जानती।' उसने रहस्यमय अंदाज में कहा, 'पर वह चंद्रमौली का प्रेमी है।'

'यह कैसे हो सकता है?' राजा ने प्रतिवाद किया, 'तुम्हारी बात मान भी ली जाए कि चंद्रमौली मेरी पुत्री है, तो राजपुत्री का विवाह किसी अज्ञात कुल-शील के युवक से कैसे हो सकता है?' वह चंद्रमौली को लेकर जाने लगा। लेकिन उसने चंद्रचूड़ के विना जाने से इनकार कर दिया। राजा असमंजस में पड़ गया। फिर उसके मन में कुटिल भाव जागा। वह मुस्कुराया और कुछ सोचकर दोनों को लेकर चल पड़ा। राज-महल पहुँच कर उसने चंद्रचूड़ को अंध-कूप में कैद कर दिया और चंद्रमौली पर पहरा लगा दिया। लेकिन हुआ वही...।

'क्या हुआ दादी?' हम चिहुँक उठते। दादी विलम कर कहती, 'किस्सा गया बिल में, सोचो अपने दिल में...।' 'हम सवाल पर सवाल पूछते 'क्या वे भी पाताल-लोक चले गये...?' लेकिन दादी इससे आगे कुछ नहीं कहती। बस वहुत कुरेदने पर इतना ही कहती, 'मैं भी यही सोचती हूँ कि होना क्या चाहिए...?' 'क्या होना चाहिए दादी?' 'सोचूँगी तब न कहूँगी, तब तक तुम लोग भी सोचो...' 'नहीं दादी, तुम कहो, तुम जानती हो' हम कहते। 'छुपा रही हो... जल्दी बोलो...' दादी सोच कर कहती, 'हुआ यह कि... चंद्रमौली, चंद्रचूड़ को न देख उसके बारे में राजा से पूछने लगी। राजा गोल-मोल जवाब देता। वह दुखी और परेशान रहती। रानी कहती, 'वह अपनी इच्छा से भाग गया होगा। उसे भूल जाओ बेटी।'

चंद्रमौली को विश्वास नहीं होता। हवा अपने पथ, पहाड़ अपनी जगह और धरती अपनी कील से हट जाए, चाँद-सूरज टर जाएँ, पर चंद्रचूड़ उसे दगा नहीं दे सकता। राजमहल का जीवन उसे काटने लगा, तभी उससे एक दासी ने बताया, उसका प्रेमी अंधकूप में है। राजा किसी दिन उसे सूली पर चढ़ा सकता है। उसकी छाती धक से हो उठी। वह निहोरा करने लगी, 'मुझे ले चलो, मेरे चंद्रचूड़ के पास ले चलो।'

दादी के चेहरे पर चंद्रमौली की विकलता पसर जाती। वह सहमती हुई कहती, 'एक रात राज-प्रहरियों से नजरें चुराकर दासी एक चिराग के सहारे उसे अंधकूप में लेकर गयी और उसे वहाँ छोड़कर गुप्त दरवाजे के पास लौट आयी। यह क्या? चंद्रचूड़ के हाथ-पैर जंजीरों से बँधे थे। चेहरा विवर्ण और क्लांत था। उसने हुलस कर कहा, 'तुम आ गयी चंद्रमौली... मैं जानता था तुम आओगी।' चंद्रमौली को पिता राजा पर बहुत गुस्सा आया। महल के बाकी लोग झूठे और लबाड़ लगे। उसने जंजीर खोल दिये। फिर दोनों एक-दूसरे से लिपट गए। कितनी नदियाँ रोयीं, कितने पेड़ सूख गये, कितने पाखियों के पंख झड़ गये और न जाने कितने युग बीत गये।' 'क्यों दादी?' हमारी उत्सुकता पर छाई पसरने लगती, 'फिर क्या हुआ...?'

'राजा के पाप से उसका गर्व का महल ढह गया। राज-पाट बिला गया। दासी इंतजार करते हुए बूढ़ी हो गयी, बैठे-बैठे पत्थर। मगर वे नहीं निकले उस अंधकूप से। आज भी वह तहमहल, वे खंडहर वहीं हैं, दोनों के अमर प्रेम की कहानी भी...।' किसी अनजानी दुनिया में भटकती हुई कहती 'मतलब?' 'हर बात का कितना मतलब पूछोगे बाबू?' दादी खीजकर कहती। 'लोग चले जाते हैं, राजा-रानी, महल-अटारी सब... सिर्फ कहानियाँ रह जाती हैं। एक था राजा, एक थी रानी, दोनों मर गये, शेष कहानी...।'

उस समय की बात तो नहीं कह सकता कि हम पर क्या गुजरती...। हाँ, इतना याद है रेवती नदी और जंगल के राजकुमार, चंद्रमौली और चंद्रचूड के लिए हम खूब बिलखते। लेकिन आज सोचता हूँ, तो लगता है, दादी कल्प-कथा कहती थी, पर उनमें गहरे मंतव्य छिपे होते थे। यथार्थ न सही, लेकिन हर कदम पर उसकी छाया होती थी। सुनने में मन रमता था। कथा में अद्भुत रस होता था, उत्सुकता, जिज्ञासा, कौतूहल, रहस्य और रोमांच होता था। बड़ा आनंद आता था और बड़ी परिश्रांति मिलती थी। पर आज...?

- प्रिंसिपल पूर्णिया महिला कॉलेज
पूर्णिया - 854301
मोबाइल नंबर: 9431867283, 6207582597

कविता

श्री महेश केशरी की कविताएँ

(एक)

नहीं लौटना चाहता
इस बार नहीं लौटना चाहता
घर की ओर
नहीं लौटना चाहता उसी काम
वाली जगह पर
इस बार निकलना चाहता हूँ
नदी की ओर
नापना चाहता हूँ उसकी गहराई
गिनना चाहता हूँ
रेत के ऊपर के पत्थर
नापना चाहता हूँ नदी का वेग
नदी की तरह मेरी एक प्रेमिका भी थी
नदी जिस वेग से बहती है
प्रेम करते समय उसकी छातियाँ भी
उसी वेग से धौंकती हैं
जैसे इस आषाढ़-सावन में
पूरे वेग से उफान मार रही है, नदी
मैं, गिनना चाहता हूँ
नदी पर पसरे रेत के असंख्य कणों को
मेरे दोस्त मुझे पागल कहते हैं
मैं, लौटना चाहता हूँ, पहाड़ों की तरफ
गिनना चाहता हूँ
पहाड़ और पत्थरों के ऊपर
उग आये पेंड़ों को
तनिक नहीं बहुत देर तक
मैं सुस्ताना चाहता हूँ
सुस्ताना नहीं सोना चाहता हूँ
पहाड़ के नीचे, पेड़ों की ओट में
गिनना चाहता हूँ, एक एक कर
पहाड़ पर उग आये पेड़ों और
पूरी पहाड़ी श्रृंखला को
नापना चाहता हूँ
जंगल और उसके ओर छोर को
सुनना चाहता हूँ प्रकृति का संगीत
अब दुनियावी चीजें
नहीं बाँध पातीं मुझे
अब नहीं लौटना चाहता
कभी घर की ओर।

(दो)

इतनी फिक्र अब कौन करता है
अब लोग इतना ही पूछते हैं
जब भी मिलते हैं कैसे हो?
और मेरे मुँह से सिर्फ इतना
ही जैसे सुनना चाहते हों 'ठीक'
जैसे उनके पास बस इतना
ही पूछने का समय हो
फिर वो मुस्कुरा कर आगे बढ़ जाते हैं
इधर बहुत बाद के सालों
में तो और बुरा हुआ है
शहर में लोग सुध नहीं लेते
एक दूसरे की
बहुत समय हुआ लोग
हाल नहीं पूछते
सब जैसे अपने आप में मगन हैं
जब मौसम का जिक्र आता तो
लोग यही कहते
इस साल बहुत गर्मी पड़ी
या इस बार बहुत ठंड पड़ी
लोगों ने ये भी पूछा कि
तुमने देखी थी कभी ऐसी बारिश
लेकिन
बहुत पहले के गये बीते दिनों में से ही
बहुत सारे दिन ऐसे थे
जब आँगन बुहारती माँ ने
अक्सर नियम से टोका ये कहकर
कि नहीं अभी बहुत धूप है
मत जाओ, लू लग जायेगी
बीमार पड़ जाओगे
कोठे से कपड़े उतारती,
माँ आँखें दिखाते हुए ये कहती
बाहर बारिश में क्यों भींगने जा रहे हो
बुखार हो जायेगा
चलो भीतर चलो
घर से बाहर
बारिश खत्म होने पर ही जाना
अचानक एक दिन घुलते
हुए दिनों में माँ कहीं बिला गई
अब बहुत धूप वाले गर्मियों के
दिनों में जब बाहर निकलता तो
रोकने-टोकने वाला कोई नहीं है
लेकिन, इस आजादी पर दिल में कोई
खुशी नहीं होती
घर की दहलीज से पैर निकालते समय
मैं उस आवाज को सुनना चाहता हूँ
कि रुको बाहर अभी बहुत धूप है,
मत जाओ, क्या इतना जरूरी काम है
कल चले जाना
रुको दो मिनट, तुम्हें बहुत जल्दी रहती है
मैं, छाता लेकर आती हूँ
वापस, लौटता तो माँ हाथों में
गुड़ का शरबत लिये खड़ी रहती
अब उसी तरह तपती हुई दोपहर में
जब घर से निकलता हूँ, तो
सोचता हूँ कि कोई पीछे से आवाज दे
और रोक ले मुझे ये कहकर कि नहीं
अभी बहुत धूप है... बाहर मत जाओ
रुको कि तुम्हें बहुत जल्दी रहती है
साथ में छाता लेकर जाओ
पसीने से लथपथ काम को निपटाकर
जब मैं चिलचिलाती धूप से लौटता हूँ
तो ओसारा खाली दिखाई देता है
मैं गुड़ वाले शरबत
लिये हाथों के बारे में सोचता हूँ
लेकिन, अब वहाँ कोई नहीं है
जैसे ही इस बात को सोचता हूँ
दिमाग फटने लगता है
कविता लिखते हुए हाथ काँपने लगे हैं
बाद के दिनों में जब पिता
घर की जर्जर छत की तरह हो चले थे
सर्दियों में जब मैं
सुबह-सुबह काम पर निकलता तो
पिता ताकीद करते, बाहर बहुत ठंड है
तुम रात को शायद देर से लौटते हो
या कि तुम्हारी सेहत गिरती जा रही है
सब कुछ धरा का धरा रह जायेगा
तुम खाने-पीने में बहुत लापरवाह हो
अपनी सेहत पर बहुत ध्यान नहीं देते

थोड़ा दूध, रात को लिया करो
च्यवनप्राश और दूध एक साथ लेने से
सर्दियों में सेहत ठीक रहती है
मेरे बाद तुम्हें और तुम्हारे बाल-बच्चों को
अब तुम्हें ही देखना है
तुम समझ रहे हो ना? जो मैं कह रहा हूँ
पिता शायद साफ-साफ अलविदा नहीं
कहना चाहते थे
अंतिम दिनों में पिता इसी तरह घुमा-फिरा
कर बातें करते थे
जैसे एक कुशल नाविक सौंप रहा हो
कोई कमान अपने अधीनस्थ को
अब कोई हाल-चाल नहीं लेता
कोई नहीं रोकता-टोकता
कोई नहीं डाँटता-डपटता।

(तीन)

तुम हर्फ नहीं थे
तुम हर्फ नहीं थे जो तुमको मिटा देते
तुमको मिटाते हुए
हम खुद भी मिट गये
रात आँखों में कटी और
दिल बुनता रहा कई ख्वाब
जब आँख खुली तो तुम अफसाना
सा बन गये
ये कैसी बेकसी है
मेरे तकदीर की मेरे दोस्त
जिसे हम अपना समझते रहे
वो एक फसाने की तरह थे
हमारा बचपना भी देखिए
कि हम गाफिल की तरह थे
तुम कहानी की तरह थे
तुम्हें हम हकीकत समझ बैठे।

(चार)

दुनिया के सबसे खतरनाक हथियार
ग्रेनेड, मिसाईल, बंदूक या जैविक
हथियार नहीं हैं
इनसे आदमी एक बार मरता है
दुनिया की सबसे खतरनाक हथियार
है भूख
इससे आदमी किस्तों में मरता है।
युद्ध पर नहीं
भूख पर बात होनी चाहिए
फिर कभी युद्ध पर बात नहीं
होनी चाहिए
बल्कि बात भूख पर होनी चाहिए
क्योंकि फंदा लगाता किसान
भूख से परेशान था
जो छात्र बाहर कमाने गया था
और गिरकर मरा किसी टॉवर
से या किसी बिल्डिंग से
किसान का बेटा मारा गया जो युद्ध में
उसके केंद्र में भूख थी
युद्ध हेतु कोई बजट नहीं होना चाहिए
हथियारों का निर्माण बंद होना चाहिए
हमेशा के लिये
बंदूकें, कटार, मिसाईलों, तलवारों के
लोहे को पिघलाकर तवा बनाना चाहिए
जिस पर थके-हारे और भूखे पेट
आदमी को आराम मिले
गोलियों के बारूद को निकालकर
फेंक देना चाहिए
किसी दुर्गम इलाके में
गोलियों को पिघलाकर चूल्हा, दरांतियाँ
और हँसुआ बनाना चाहिए
ताकि काटी जा सके भूख की फसल।

(पाँच)

हवा की तरह जरूरी है प्रेम
एक आदमी का घर था
लेकिन ईंट-गारों का बना था
पत्नी थी पति था पर उनमें प्रेम न था
पति एक कमाऊ मशीन था
वह खर्चे और बच्चों की परवरिश खातिर
जिंदा था
आदमी को इस धरती पर
जिंदा रखता है प्रेम
प्रेम में आकर्षण होता है
जीवन का सारा सौंदर्यबोध
प्रेम में होता है
आदमी प्रेम में या प्रेम के इंतजार में
सालों जीता है
ये कहना बहुत जरूरी है यहाँ कि
आदमी को जैसे हवा, धूप, दरख्त, मौसम
और त्योहारों की जरूरत है
वैसे ही प्रेम जरूरी है आदमी के लिए
प्रेम शब्द भर नहीं है
या केवल एहसास भर नहीं है
प्रेम तो पूरा का पूरा एक युग है
सहस्राब्दियों तक की आयु है प्रेम की
तभी तो प्रेम में पड़े आदमी की आयु
स्मृतियों में बहुत बड़ी होती है
और आज सालों बाद भी लोग
उनको याद करते हैं किस्से-कहानियों में
जिनका बखान होता है
यहाँ ये बताना भी जरूरी है कि
प्रेम का रंग, रूप व गंध नहीं होता
वह अमूर्त होता है, ईश्वर की तरह
मैं, एक लड़की को जानता हूँ
जो, प्रेम में होने के कारण ही
असमय सूखकर मर गई थी
एक आदमी था
जिसका घर-परिवार था
लेकिन, वहाँ प्रेम नहीं था
वह, आदमी भी पीला होकर सूख गया
असमय ही मर गया था
सूख गई वो लड़की और
मर गया वो पीला पड़ा आदमी
ठूँठे पेड़ की तरह
यह भी झूठ है कि
आदमी बीमारियों से मरता है
आदमी के अंदर
जब प्रेम की ग्रंथियाँ सूख जाती हैं
तब आदमी मर जाता है।

- मेघदूत मार्केट फुसरो
बोकारो, झारखंड-829144
मोबाइल नंबर: 9031991875
ईमेल: keshrimahesh322@gmail.com

कविता

सुश्री अनिता कपूर की कविताएँ

नहीं भूली हूँ

नहीं भूली हूँ मैं आज तक
अपने बचपन का वो पहला मकान
पिताजी का बनाया वो छोटा मकान
कुछ ऋण ऑफिस से
बाकी गहने माँ के काम आए
मेरे लिए वो ताजमहल था
सफेद न सही लाल ही सही
छत पर सोने का मजा तो वैसे भी
ताजमहल में कहाँ आ सकता था
नहीं भूली हूँ आज तक वो मिट्टी की सोंधी महक
जब हम शाम को छत पर पानी उड़ेलते
तपिश कम हो तो रात को छत पर सोएँगे
छत की सफाई ने हमें जैसे टाइम मैनेजमेंट सिखा दिया था
स्कूल जाना, फिर होमवर्क करना, खेलना, खाना
और फिर रात को ऊपर सोने के लिए
छत पर छिड़काव, वो माटी की भीनी-भीनी खुशबू
बिछौना व छत वाले पेड़ के नीचे मस्ती
आसमाँ में चमकीले तारे
चाँद को देखना और फिर सोना
नहीं भूली हूँ आज तक, वो मेरे शहर की सुबह
चिड़ियों का चहचहाना
मुर्गे की बाँग, माँ का नीचे से आवाजें लगाना
मेरा उस सोंधी खुशबू में लिपटे-लिपटे बड़े हो जाना
खुशबू में तैर कर सात समुंदर पार आना
यहाँ खुशबू के तो पंख निकल आए थे
मैं जब चाहे उड़ कर उस पुराने मकान
को छू आती थी
वो छुअन वाले मोह के धागे ही तो थे
जिन्होंने मुझे मेरे मकान से बाँधे रखा
इसीलिए नहीं भूली हूँ मैं आज तक
अपने बचपन का वो पहला मकान
जिसकी यादें दिल में सीमेंट बन गई हैं
और दिल वही मकान बन गया है।

खिड़की

मेरे घर की यह खिड़की...
मुझे बहुत प्यारी लगती है...
इस खिड़की की एक विशेषता
इसमें एक अदृश्य दूरबीन जड़ी है
जो संवेदनाओं से बनी है
यह करवा देती है भौगोलिक सैर
नैहर से संदेश लाये नाई सी लगती है
मेरे घर की यह खिड़की...
मुझे मेरे मायका जैसी लगती है
आज भी गीली है इसकी लकड़ी...
मैंने कल ही निर्भया को रोते देखा
इसी दूरबीन ने दो बच्चियों को
दरख्त से झूलते देखा
और भी बहुत कुछ होते देखा
अपने मन को शर्मसार भी होते देखा...
यहाँ सुबह की अखबार तो नहीं मिलता
मेरे अलादीन का चिराग
बिन कहे ही मेरी पीड़ा समझता है
और मेरी दूरबीन के लेंस को हमेशा
चमका कर रखता है...
सुनते थे तालिबानी मेरे घर से दूर हैं
पर आज मेरे घर की इस खिड़की ने
उन्हें अपने देश के राज्यों में घुसते देखा है
दूरबीन ने बलात्कारियों को भी
शहर-शहर में सूँघते देखा है
कल दूरबीन थोड़ी हँसी थी
शायद बोलने भी लगी थी
या न्याय करने वाले के कान खुलने लगे हैं
क्या सच में हवा में प्रदूषण कण कम हुए है...
दूरबीन के काँच को पहली बार
सुबह उजली सी लगी है...
मेरे घर की खिड़की प्रवासी तो है
पर बंदनवार, तोरण, झालर देसी है
इसीलिए तो हमेशा
गीली ही रहती है इसकी लकड़ी
देश से आए बादलों का पर्दा जो है।

मैं वर्षों सर्द रही

अलास्का की बर्फ धीरेंधीरे मेरे अंदर जमने लगी थी
पर मुझे तो दौड़ना था
उधार के शब्दों से मुझे कोई रचना नहीं रचनी थी
कुछ समय तक मैं कछुआ बन गई थी
परंतु आँखें खोल से बाहर ही छोड़ दी थी
एक दिन हवाओं से भाषा की बात चली
महसूस हुआ मुझे, मानो प्रवासी हवाओं के
हिंदी के दांत उग आये हैं
हवा से झरते हुए शब्दों का बना बिछौना
हिंदी का एक नया विश्वकोश तैयार हुआ है
जमे हुए पानी को हिला
शब्दों को चुन मात्राओं से सँवार
भाषा ने करवट बदली है
मेरे विदेशी मित्र जब मुझसे हिंदी में बात करते हैं तो
मुझे आनंदित करती है भाषा की महक
आसमान में दिखता है शब्दों का चमकीला इंद्रधनुष
मानो प्रवास में मेरा नया जन्म हुआ है
प्रवास में मुझे हिंदी नृत्य करती हुई
एक अप्सरा सी दिखती है
उस सोच की जन्मदात्री
जिसने प्रवासी पेन से महाकाव्य रचना है
अपने इस नए जन्म रूपी कबूतर को
भाषा का चुग्गा खिलाकर
अमावस की रात पर और पूनम का गोल चाँद पर
हिंदी की कोंपलें रोपनी है
कुछ नए मुहावरे व प्रवासी स्वच्छंदता
शब्दों के भीतर छुपकर
एक नया हस्ताक्षर लिखना है
मेरी रचनाओं में मेरी भाषा में
जहाँ न हो खदानों का अंधेरा
स्वदेश से लाई मेरी हिंदी की बिंदी
प्रवास के मस्तक पर दिखे
प्रवासी अकेलेपन का व्याकरण
और नियति का यायावर होना
निरंतरता में विदेशी मुस्कानों को अपना बना ही लिया
आज जब मेरी अमेरिकी सहेली मेरे घर आती है
भारतीय परिधान में बिंदी लगा कर नमस्ते करती है
तो मेरी रूह पर फूल खिल-खिल आते हैं
प्रवास बसंती हो जाता है
मैं द्विज हो जाती हूँ
द्विज, वह जो दो बार जन्म लेता है।

मैं प्रवासी

सपना एक सँजोये
वर्षों से पलटती रही
पन्ने विदेशी केलेंडर के
इंतजार में उस निमंत्रण के
जो देता माह दिसंबर
एक ढलती शाम की विदाई का
और स्वागत होगा पाहुने सा।
खिलखिलाते नूतन वर्ष का
सपना सच भी हुआ
मैं आज स्वदेश में हूँ
पर, मन और आँखें तलाशती हैं
उस प्यार, अपनेपन और उस समाज को
जो ले गयी थी
मैं अपने साथ एक धरोहर
संस्कारों और विचारों की मिट्टी की खूशबू
और पढ़ाती रही जिसका पाठ विदेश में
गौरवान्वित रही भारतीय होने पर
अब मन
पूछता आप से सवाल
क्योंकर सड़ गयी
सबसे प्राचीन सभ्यता की सुगंध
ढँक लिया समाज को लूटपाट
अत्याचार और भ्रष्टाचार के बादलों ने
पर अभी भी देर नहीं हुई
चुनौतियाँ स्वीकारो
आओ मिल कर
नर्ववर्ष को सतरंगी बनाएँ
प्यार संस्कृति के सभी रंगों से सजा कर
विश्व के आसमान पर भारत का परचम लहराएँ।

जाने कब से एक समुंदर

इस जहन में कैद था
बहुत दिन बाद भारत में
दूर बैठी माँ ने फोन पर
सिर्फ बेटा कहा
मेरा समुंदर
मेरी आँखों से वह निकला
लफ्ज भी बहने लगे
और मेरे भीतर उग आया
एक बिलकुल नया शख्स।

- फाउंडर ग्लोबल हिंदी ज्योति, कैलिफोर्निया
ईमेल: anitakapoor.us@gmail.com

खेल हमें खुशहाल बनाते हैं

- मास्टर ए भास्कर -

'खेलों का महत्व सबको समझायें,
स्वस्थ व खुशहाल जीवन पायें।।'

प्रस्तावना :

अच्छा स्वास्थ एवं अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान समझे जाते हैं। खेल मानव को शारीरिक रूप से मजबूत और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि खेलों के प्रति रुचि रखना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। खेल में मनोरंजन के अलावा शारीरिक व्यायाम के लिए सभी आवश्यक तत्व होते हैं, जिनसे मनुष्य के सभी अंग मजबूत होते हैं और मस्तिष्क तुरंत फैसले लेने के लिए सतर्क रहता है।

खेलों से होने वाले फायदों का जब जिक्र आता है, तो निम्नांकित बातें उभर कर सामने आती हैं:

- खेल से शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा मिलता है।
- इससे टीम भावना और अनुशासन का विकास होता है।
- यह मानसिक व शारीरिक तनाव को कम करता है।
- इससे सामाजिक संपर्क को प्रोत्साहन मिलता है।
- यह मनुष्य की एकाग्रता में सुधार करता है।
- यह सामाजिक विविधता को स्वीकारने में सहायक होता है।
- इससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है।
- इससे राष्ट्रीय गौरव में वृद्धि होती है।

जीवन का अभिन्न हिस्सा है खेल :

खेल जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। हमें सदैव खेल से जुड़े रहना चाहिए। खेल ऐसा माध्यम है, जो मानव को मजबूत बनाने के साथ-साथ उसके समग्र विकास को प्रभावित करता है। कई बार तो यह हमें गलत रास्तों पर भटकने से भी बचाता है। क्योंकि खेलों से हमें सम्मान व प्रतिष्ठा मिलते हैं और ये सम्मान और प्रतिष्ठा हमें गलत करने से रोकते हैं।

हमारे भारत में विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते हैं, जैसे कबड्डी, तैराकी, क्रिकेट, फुटबाल, हॉकी और वालीबॉल इत्यादि। वैसे तो ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक प्रकार के ग्रामीण खेल भी खेले जाते हैं, जिनका रूप-स्वरूप एवं नाम बदलते रहते हैं। कुछ खेल तो हमारी संस्कृति एवं परंपराओं से भी जुड़े होते हैं। कई बार तो ये बड़े खतरनाक भी सावित होते हैं। लेकिन परंपराओं के कारण इन्हें रोकना कठिन होता है।

हालाँकि खेल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। इसलिए हमें खेलों से सदैव जुड़े रहना चाहिए। यदि हमें शारीरिक तौर पर स्वस्थ एवं मानसिक तौर पर तेज बनना है तो खेलों के साथ जुड़ना नितांत आवश्यक है।

भारत के खेलों के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि भारत ने दुनिया को अनेक महान खिलाड़ी दिये हैं और उनका नाम आज भी बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। जैसे हॉकी के खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद। ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर कहा जाता है। ध्यानचंद की कप्तानी में भारत ने तीन बार ओलंपिक स्वर्णपदक जीता था। हालाँकि उस समय भारत अंग्रेजी शासन का गुलाम था। बाद में आजाद भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी बना। हालाँकि अब हॉकी को बहुत अधिक महत्व नहीं मिल रहा है। इसके कई कारण हो सकते हैं।

भारत ने दुनिया को बड़े-बड़े पहलवान भी दिये, जिनमें दारा सिंह, गामा पहलवान एवं मास्टर चाँदगी राम प्रसिद्ध हैं। वर्तमान में भी कई पुरुष एवं महिला पहलवान भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। अभी भारत में क्रिकेट का जमाना है। क्रिकेट का भगवान कहे जाने वाले क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर भारत के ही खिलाड़ी हैं। भारत में क्रिकेट के प्रसिद्ध खिलाड़ियों की लंबी सूची है। कबड्डी के क्षेत्र में भी भारत का दबदवा बरकरार है। हाल ही में संपन्न ओलंपिक एवं पैरा ओलंपिक खेलों में कई खिलाड़ियों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है।

फिर भी यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत में खेलों को बढ़ावा अधिक नहीं दिया जाता। विशेष रूप से महिलाएँ आज भी खेलों की दुनिया से काफी दूर हैं। साथ ही यह भी सच है कि ग्रामीण जनता के बीच खेलों को कैरियर बनाने जैसी ललक अब भी नहीं है। शहरों में तो मूलभूत सुविधाएँ मिल जाती हैं। इसलिए सानिया मिर्जा एवं सायना नेहवाल जैसी महिलाएँ खेल को अपना कैरियर बना पायीं। लेकिन ऐसा सौभाग्य कई महिलाओं को नहीं मिल पाता।

अंततः विद्यालयों में खेलों को बढ़ावा देने के लिए उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। साथ ही बड़े पैमाने पर खेलों को कैरियर बनाने के बारे में प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। इससे स्वस्थ एवं प्रतिस्पर्धी नागरिक बनेगें और देश का नाम रोशन होगा।

- दसवीं कक्षा
जिला परिषद उन्नत पाठशाला
कणिति
विशाखपट्टणम

जीवन में खेलों का महत्व

- सुश्री बशीरुन् -

भूमिका :

कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। स्वस्थ शरीर के लिए व्यायाम और खेलकूद की बहुत जरूरी है। हमारे पूर्वज बहुत मेहनत का काम करते थे। परिश्रम करते हुए उनका व्यायाम हो जाता था। फिर भी जब समय मिलता तो वे मनोरंजनवश कोई खेल खेलते थे। इस प्रकार से उन्होंने अनेक खेलों का विकास किया, जो उन्हें स्वस्थ रखने के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी करते थे। चूँकि उस समय खेलों के विकसित एवं नवीनतम साधन नहीं थे, इसीलिए प्राय: पुराने खेल बल पर आधारित होते हैं, जैसे कुश्ती, दौड़, ऊँची कूद एवं कबड्डी आदि।

हमारे गाँवों में आज भी ये खेल खेले जाते हैं। क्योंकि आज भी इन खेलों के लिए अधिक पैसे खर्च नहीं करने पड़ते और अच्छा व्यायाम हो जाता है। आजकल भारत का सबसे अधिक लोकप्रिय खेल क्रिकेट है। लेकिन दुनिया में फुटवाल का खेल सबसे अधिक लोकप्रिय है। हॉकी, वॉलीवाल, टेनिस आदि खेल भी बहुत लोकप्रिय माने जाते हैं।

नियमित खेलकूद की आदत बचपन से ही डाली जानी चाहिए, ताकि उपरोक्त सूक्ति 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क बसता है' चरितार्थ हो सके। लाँग-जंप, हाई-जंप, दौड़ और कुश्ती ऐसे खेल हैं, जो बिल्कुल कम खर्च में खेले जा सकते हैं और इनमें बहुत अधिक लोगों की जरूरत भी नहीं होती। इसीलिए विद्यार्थी जीवन में ही अधिकाधिक लोगों को खेलकूद की ओर आकर्षित किया जाता है।

खेल प्रतियोगिताएँ :

वर्तमान परिवेश में खेलों का महत्व बहुत बढ़ गया है। प्रतियोगिताओं ने इसका महत्व बहुत बढ़ा दिया है और खेल प्रतियोगिताओं के कारण ही जीवन के अन्य क्षेत्र भी व्यापक तौर पर प्रतिस्पर्धी हो गये हैं। इस स्पर्धा के कारण मानव जीवन और संपूर्ण विश्व एक खेल का मैदान बन गया है। हर किसी में अपनी रुचि के खेल में पारंगत होने की होड़ लगी हुई है। हालाँकि खेल प्रतियोगिताओं के कारण ही विश्वकप, ओलंपिक, एशियाड आदि खेल प्रतियोगिताओं का जन्म हुआ है और ये देशों के सम्मान व गौरव बढ़ाने का एक सुदृढ़ कारण बन गये हैं। समय के साथ-साथ खेलों के रूप-स्वरूप में भी बहुत बदलाव आ गये हैं। कुछ खेल बाहर मैदान में खेले जाते हैं, जिन्हें आउटडोर गेम या फिर मैदान में खेले जाने वाले खेल कहा जाता है, जैसे हॉकी, क्रिकेट, फुटबॉल, वालीबॉल, कबड्डी, पोलवॉट, जेवलिन थ्रो आदि। वहीं जो खेल किसी चहारदीवारी में खेले जाते हैं, उन्हें इनडोर खेल अथवा बंद जगहों में खेले जाने वाले खेल के रूप में पहचानते हैं, जैसे ताश, कैरम, शतरंज, टेवल टेनिस, लूडो, विलियर्ड, स्नूकर आदि।

खेलों से लाभ :

1. मैत्री भावना का विकास

खेलों से द्विपक्षीय संबंधों में सुधार आते हैं। खिलाड़ियों में यह स्पर्धा के साथ-साथ आत्मीयता को भी बढ़ाते हैं। अत: खेल मैत्री व बंधुता के प्रतीक हैं।

2. अनुशासित जीवन

खेलों में कुछ निर्धारित नियमों का पालन करना पड़ता है। संचालकों, गाइडों और शिक्षकों के आदेशों का पालन करना जरूरी होता है। इससे खिलड़ी का जीवन स्वत: ही अनुशासित होने लगता है।

3. मनोरंजन का साधन

खेल मनोरंजन के अच्छे साधन भी होते हैं। इससे हमारा मन प्रसन्न हो जाता है और आत्मविश्वास से भर जाता है। इससे खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों दोनों का मनोरंजन होता है। ऐसे में उन लोगों को भाग्यहीन कहना चाहिए, जो खेलों से प्राप्त मनोरंजन के महत्व को नहीं जानते है।

4. मानवीय गुणों का विकास

खेलों से खिलाड़ियों में कठिन परिश्रम करने की आदत बनती है। साथ ही खेलों से जुड़ा मनुष्य और अधिक कर्मठ व सहनशील होता है। आलस, अकर्मण्यता और थकान उससे कोसों दूर रहती हैं। वह ईर्ष्या-द्वेष, भेद-भाव से दूर रहता है। खेलों के द्वारा मानव-मानव में प्रेम संबंध दृढ़ हो जाते हैं। खेल भावना के कारण आपसी सहयोग, सांगठनिक अनुशासन एवं सहनशीलता में वृद्धि होती है।

5. यश व मान में वृद्धि

खेलों से केवल खिलाड़ियों का ही मान नहीं बढ़ता, अपितु देश व समाज का नाम भी रोशन होता है। खेलों से जीवन महान बनता है। हम समाज तथा देश में इज्जत व धन प्राप्त करते हैं। उत्साह के साथ जीवन जीने की अनुभूति मिलती है और जीवन खुशहाल बनता है।

- दसवीं कक्षा
जिला परिषद उन्नत पाठशाला
धर्मारायुडुपेटा, अनकापल्लि

बाबूजी की आराम कुर्सी

- श्री महेश शर्मा -

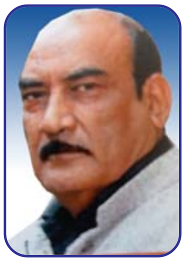

शाम को ऑफिस से घर आते ही मुझे घर के ओटले पर जो नजर आया, मैं देख कर ठिठक गया। था तो कुछ नया नहीं, लेकिन ओटले पर पुरानी आराम कुर्सी खाली रखी हुई थी। वही कुर्सी जिस पर रोजाना बाबूजी बैठते थे। हालाँकि पिछले तीन वर्षों से वे हमारे बीच नहीं थे और तभी से मैंने उनकी आराम कुर्सी को घर के एक कमरे में सुरक्षित उनकी यादगार के रूप में रख दिया था। आज अचानक कुर्सी बाहर दिखी। लेकिन किसी बेनूर उदास, शोकपूर्ण मुद्रा वाली पत्थर की मूर्ति की तरह। मैं वहीं घर के ओटले पर बैठ कर पिछली यादों में डूबने लगा।

बहुत सजीव हुआ करती थी यह कुर्सी, जब बाबूजी इस पर सुबह सात बजे से नौ बजे तक धूप सेंकते थे और इसी पर बैठ कर अखबार पढ़ा करते थे। दोपहर को जब वे आराम करते थे, तब यह कुर्सी भी आराम करती थी। शाम को चार बजे फिर यह कुर्सी और बाबूजी दोनों व्यस्त हो जाते। दोपहर को आराम कर बाबूजी फिर ओटले पर कुर्सी लगाकर बैठते। चाय वहीं पीते बच्चों को खेलते देखते और रास्ते से आने-जाने वालों को देखा करते। लेकिन मुझे मालूम था कि इस व्यस्तता में वे वास्तव में मेरे ऑफिस से लौटने का इंतजार करते थे। साढ़े पाँच से लेकर छह बजे, जब तक मैं ऑफिस से घर नहीं आ जाता, उस ओटले और आराम कुर्सी को नहीं छोड़ते।

मुझे देखते ही उनके चेहरे पर एक चमक आ जाती थी। एक सुकून की मुस्कराहट के साथ अक्सर पूछते 'बहुत देर कर दी बेटा, आज तो' या फिर 'आज तो बेटा जल्दी आ गए' या फिर घर-परिवार अथवा रिश्तेदारी की कोई बात कहते हुए मेरे साथ ही घर में घुसते थे। माँ कहती 'अब अंदर आने का मन हुआ, जब तुम्हारा बेटा घर आ गया?' वे केवल मुस्करा देते और मैं इस तरह की टीका-टिप्पणी से धन्य हो जाता। मुझे लगता मेरे जैसा भाग्यवान कोई और होगा ही नहीं। मेरे लिए यह अमूल्य संपदा थी।

वैसे बाबूजी को अपना पैतृक घर, जो गाँव में था, उसे छोड़ना बिलकुल ही पसंद नहीं था। लेकिन मेरे आग्रह के कारण वे माँ के साथ स्थान परिवर्तन या मन बहलाने के लिए कभी-कभी मेरे यहाँ रहने आ जाते थे। एक-दो माह का समय जो वे यहाँ गुजारते, वह मेरे लिए अतिरिक्त उत्साह और व्यस्तता का हो जाता था। मैं भी ऐसा प्रयास करता था कि उनके लिए ऐसा कुछ करूँ कि वे व्यस्त रहें और उनका मन भी लगा रहे। उन्हें घुमाने कभी मंदिर तो कभी बाजार ले जाता। कभी अपने किसी परिचित के यहाँ भी ले जाता, जहाँ कोई बुजुर्ग हो और ये मेरे प्रयास कुछ ऐसे ही थे, जैसे कोई किसी अति विशाल कर्ज को चुकाने का विनम्र प्रयास कर रहा हो या धरती से लेकर आकाश तक की अनंत ऊँचाइयों को छूने के लिए एक निश्छल प्रेम, अटूट विश्वास और लगाव से भरे रिश्ते के एहसास को पुन: उसी रूप में लौटाने की तिनके के समान अति लघु कोशिश कर रहा हो।

निहायत गरीबी के बीच संघर्ष करके जीवनपथ पर बढ़ते हुए बाबूजी ने माँ व अपने पाँच बच्चों का लालन-पालन, शिक्षा व उनके विवाह आदि की सारी जिम्मेदारियाँ निभाते हुए हमें रोजगार से लगाने तक जी-तोड़ मेहनत की थी और उन्हीं की बदौलत पूरा परिवार आज खुशहाल स्थिति में था। बाबूजी ने एक पूरा युग जिया था। उनके पिता यानी मेरे दादाजी के समय का संपन्न और अलमस्त जीवन, फिर दादाजी की मृत्यु के बाद आई मुसीबतों के कारण निर्मित अभावों का संसार, सब कुछ बाबूजी ने अपने जीवन में भोगा था। कोई और पारिवारिक सहारा उनके पास नहीं था। जो जमीन थी, उसे मुकदमे में हार गये। फांके की स्थिति आने के बावजूद फिर से जीवन संग्राम में उतरते हुए धीरे-धीरे सफलता की राह पर चलकर अंतत: मजबूती से स्थापित हुए।

मैंने देखी थी उनकी जुझारू प्रवृति। प्रात: पाँच बजे उठ कर रात ग्यारह बजे तक पूरी लगन से होटल चलाते थे। बात के धनी स्वभाव के तेज और साख वाले माने जाते थे। ना जाने क्यों ईश्वर ने उनकी परीक्षा ली। एक रात उन्हें तेज बुखार आया था। वे टॉयलेट जाने के लिए उठे और अचानक गिर पड़े। पता चला, शरीर का आधा हिस्सा पेरेलिसिस का शिकार हो चुका था। तत्काल अस्पताल में भरती कराया गया। आठ-दस दिन में कुछ सुधार हुआ, लेकिन हाथ का पंजा पाँव का पंजा अभी भी काम नहीं कर रहे थे। बाबूजी बहुत चिंतित थे। वे तत्काल सुधार चाहते थे। कई तरह की तेल मालिश, दवाइयों, गोलियों आदि से इलाज करवाया गया। धीरे-धीरे सुधार हुआ भी। अंतत: वे चलने-फिरने लग गए, लेकिन उन्हें बैठने में अभी भी तकलीफ होती थी। एक पाँव लंबा करके बैठना पड़ता था।

इस बीमारी के बाद जब मैं उन्हें अपने यहाँ लाया तो घर में बैठे-बैठे बोर होने लगे। वे बाहर बैठना भी चाहते थे, पर सीधी कुर्सी पर बैठ नहीं पाते थे। एक दिन माँ ने कहा, 'बेटा, वो एक आराम कुर्सी भी आती है ना लंबी, महँगी आती है क्या? यदि वो मिल...' मैंनें माँ की बात पूरी भी नहीं होने दी। मैं अभी जा के लाता हूँ। अगले ही दिन बाजार जाकर मैंने एक बढ़िया सी लकड़ी वाली आराम कुर्सी ले आयी। उस दिन मैं बहुत उत्साहित था। प्रसन्नता से इतना अभिभूत था, जैसे उनके लिए कोई अनमोल तोहफा ले जा रहा हूँ।

घर पहुँच कर पूरी कुर्सी लगाकर जब बाबूजी को बैठाया तो बाबूजी गद्गद हो गए। उन्हें बहुत अच्छा लगा। यह कुर्सी उठने-बैठने में आरामदायक और लेटने में सुविधाजनक थी। उन्होंने उस कुर्सी को बहुत इत्मीनान से देखा और उसी दिन से बाबूजी उस कुर्सी को अपनी महत्वपूर्ण संपत्ति मानकर उसका उपयोग करने लगे। मुझे उनकी ललक देखकर अपने बचपन के दिन याद आ गए, जब बाबूजी ने मुझे तीन पहियेवाली साइकिल लाकर दी थी और मैं इतना खुश हुआ था, मानो मुझे स्वर्ग का राज मिल गया हो। मस्त होकर दिन भर साइकिल चलाता, हँसता-खिलखिलाता। मुझे देखकर बाबूजी और माँ भी खूब खुश होते।

मैं सोच रहा था, वही समय पलटकर फिर अपने आप को दोहरा रहा है एक नए रूप में। मुझे यह अहसास अंदर तक सुख की जबरदस्त अनुभूति दे गया कि मैंने बाबूजी के लिए ऐसा कुछ किया है, जिससे वे बहुत खुश हुए। भले ही इसके लिए मैंने ज्यादा पैसा खर्च नहीं किया। लेकिन उन्हें आह्लादित करने वाला कार्य उचित समय पर किया था। इस कुर्सी ने भी प्रसन्नता के कई क्षण मुझे दिये। बड़ी बेटी की शादी में बाबूजी एक माह पहले से आ गये थे। रोजाना ओटले पर कुर्सी लगवाकर बैठ जाते थे और बैठे-बैठे ही शादी की सारी तैयारियों का जायजा लेते रहते थे। कभी-कभी तो दोपहर का आराम भी वे उसी पर कर लेते थे। शाम की चर्चा में आराम कुर्सी पर बैठे-बैठे ही भाग लेते। माँ चिढ़ कर कहती 'अब रात भर के लिए तो ये राजसिंहासन छोड़ दो', और तब जाकर बाबूजी रात को अपने बिस्तर पर सोने जाते थे।

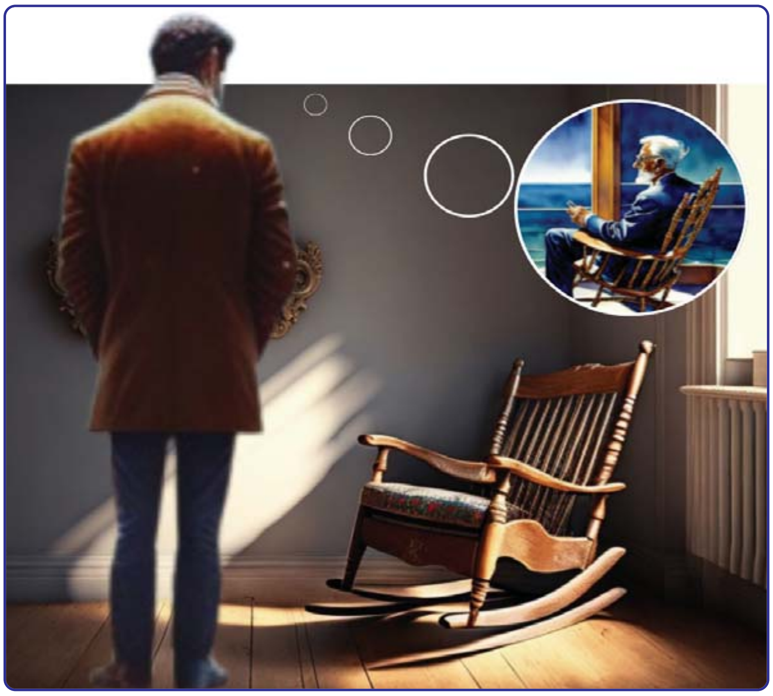

मुझे, आज भी याद है बाबूजी की वो छवि, जब वे सफेद धोती-कुर्ता पहने ऊपर से जाकेट गुलबंद डाले आराम से कुर्सी पर लेटे रहते और पान चबाते रहते। भाई साहब का छोटा बिट्टू जिद करता तो उसे भी अपनी गोद में बिठा लेते। गाँव से आये कुछ बुजुर्ग उस कुर्सी को लेकर कुछ ईर्ष्या भी करते और बाबूजी थे कि आराम कुर्सी पर बैठे-बैठे या लेटे-लेटे ज्यादा इतराते रहते थे। लेकिन समय का क्या कहे? क्या पता था कि यही कुर्सी, जिससे इतनी अच्छी-अच्छी यादें जुड़ी थीं, किसी ऐसे हादसे में भी भागीदार बनेगी, जो हमेशा मन को दु:ख की अनुभूति देता रहेगा?

रोजाना की तरह बाबूजी सुबह का खाना खाकर आराम कुर्सी पर लेटे थे। उन्हें हल्की सी नींद भी आ गई थी। तभी शायद कालप्रेरित एक दुर्घटना घटी। मोहल्ले का एक आवारा सांड और अन्य बैलों में सड़क पर पड़े चारे को खाने के लिए जो घमासान मचा तो दोनों सींगों में उलझते हुए एक दूसरे से भिड़ते हुए घर के ओटले से आ टकराये। उसी गुत्थमगुत्था में एक बैल का सींग ओटले पर बैठे बाबूजी की कुर्सी के पाए में आ फँसा। लोग बाग चिल्लाते हुए दौड़े तब तक तो बाबूजी धड़ाम से आराम कुर्सी सहित गली में जा पहुँचे। बैल का सींग तब भी कुर्सी में फँसा रहा। नतीजा यह हुआ कि दस-बारह फुट दूर तक बाबूजी कुर्सी के साथ घसीटाते हुए आगे तक चले गये। किसी बैल का पैर भी उन्हें लगा। तत्काल उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया। उन्हें काफी चोटें आई थीं। फिर भी डॉक्टरों ने संभाल लिया था तो भी वे अभी खतरे से बाहर नहीं थे।

दो-तीन दिन बाद थोड़ी तबीयत सुधरी। कुछ होश दुरुस्त हुए, तो बाबूजी रोने लगे। मैंने उन्हें धीरज बँधाया। तभी अचानक पूछ बैठे 'अरे वो मेरी कुर्सी ? गली से उठा तो ली थी ना?' इस अप्रत्याशित प्रश्न से सभी चौंक पड़े। हँसी भी आ गई सबको। माँ ने उन्हें उलाहना देते हुए कहा, अब तो उस मुई कुर्सी का नाम छोड़ो, भगवान का नाम लो।' मेरे मन में अचानक एक विचार कौंधा, किसी भी कमजोर मनोबल वाले व्यक्ति या निराश रोगी को उसकी प्रिय वस्तु की आकांक्षा जगाने से उसकी शक्ति तेजी से पुन: संग्रह होती है। मैंने बाबूजी को धीरज बँधाया 'बाबूजी! आपकी आराम कुर्सी सुरक्षित है। आप जल्दी अच्छे हो जाओ, फिर तो वहीं आपको उसी पर आराम करना है।'

मैंने पाया कि बाबूजी को यह बात बहुत अच्छी लगी। आठ-दस दिनों में स्वास्थ्य कुछ ठीक हुआ। बाबूजी भी घर चलने की जिद कर रहे थे। घर आने के बाद मुश्किल से दो दिन गुजरे होंगे कि बाहर धूप में बैठने की जिद करने लगे। उनका मन देख कर मैंने पुन: आराम कुर्सी लगवाकर उन्हें थोड़ी देर कुर्सी पर बिठाया। बैठते ही बाबूजी को लगा, वे वापस अपने राजसिंहासन पर पुन: विराजमान हो चुके हैं। कुछ ही देर में वे बड़े सुकून से उस पर लेट गए। मैं, ऑफिस के लिए निकल चुका

था। अभी लंच टाइम भी नहीं हुआ था कि घर से खबर आई 'बाबूजी की तबीयत गड़बड़ है।' तत्काल घर पहुँचा तो देखा, घर के बाहर बड़ी भीड़ लगी है। अंदर पहुँचा तो देखा बाबूजी निष्प्राण पड़े हुए थे। घर में कोहराम मचा था। अनंतलोक का वासी अपने अज्ञात सफर पर रवाना हो चुका था।

दूसरे दिन माँ ने बताया, 'सुबह कुर्सी पर बैठे-बैठे धूप लेने के बाद अंदर आने से इनकार करते हुए उन्होंने खाना भी वहीं बुला लिया और खाना खाकर जो लेटे तो आँख नहीं खोली। मैं जब उठाने गई तब पता चला कि अब कुछ बाकी नहीं है।' मैं समझ नहीं पाया क्यों किसी को किसी से इतना मोह हो जाता है। सजीव रिश्ते तो ठीक, किसी जडवत वस्तु से भी मनुष्य इतना बँध जाता है। माँ ने कई बार कहा 'इस कुर्सी को कहीं भी फेंक दो या किसी को दे दो, इसे देखकर मन न जाने कैसा हो जाता है।'

लेकिन मैंने उस कुर्सी को बाबूजी की प्रिय धरोहर के रूप में अपने घर में संभाल कर रखा था। मैं जब भी उस कुर्सी के नजदीक पहुँचकर उसके हत्थे पर हाथ रखता, मुझे बाबूजी के पीले मुरझाये से हाथों का एहसास होने लगता। मैं जब भी उस कुर्सी के नजदीक बैठता तो ऐसा लगता मानो बाबूजी के पास ही बैठा हूँ। अचानक मेरी तंद्रा टूटी, माँ की आवाज कानों में गूँजी, 'बेटा! यहाँ ओटले पर बैठा क्या सोच रहा है?' 'अरे ये कुर्सी बाहर क्यों निकाली है', मैंने पत्नी से पूछा। उसने बताया घर की साफ-सफाई चल रही है। मैंने एक कपड़ा लिया और उस कुर्सी के हत्थे-पाए साफ करने लगा। उसे झटकार-फटकार कर उसकी धुल हटाई। मैं भावुक हो चला था। मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मैं बाबूजी की ही सेवा कर रहा हूँ।

- 224 सिल्वर हिल कॉलोनी
जिला: धार, मध्य प्रदेश
मोबाइल नंबर: 8236940201
ईमेल: sharma.mahesh46@yahoo.com

आत्मिक आशीर्वाद

- डॉ ऋषिमोहन श्रीवास्तव -

प्रोफेसर गुप्ता ने सुबह उठते हुए अपनी पत्नी मेघा को बुलाया - 'अरे भाई, कभी-कभी पति के पास बैठकर भी बातें कर लिया करो। सिर्फ बेटे-बेटियों के साथ ही गपशप न किया करो।' सुनकर मेघा तुनक कर आई और बोली - 'बोलिए सरकार, क्या कह रहे थे? चालीस सालों से आपकी ही तो सुनती आई हूँ। अब तो बच्चों के दिन हैं। उनके भविष्य की भी तो चिंता करनी है। आप तो बस, अपनी लेखनी में लगे रहते हो।'

'हाँ भाई! जरूर करो उनके भविष्य की चिंता। मैं कब तुम्हें रोकता हूँ। मैं तो इतना कह रहा था, आज मैंने पुराने रिटायर्ड साथियों को घर पर बुलाया है। ऐसे में मैं चाहता हूँ कि तुम उनके लिए कुछ अच्छा नाश्ता या खाना बना देना। मेरे वे साथी कई वर्षों के बाद मेरे कहने पर मुझसे मिलने आ रहे हैं।' 'देखो जी, अब मुझसे ज्यादा काम नहीं होता। आखिर मेरी भी उम्र बढ़ रही है। अपने दोस्तों के खाने का इंतजाम किसी होटल से क्यों नहीं कर लेते। उनके लिए होटल से ही कुछ ऑर्डर कर दो।' सुनकर प्रोफेसर गुप्ता चुप होकर रह गये। भला वे क्या कह सकते थे।

प्रोफेसर गुप्ता की बात उनके बड़े बेटे कमल की पत्नी सुजाता सुन रही थी। वह प्रोफेसर साहब के पास आकर बोली - 'बाबू जी! आप कहें तो मैं आपके दोस्तों के लिए बढ़िया खाना ही तैयार कर दूँगी। जब आपके दोस्त इतने लंबे समय के बाद मिलने आ रहे हैं तो उन्हें खाना खिलाना ही ठीक रहेगा।'

सुजाता बहू की बात सुनकर प्रोफेसर गुप्ता बहुत खुश हुए। वे बोले - 'शायद तुम बिल्कुल सही कहती हो। पर क्या तुम सब कुछ कर लोगी? नहीं तो मैं होटल से कुछ मंगा लूँ।' 'नहीं बाबू जी, होटाल से कुछ न मंगायें। मैं सब कुछ समय पर बना लूँगी। आप बिल्कुल चिंता न करें। उन्हें घर का खाना ही खिलाइएगा।' 'ठीक है बहू, जैसा तुम्हें अच्छा लगे, वह बना लेना।' प्रोफेसर बहुत प्रसन्न हो रहे थे कि चलो उनकी पत्नी ने उनकी बात नहीं सुनी। कम से कम बहू ने तो उनकी बात को इतना महत्त्व दिया। वास्तव में कुछ बहुएँ और बेटियाँ घर के मान-सम्मान के लिए और बुजुर्गो की सेवा के लिए हमेशा समर्पित रहती हैं।

प्रोफेसर गुप्ता के सभी दोस्त खाना खाने के बाद खाने की प्रशंसा कर रहे थे। वे कह रहे थे - 'इतने सारे व्यंजन एक साथ, और सबका इतना मधुर स्वाद।' प्रोफेसर गुप्ता मान गये। खाना खिलाने का उतना महत्त्व नहीं, जितना उसे बनाने का महत्त्व है। खाना बनाने में अपनत्व और प्यार-स्नेह भी जरूरी है। तभी तो खाने का स्वाद द्विगुणित हो जाता है, यानि कई गुना बढ़ जाता है। प्रोफेसर गुप्ता का मन आत्मिक रूप से सुजाता बहू को बहुत-बहुत आशीर्वाद दे रहा था।

- एस-1 नित्यानंद विला
कमलेश्वर कॉलोनी, जीवाजीगंज
लश्कर, ग्वालियर-474001

व्यंग्य

फिजेरिया

- श्री दिलीप कुमार -

मैं वैसे ही सौतिया डाह से जला-भुना था कि फिजी जाने वालों की सूची में मेरा नाम नहीं था। मैंने मंत्री जी की चिट्ठी और अनुशंसा पत्र भी लगवाया था। बाकी केक, मिठाई, यशोगान और परिक्रमा तो मैं वहाँ बरसों से कर रहा हूँ। यह उसी का पुण्य-प्रताप था कि देश में औसत से भी कम ग्रेड के लेखक होने के बावजूद सरकारी फाइलों में मेरी कीर्ति का मौसम गुलाबी रहता है। यह अलग बात है कि हर बार आश्वासनों के बाद अंतिम सूची में मेरा नाम छूट ही जाता है। न जाने कब ये शनि की साढ़ेसाती दूर होगी और मैं हिंदी सम्मेलन में विदेश जाऊँगा? मैंने पंडित जी को हाथ दिखाकर पूछा 'हिंदी सम्मेलन में स्वर्ग जैसे विदेश जाने की मेरी चाह कब पूरी होगी।' उन्होंने स्पष्ट कहा, 'स्वर्गवासी होने के बाद।'

फिजी गए अपने साथियों के होटल, समुद्र तट और रंगीन तस्वीरों को देखकर मैं अंगारों पर लोट रहा था। वैसे तो सम्मेलन की आखिरी उड़ान के बाद ही मैंने उधर की तरफ सोचना-देखना बंद कर दिया था। लेकिन मेरे व्यंग्यकार साथियों ने वहाँ मिलने वाली सुबह की चाय से लेकर सोने के समय तक की फोटुओं को मुझे टैग करके इतना जलाया है कि ईर्ष्या के मारे मेरा बीपी लो हो गया। वे जानते थे कि मैं कुढ़ूँगा, चिढ़ूँगा, जलूँगा, इसलिये वे फोटो मुझे टैग करते थे। निराशा में मैंने फेसबुक चलाना ही छोड़ दिया।

लेकिन मेरे साथी व्यंग्यकार घाव देने का कोई भी अवसर छोड़ना नहीं चाहते थे। सो वे सारे व्हाट्सएप्प समूहों में जबरदस्ती जुड़कर अपने फोटो-वीडियो खूब भेजी और मुझे ललकार कर सार्वजनिक रूप से मेरी प्रतिक्रिया भी माँगी। मन मारकर मुझे उन सभी को सार्वजनिक रूप से बधाई देनी भी पड़ी। ऊपर से लोगों के सवाल कि 'तुम फिजी क्यों नहीं गये?' लोगों को तो टालता रहा कि 'मैं व्यस्त हूँ। ऑफिस से परमीशन और छुट्टी दोनों नहीं मिलेंगी।' लेकिन किसी ने श्रीमती जी को बता दिया कि सरकार हिंदी के साहित्यकारों को फ्री में फिजी घुमा रही है, आप भी सपरिवार फिजी जा सकती हैं। मेरे मन के अंदर की उठापटक और सोशल मीडिया के स्यापे अचानक उछलकर मेरे घर में पहुँच गए। सुबह-शाम वे पूछने लगीं 'हम फिजी क्यों नहीं जा रहे हैं?' अब इस यक्ष प्रश्न का मैं क्या जवाब देता।

काफी लानत-मलानत एवं फजीहत के बाद मैं उन्हें समझा पाया कि 'सपरिवार जाने के लिये पासपोर्ट और वीजा होना जरूरी होता है। इसके बाद भी कई बार नामालूम वजहों से हवाई अड्डे पर रोक लिया जाता है।' कहते हुए मैंने 17 ऐसे अधिकारियों की खबर गूगल पर दिखाई, जो उल्टे पाँव फिजी से बाफजीहत लौटा दिये गये थे, क्योंकि उनका वहाँ होना गैर-जरूरी था।

श्रीमती जी इन तर्कों से न पिघलीं। उन्होंने साफ-साफ कहा 'वे सब तो अधिकारी थे, साहित्यकार थोड़े न थे, जब साहित्यकारों का सम्मेलन था तो अधिकारियों की वहाँ क्या जरूरत थी। जिनकी जरूरत हो, उन्हें ही वहाँ जाना चाहिए था।' मैं श्रीमती जी को कैसे समझाता कि इस क्रॉनिक प्रश्न का उत्तर बरसों से हिंदी के लेखक और पाठक ढूँढ़ रहे हैं कि लेखक से ज्यादा अधिकारी विश्व हिंदी सम्मेलनों में क्यों जाते रहते हैं?

श्रीमती मेरे तर्कों से हल्का सा मुतमईन तो हुईं, लेकिन अगले ही पल उन्होंने अपनी असहमति जताते हुए कहा, 'चलो ठीक है, हम पकड़ लिए जाते फिजी के हवाई अड्डे पर तो कुछ ले-देकर छूट जाते। वहाँ भी तो पुलिस ही है। जैसे यहाँ की पुलिस, वैसे ही वहाँ की पुलिस। यहाँ भी तो हम एक ही मोटरसाइकिल पर हम-तुम और हमारा बेटा कितनी बार पकड़े गए हैं। लेकिन कभी चालान हुआ क्या? कभी बातचीत से कभी कुछ ले-देकर छूट ही गए। लेडीज साथ में हो तो पुलिस वाले भी कुछ नहीं बोलते, इतना तो मैं भी समझती हूँ।'

मैं पूरी तरह बोल्ड हो चुका था। बात कहाँ से निकली थी और कहाँ लाकर पटक दी। वाह री नारी शक्ति तुझे प्रणाम, तुम विधाता को प्रणाम क्यों करती हो, विधाता को तो तुम्हें प्रणाम करना चाहिए। मुझे यकीन हो गया कि हिंदी की वजह से जो संकट मेरे घर-गृहस्थी में आया है, वह जल्दी खत्म होने वाला नहीं है। उन्होंने फिर कहा, 'देखिये हम कोई ड्रग्स या बम बारूद लेकर तो जा नहीं जा रहे हैं, जो पकड़े जाते तो जेल जाते। वैसे भी हिंदी के लेखक के पास होता ही क्या है?' उनके इस सवाल ने मेरे मर्म पर बड़ी गहरी चोट की। मैंने श्रीमती जी को समझाया, 'तनिक सोचो, अगर हम फिजी हवाई अड्डे पर भले ही जेल न जाते। लेकिन अगर वहाँ से डिपोर्ट किये जाते तो हमारी कितनी बेइज्जती होती?'

श्रीमती जी ने मेरे शब्दों की गुगली को जाँचा-परखा और फिर उस पर अपने तर्क का छक्का लगाते हुए बोलीं, 'वो सब मैं सह लेती, कम से कम इसी बहाने हम मुफ्त में हवाई जहाज से फिजी तो पहुँच जाते। वैसे तो तुम्हारा लेखन दो कौड़ी का भी नहीं है, लेकिन अगर कभी लेखन काम भी आने लगे तो तुम्हारी भूसा-बुद्धि पूरा गुड़-गोबर कर देती है। फुद्दू कहीं के।' ये कहते हुए वो वहाँ से पैर पटकते हुए चली गयीं। उनके जाने पर मैंने चैन की साँस ली और अकारण मेरे मुँह से एक गीत फूट पड़ा 'न छेड़ो हमें हम फिजियाये हुए हैं।'

- मॉलती कुंज कालोनी
आनंद बाग, बलरामपुर-271201
मोबाइल नंबर: 9956919354

कहानी

नलवाड़ी मेला

- डॉ संदीप शर्मा -

नलवाड़ी मेले के दिन नजदीक आ चुके थे। केहर सिंह कल ही टांडा बाजार से अपने बैलों के लिए रस्सियों से बने नए जोड़े खरीद कर लाया था। पूरे तीस जोड़े और साथ में घुँघरू। आँगन में पसरे रंग- बिरंगे लाल रंग के जोड़े व घुँघरू बहुत सुंदर लग रहे थे। केहर सिंह के मन में खुशी की लहरें धीरे-धीरे मन के तट को छूने का अपना इरादा लेकर निकल चुकी थीं। केहर सिंह ने पूरे साल इस मौके का इंतजार किया है। बिलासपुर, सुकेत, घसोता और जाहू के नलवाड़ी मेलों में अगर बिक गए तो फिर मेहनत सफल, वरना यहीं कहीं फिर वापसी में ग्राहक ढूँढ़ते रहना होगा। बस उनका सफर हाजीपुर से शुरू होगा और काँगड़ा होते हुए लगभग पाँचवें दिन वे बिलासपुर के नलवाड़ी मेले में पहुँचेंगे।

केहर सिंह ने मजबूत रस्सियों को बैलों के गले में बाँधना शुरू कर दिया था, ताकि अब ये किसी के खूँटे में बँध जाएँ। अब वह हर बैल के गले में घुँघरू बाँध रहा था। घुँघरू बग्गू बैल को बाँधने लगा तो उसने अपना सिर हिला दिया। केहर सिंह ने बैल की पीठ पर हलके से दुलारा, 'बस बच्चा बग्गू, अब थोड़े दिनों का रिश्ता है।' और रस्सी को कसते ही उसने बैल की पीठ पर दो थापियाँ मारीं, तो मानो बैल मस्त हो गया और घुँघरू टनाटना उठे। बस यही आवाज केहर की आत्मा के हर हिस्से तक पहुँच गई। बचपन से बैलों की जोड़ियाँ ही देखीं उसने। बापू मेहर सिंह के समय में तो **100-100** जोड़ियाँ इकट्ठी होती थीं। जब वे जोड़ियाँ लेकर बेचने निकलते थे तो लोग बस देखते ही रह जाते थे।

उसका बड़ा बेटा फतेह सिंह बोरियों में खाने-पीने के जरूरी सामान भर रहा था। वह भी नलवाड़ी मेलों में उसके संग कई सालों से जा रहा है। केहर सिंह एक बैल के गले में घुँघरू बाँधते बोला, 'फतेह बेटा, पूरा सामान डाल लेना। पाँच दिन के सफर में ये बैल तो चर लेंगे। पर हम ढाबों में खाना थोड़े ही खाएँगे। तुम्हें तो सब पता ही है, बस... जहाँ खुली जगह मिली, वहीं हमारा डेरा।' दोनों हँस दिए।

फतेह सिंह ने अपने बापू संग हाजीपुर से मीलों दूर तक कोई गाँव नहीं छोड़ा है। पहले छोटे बैलों को खरीदना, खास कर उनकी कीमत और पहचान में वह अपने बापू की तरह माहिर बनता गया है। फिर एक-एक बैल को अपने घर पहुँचाकर उनकी जोड़ियाँ बनाना, एक ही नस्ल और एक ही कद-काठी। फिर उनकी सेवा शुरू हो जाती, ताकि उनके भरे-पूरे शरीर और ऊँचे कद देखकर ही उनकी ताकत का अंदाजा लगाया जा सके। यह काम कोई आसान नहीं, बुजुर्गों के अनुभव का एक वंश से दूसरे वंश तक फिसलने का कार्य था।

पूरे इलाके में अब कुछ ही बचे हैं, जबकि पहले लगभग पूरे इलाके में कोई **10-12** घर ही होते होंगे, जो इस काम में अपनी परंपरा का बोझा उठाने की हिम्मत रखते थे। उसके दादा के समय में तो इस इलाके की यही खास पहचान थी। मेलों में जब हाजीपुर की जोड़ियाँ बँधती थीं तो ग्राहक किसी दूसरी ओर मुँह नहीं करते। उसे अपने बापू को कहे वे शब्द आज भी न भूले हैं, जो मेले के प्रधान ने केहर सिंह को सबसे अधिक बैल बेचने का इनाम देते कहा था, 'केहर सिंह बस असली इनाम हमारे इलाके के लोगों को तब मिलेगा, जब तुम अपना ये कीता अपने बच्चों को सिखाएगा। तेरे बैलों की संख्या कम न हो पाए। तेरे बाप ने भी कई जोड़ियाँ सालों से हमारे मेले में बेचीं। बस अब तेरे बेटे भी आने चाहिए सुंदर बैलों संग। बस फतेह सिंह ने अपने बापू की इज्जत के लिए वक्त के उफनते दरिया में छलांग लगा दी थी।

केहर सिंह ने जोर से आवाज लगाई, 'ओए कड़वे तेल की बोतल डाल लेना, जिसमें मैंने घर का काजल मिलाया है। बस मेले में पहुँचकर यही तेल इन बैलों के सींगों को और सजाएगा।' तो फतेह के विचारों के घुँघरुओं की माला टूटी। केहर सिंह उसके बेटे फतेह और उनके बच्चों जैसे बैलों का सफर शुरू हो चुका था। तलवाड़ा से सीधा ज्वाली का रास्ता था। ज्वाली से देहरा और देहरा से नादौन और हमीरपुर। रास्ते में पौंग डैम पड़ता है। वैसे पौंग तो अब बना है। बुजुर्गों के समय तो ब्यास को पार करके नगरोटा सूरियाँ पहुँचते थे। अब बाँध के पुल से पार करना पड़ता है और फिर पूरी झील के किनारे से घूम कर ज्वाली और फिर नगरोटा सूरियाँ, एक दिन तो क्या, दो दिन भी यही रास्ता खा जाता है।

केहर सिंह का डेरा देहरा से कुछ पीछे एक गाँव की खाली जगह में लग चुका था। सारे बैल एक दूसरे से रस्सियों से बँध चुके थे। ये बैल इतने सयाने होते है कि अँधेरे में आसमान के नीचे अपने मालिक की आवाज की रोशनी में रात बिताना जानते हैं। आग जलाकर बाप-बेटे खाना बनाने लगे। केहर सिंह बोला, 'रास्ते में कई आवारा बैल मिले। अमरीकन बैल तो फूल कर गुबारा बन गये हैं। इन सड़कों पर घूमते आवारा बैलों को देखकर मेरे कलेजे में तलवारें घुस जाती हैं।' फतेह बोला, 'इनके मालिकों को शर्म नहीं आती। वे चाहे हिंदू होंगे। पर अपने स्वार्थ के आगे उनका कोई धर्म नहीं। बस गाय ने बछड़ा दिया नहीं कि छोड़ दिया। न किसी पंच प्रधान ने रोका, न टोका।

अब कहाँ है वे दल-बल वाले? इनको मालिकों को भी वे पूछें।'

केहर सिंह बोला, 'बस, कलयुग का असर है। हम ही पागल हैं, जो इन जानवरों से अपने प्रेम का रिश्ता निभा रहे हैं। बेटे! जो भी है, इससे तो अच्छा था कि वे वहीं अपनी आखिरी मंजिल तक पहुँच जाते, जो हमारे पुरखों के वक्त से चला आ रहा था।' पाँचवें दिन वे बिलासपुर के सबसे बड़े नलवाड़ी मेले में पहुँचे। मैदान पूरा खाली था। नलवाड़ी मेले में डेरा लगाते ही फतेह ने सारा सामान बोरुओं से निकाल कर लकड़ियों के जलते अलाव के इर्द-गिर्द सजा दिया। बैलों की जोड़ियाँ बाँध कर केहर सिंह मेले का जायजा लेने निकल गया था। उसके ही एक पुराने साथी कमाल सिंह के बैलों की जोड़ियाँ खूँटों से एक ओर बँधे थे। कोई बीस जोड़ियाँ थीं। कमाल सिंह फतेहपुर कांगड़ा का है।

दूसरे दिन मेले का विधिवत उद्घाटन करने सरकारी आदमी आये। नेता जी ने खूँटा गाड़ने की रस्म अदा की। एक नजर केहर सिंह व कमाल सिंह के बैलों की जोड़ियों पर डाली और फिर मेले में सन्नाटा पसरने लगा। जिस मैदान के कोने पर केहर सिंह को स्थान मिला है, वहाँ तो लोग कौतूहल से दूर से देखते तो रहते, पर आने का नाम नहीं लेते, भला उनको बैलों से क्या लेना-देना।

'मेले के पाँच दिन बीत जाने के बाद अभी सात जोड़ियाँ ही बिकी हैं, ये भी सुकेत वाले ही थे। घुमारवीं का एक किसान परिवार ले गया, कहीं धार पर एक जोड़ी।' शाम को लकड़ियाँ जलाकर अपना खाना बनाते केहर सिंह ने अपनी चिंता जाहिर की। उसका बेटा बोला, 'बापू हमें जोड़ियों की कीमत कम करनी होगी। आपने देखा नहीं, दो पार्टियाँ तो अपनी जोड़ी की कीमत की वजह से लौट गई। वैसे भी आप ने समय की बदलती धार तो देखी है न, सौ से पचास, पचास से तीस और अब शायद तीस से कम...।'

'तू ठीक कहता है फतेह, परंपराओं के रंग अब फीके होने लगे हैं। हमें इस नलवाड़ी के बाद सुकेत, जाहू, गसोता इन सब नलवाड़ी मेलों में जाना पड़ेगा और फिर भी दो-चार जोड़ियाँ बच गई तो अगले साल के लिए फिर से उन्हें पालना पड़ेगा।' आज नलवाड़ी मेले की रात में सोया केहर सिंह चिंता से ग्रसित था। एक के एक किस्से जमीन से इतनी ठंड में उसके पुराल के ऊपर पड़े कंबल पर सरकने लगे थे। उस दिन तो हद ही हो गई थी। पाँच-सात लोग उसके घर पहुँच गये थे। वे बोले थे, 'तुम अपने बैलों को कटने के लिए बेचते हो। यह काम बंद करो, वरना अंजाम तुम भुगतोगे।'

केहर सिंह दूसरे दिन ही एस डी एम के पास था। 'साहब, पुरखों का खानदानी पेशा है, यही बैल नलवाड़ी मेलों की शोभा होते हैं, आप कोई कागज पत्र लिख दें, वरना दल वाले मुझे कहीं का न छोड़ेंगे।' एक कागज पर मोहर लग गई। पर उस दिन से केहर सिंह की इस दुनिया से मनमुटाव हो गया था। उसके अंदर का पुश्तैनी काम का सारा रंग बह गया था। अब वह कोई और काम नहीं कर सकता था। उसका बेटा फतेह सिंह भी तो उसके इसी रंग में रंग गया है। वह अपने बेटे को कहना चाहता था, 'बेटे कोई और काम कर ले। किसी की नजर लग गई है हमारे पेशे पर। मेरी तो जिंदगी लग गई। मैं पागल था, जो अपने पेशे की जिम्मेदारी तेरे कंधों पर डालने की नीयत रख रहा था।'

फिर एक मन की लहर ने उसे रोका, 'तू गलत नहीं है केहर! तूने कोई अपने बेटे के बारे में बुरा नहीं सोचा है। ये पेशा तेरे खून में है और यही पेशा तू अपने बेटे को बाँटेगा। तू सब समझता है न कि वह बदलते समाज के रंगों में जकड़ा है। न ही वह इतना पढ़ा है कि अपनी कोई उड़ान उड़ सके। उसे इसी आसमान में रहना है, जो तुमने उसे बाँटा है।'

सभी नलवाड़ी मेले खत्म हो गये थे। दस जोड़ियाँ फिर से वापस केहर सिंह के घर के आँगन में खूँटों से बँध गई थीं। मार्च का महीना शुरु हो चुका था। अगले साल के मेले के लिए छोटे बच्छू खरीदने के लिए केहर सिंह ने बैंक से लगभग दो लाख रुपये निकलवा लिये थे। अब उन्हें कई गाँवों से छोटे बच्छू खरीदकर बच्छुओं की जोड़ियाँ बनानी थी। यह काम आसान नहीं, गाँव-गाँव ढूँढ़कर एक-एक अच्छी नस्ल का बच्छू खरीदना, मोल-भाव करके उनके मालिकों से लेकर अपने घर तक पहुँचाना, फिर उसे पालना ताकि वह **5-6** महीने में मेले तक ले जाने के लिए तैयार हो जाए। इस काम में उसकी और अब उसके बेटे की महारत है।

अभी तीन नई जोड़ियाँ ही वह बना पाया था कि एक समाचार आया, जो न इससे पहले उसने सुना था, न उसके बाप

दादा ने सुना होगा। कोरोना से पूरे देश में लॉकडाउन, केहर सिंह के लगभग पौने दो लाख बड़े से संदूक में जमा हो गये थे। घर से निकलना बंद, केहर सिंह के नये उगे सपनों की डाली बिन खाद पानी के सूखने लगी। शुक्र है कि केवल तीन जोड़ियाँ ही घर में बंधी हैं। पहले **21** दिन, फिर **14** दिन, फिर **14** दिन...। कुछ महीनों के बाद इंसानों का घरों से निकलना शुरू हो गया। पर केहर सिंह के लिए बच्छु खरीदने का सिलसिला शुरू नहीं हुआ। वह बेटे से बोला, 'अब क्या करें? क्या इस बार मेले तक खुल जाएगा काम? कि फिर...।' 'बापू अभी कोई संभावना नहीं है। अब हम बच्छु नहीं खरीद सकते, कैसे पालेंगे और कहीं मेले भी न खुले तो। आपने देखा नहीं, जब शादियों में **20** लोग होंगे तो मेले कैसे लगेंगे?'

केहर सिंह की जिंदगी में पहली बार न नलवाड़ी मेला सजा था, न केहर सिंह की जोड़ियाँ मेले में बिकने को रवाना हुई थीं। रवाना तो तब होते, जब जोड़ियाँ बनतीं। जीवन में पहली बार केहर सिंह इतना तड़पा, जितना शायद वह अपने बापू की मृत्यु पर न तड़पा हो। उसके बापू जैसे उसके सपने में आकर कहते, 'बस बेटा, तुमने तो कमी न छोड़ी थी अपने वंश के पेशे को अगली सदी तक पहुँचाने की। मैंने भी कुछ ऐसी ही कस्में खाई थीं अपने बाप से। ऐसा नहीं है कि केवल मैं ही अपने पेशे पर अहसान कर रहा हूँ। मेरे बुजुर्गों ने भी यही अहसान किया था। यह तुम सोच सकते हो कि उनके लिए यही रास्ता था, पर इसमें उन सब की भलाई थी। अब समय की घड़ी ने अपनी सत्ता को बदल दिया है। इसलिए अब हम उससे लड़ नहीं सकते। तुम हार मान लो मेरे केहर, यह लड़ाई अब यहीं खत्म होती है।'

केहर सिंह का बेटा सुबह उसके साथ चाय पीने बैठा तो बोला, 'बापू अब आप केवल इतना बता दो कि मैं और इंतजार करूँ या फिर जीवन में पहली बार किसी के पास काम ढूँढ़ने निकल जाऊँ।' केहर सिंह को लगा जैसे उसके जीवन की झोंपड़ी में किसी ने आग लगा दी है और वह अपने पूरे परिवार को बचाकर दूर किसी घास के मैदान में आ गया हो। फिर पूरे परिवार ने इधर-उधर से बाँस के डंडे इकट्ठे करके एक छोटी सी झोंपड़ी बनाई हो, जिसमें इधर उधर से माँग कर उसकी पत्नी रोटियाँ बना रही थी, जिसे खाने के बाद पूरा परिवार सो गया था, पर सुबह कोई नहीं जगा। क्योंकि वह सुबह कभी नहीं हुई।

केहर सिंह अपने बेटे से कहा, 'अच्छा बेटे, अब सचमुच ही मेले नहीं खुले हैं, अगर खुल भी जाते तो भला इन तीन जोड़ियों को लेकर क्या जाते। बेटे! मुझे बड़ा दुख है, यह साल तो गया। अब अगले वर्ष की तैयारी भी नहीं कर सकते। जब तक बच्छु घर में इकट्ठे नहीं हुए, तब तक मेले में जाने का क्या लाभ। पर मेले जब तक शुरू होंगे, तब तक हमारा पेशा बरबाद हो चुका होगा।' दोनों बाप-बेटे ने विचार किया और केहर सिंह ने संदूक से रुपये निकाले और शाम को उनके घर तीन आला नस्ल की भैंसे बंध गई थीं। वह बोला, 'बेटे मैं जो कर सकता था, कर दिया। अब तीन से चार बनाना तुम्हारा काम।' फतेह सिंह और उसकी पत्नी ने दूध से अपनी रोजी-रोटी कमाने का निर्णय ले लिया था।

- शिक्षक, डी ए वी पब्लिक स्कूल
हाउस नं.618, वार्ड नं.1, कृष्णा नगर
हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश-177001
मोबाइल नंबर: **9418178176, 8219417857**

मोबाइल मर्ज

- श्री अशोक वाधवाणी -

सेवानिवृत्त होने के बाद आत्माराम के जन्म दिन पर उनके बेटे ने स्मार्टफोन का उपहार दिया। उन्होंने शंका जताते हुए कहा, 'कहीं मुझे मोबाइल की लत लग गई तो?' बेटे के बजाय पत्नी जानकी ने उन्हें समझाते हुए कहा, 'इतने वर्षों में आपको पान, तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट, बीयर, शराब आदि की लत नहीं लगी, तो इस उम्र में भला ये आदत कहाँ से लगेगी?' आत्माराम ने हथियार डाल दिये। हुआ वही, जिसकी आत्माराम ने आशंका जतलाई थी। वे दिन-रात सोशल मीडिया पर चैटिंग में व्यस्त रहने लगे। जानकी ने उन्हें समझाने की कोशिश की, लेकिन मोबाइल उनके लिए खाना-पीना-जीना बन चुकी थी। थक-हारकर जानकी ने मायके में आई बेटी खुशबू को पिता की लत छुड़ाने के लिए कहा।

खुशबू ने पिता से मिलकर कुशलक्षेम पूछा। बातों-बातों में उनसे कहा, 'आपके नवासे ने नाक में दम कर रखा है। स्कूल से आते ही मोबाइल से चिपक जाता है। पढ़ाई या खेलकूद में उसका मन नहीं लगता है। उसके लिए मोबाइल चलना-फिरना-खाना-पीना-ओढ़ना-बिछौना-सोना बन चुका है। घर के सभी सदस्य उसको समझाकर हार मान चुके हैं। अब आप ही कोई उपाय बतायें। आत्माराम को समझते देर नहीं लगी कि नवासे के कंधे पर बंदूक रखकर खुशबू ने जो गोली दागी है, वह उनकी तरफ इशारा करती है। आत्माराम ने दृढ़ निश्चय करते हुए खुशबू से कहा, 'तुमने मेरी आँखें खोल दीं बेटी। मैं वादा करता हूँ कि आज के बाद उस पुराने बटन वाले मोबाइल का ही उपयोग करूँगा।' आत्माराम का जवाब सुनकर माँ-बेटी आश्वस्त हो गईं। दोनों के चेहरे खुशी से खिल उठे। खुशबू पिता से लिपटकर बोली, 'मेरे बेस्ट पापा ...!'

- गांधी नगर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र
मोबाइल नंबर: **9421216288**

आओ भाषा सीखें

पूर्व के अंकों की भाँति इस अंक में भी हिंदी और तेलुगु के कुछ ऐसे शब्दों को लिया जा रहा है, जो उच्चारण की दृष्टि से समान हैं, लेकिन अर्थ की दृष्टि से भिन्न। आइए, उन शब्दों को जानने और समझने का प्रयास करते हैं।

मास्टर जी : रामा! विशाखपट्टणम शहर की खासियत क्या है?
మాస్టర్ జీ : రామా! విశాఖపట్టణమ్ శహర్ కీ ఖాసియత్ క్యా హై?
మాస్టర్ జీ : రామా! విశాఖపట్టణం నగర ప్రత్యేకత ఏమిటి?
मास्टर जी : रामा! विशाखपट्टणम् नगर प्रत्येकत एमिटि?
Master Ji : Rama! What is special about Visakhapatnam City.

रामा : जी! यह शहर आंध्र प्रदेश राज्य का महत्त्वपूर्ण पर्यटन केंद्र है।
రామా : జీ! యహ్ శహర్ ఆంధ్ర ప్రదేశ్ రాజ్య్ కా మహత్వ్‌పూర్ణ్ పర్యటన్ కేంద్ర్ హై.
రామా : మాస్టర్ గారు! ఈ పట్టణం ఆంధ్ర ప్రదేశ్ రాజ్యానికి చెందిన మహత్తర పర్యాటక కేంద్రం.
रामा : मास्टर गारु! ई पट्टणम् आंध्र प्रदेश राज्यानिकि चेंदिन महत्तर पर्याटक केंद्रमु।
Rama : Master Ji! This city is a famous tourist place of Andhra Pradesh.

मास्टर जी : और ..., यहाँ बोर्रा की गुफाएँ, पूर्वी घाट की घाटियाँ, वन व हरी-भरी पहाड़ियाँ...
మాస్టర్ జీ : ఔర్....., యహా బొర్రా కీ గుఫాయేఁ, పూర్వీ ఘాట్ కీ ఘాటియాఁ, వన్ వ హరీ-భరీ పహాడియాఁ...
మాస్టర్ జీ : ఇంకా...., ఇక్కడి బొర్రా గుహలు, తూర్పు కనుమల లోయలు, అరణ్యాలు, ఇంకా పచ్చని కొండలు...
मास्टर जी : इंका..., इक्कडि बोर्रा गुहलु, तूर्पु कनुमल लोयलु, अरण्यालु, इंका पच्चनि कोंडलु...
Master Ji : And...., the Borra Caves, Eastern Ghats, Sanctuaries, and also green valley...

रामा : और मास्टर जी! असली चीज डॉल्फिन नोज भी तो है...
రామా : అస్‌లీ చీజ్ డాల్ఫిన్ నోస్ భీ తో హై..
రామా : అసలైన డాల్ఫిన్ నోస్ కూడా ఉంది కదా...
रामा : असलैन डॉल्फिन नोस कूडा उंदि कदा...
Rama : And also Dolphin Nose is there....

मास्टर जी : शहर के दक्षिण में स्थित एक ऊँची पहाड़ी..., जो डुबकी लगाती डॉल्फिन की तरह दिखती है...
మాస్టర్ జీ : శహర్ కే దక్షిణ్ మేఁ స్థిత్ ఏక్ ఊంచీ పహాడీ..., జో డుబ్‌కీ లగాతీ డాల్ఫిన్ కీ తరహ్ దిఖ్‌తీ హై...
మాస్టర్ జీ : నగరానికి దక్షిణాదిన మునక వేస్తున్న డాల్ఫిన్ లా కనిపించే ఎత్తైన పర్వతం...,
मास्टर जी : नगरानिकि दक्षिणादिन मुनक वेस्तुन्न डॉल्फिन ला कनिपिंचे एत्तैन पर्वतम्...
Master Ji : The rocky headland located to the south of the city, which appears to be taking a dip in the sea..

रामा : जी..., इसी से उसका नाम डॉल्फिन नोज बना है।
రామా : జీ.... ఇసీ సే ఉస్‌కా నామ్ డాల్ఫిన్ నోస్ బనా హై.
రామా : అవునండీ... ఈ కారణంగానే దాని పేరు డాల్ఫిన్ నోస్ అయింది.
रामा : अवुनंडी... ई कारणमुगाने दानि पेरु डॉल्फिन नोस अयिंदि।
Rama : Yes.... That's why it is called Dolphin Nose.

मास्टर जी : और... इन सभी खासियतों से ही तो यह शहर बना है 'प्रारब्ध का शहर'।
మాస్టర్ జీ : ఔర్... ఇన్ సభీ ఖాసియతోఁ సే హీ తో యహ్ శహర్ బనా హై 'ప్రారబ్ధ్ కా శహర్'.
మాస్టర్ జీ : ఇంకా... ఈ ప్రత్యేకతలన్నింటి వలనే కదా ఈ నగరం 'భాగ్యనగరం' అయింది.
मास्टर जी : इंका... ई प्रत्येकतलन्निंटि वलने कदा ई नगरम् 'भाग्यनगरम्' अयिंदि।
Master Ji : And... due to all these specialities, this city is known as 'City of destiny'.

रामा : मास्टर जी! 'प्रारब्ध' मतलब ...?
రామా : మాస్టర్ జీ! 'ప్రారబ్ధ్' మత్‌లబ్.....?
రామా : మాస్టర్ జీ! 'ప్రారబ్ధ్' అంటే....?
रामा : मास्टर जी! 'प्रारब्धम्' अंटे...?

Rama : Master Ji! 'Prarabdham' means...?
मास्टर जी : 'प्रारब्ध', मतलब 'भाग्य' और 'प्रारब्ध का शहर', यानि कि 'भाग्य नगर'।
మాస్టర్ జీ : 'ప్రారబ్ధ్', మత్‌లబ్ 'భాగ్య్' ఔర్ 'ప్రారబ్ధ్ కా శహర్', యాని కి 'భాగ్య్ నగర్'.
మాస్టర్ జీ : 'ప్రారబ్ధ్' అంటే 'భాగ్యం', ఇంకా 'ప్రారబ్ధ్ కా శహర్', అంటే 'భాగ్యనగరం'.
मास्टर जी : 'प्रारब्ध' अंटे 'भाग्यम्', इंका 'प्रारब्ध का शहर', अंटे 'भाग्यनगरम्'।
Master Ji : 'Prarabdh' means 'Destiny', and 'Prarabdh Ka Shahar', means 'City of Destiny'.
रामा : मास्टर जी! तेलुगु में भी 'प्रारब्ध' शब्द है...।
రామా : మాస్టర్ జీ! తెలుగు మేం భీ 'ప్రారబ్ధ్' శబ్ద్ హై...
రామా : మాస్టర్ గారు! తెలుగు లో కూడా 'ప్రారబ్ధం' అనే పదం ఉంది.
रामा : मास्टर गारु! तेलुगु लो कूडा 'प्रारब्धम्' अने पदम् उंदि।
Rama : Master Ji! There is a word 'Prarabdham' in Telugu also.
मास्टर जी : लेकिन तेलुगु में 'प्रारब्ध' का अर्थ है 'नियति'।
మాస్టర్ జీ : లేకిన్ తెలుగు మేం 'ప్రారబ్ధ్' కా అర్థ్ హై 'నియతి'.
మాస్టర్ జీ : కాని తెలుగులో 'ప్రారబ్ధం' అంటే 'విధి'.
मास्टर जी : कानि तेलुगुलो 'प्रारब्धम्' अंटे 'विधि'।
Master Ji : But 'Prarabdham' means 'Fate' in Telugu.
रामा : मतलब तेलुगु का 'प्रारब्ध' हिंदी के 'प्रारब्ध' शब्द से थोड़ा भिन्न है।
రామా : మత్‌లబ్ తెలుగు కా 'ప్రారబ్ధ్' హిందీ కే 'ప్రారబ్ధ్' శబ్ద్ సే థోడా భిన్న్ హై.
రామా : అంటే తెలుగు లోని 'ప్రారబ్ధం' హిందీ లోని 'ప్రారబ్ధ' పదానికి కొంచెం భిన్నం.
रामा : अंटे तेलुगु कु चेंदिन 'प्रारब्धम्' हिंदी कि चेंदिन 'प्रारब्ध' पदानिकि कोंचेम् भिन्नम्।
Rama : It means 'Prarabdham' in Telugu is slightly different from 'Prarabdh' in Hindi.
मास्टर जी : एक और शब्द है 'रुचि'।
మాస్టర్ జీ : ఏక్ ఔర్ శబ్ద్ హై 'రుచి'.
మాస్టర్ జీ : మరో పదం ఉంది 'రుచి'.
मास्टर जी : मरो पदम् उंदि 'रुचि'।
Master Ji : There is another word 'Ruchi'.
रामा : जी... तेलुगु में इसका मतलब है 'स्वाद'।
రామా : జీ.... తెలుగు మే 'రుచి' కా మత్‌లబ్ హిందీ మేం 'స్వాద్' హై.
రామా : అవునండి... తెలుగులో 'రుచి' అంటే హిందీ లో 'స్వాద్'.
रामा : अवुनंडि... तेलुगु लो 'रुचि' अंटे हिंदी लो 'स्वाद'।
Rama : Yes.... Telugu word 'Ruchi' means 'Taste' in Hindi.
मास्टर जी : बिल्कुल सही...। किसी भी सब्जी में 'स्वाद' नमक से ही बनता है।
మాస్టర్ జీ : బిల్‌కుల్ సహీ... కిసీ భీ సబ్జీ మేం 'స్వాద్' నమక్ సే హీ బన్‌తా హై.
మాస్టర్ జీ : అవును, ఏ కూరలో ఐనా 'రుచి' ఉప్పు వలనే వస్తుంది.
मास्टर जी : अवुनु, ए कूरलो अइना 'रुचि' उप्पु वलने वस्तुंदि।
Master Ji : You are right, the taste of any dish lies in the right amount of salt we add.
रामा : अच्छा! शायद इसीलिए तेलुगु में 'रुचि' का 'नमक' के पर्याय के तौर पर भी प्रयोग होता है।
రామా : అచ్ఛా! శాయద్ ఇసీలియే తెలుగు మేం 'రుచి' కా 'నమక్' కే పర్యాయ్ కే తౌర్ పర్ భీ ప్రయోగ్ హోతా హై.
రామా : ఓహో! అందుకేనేమో తెలుగులో 'రుచి' ని 'ఉప్పు' కు పర్యాయంగా కూడా వాడుతారు.
रामा : ओहो! अंदुकेनेमो तेलुगु लो 'रुचि' नि 'उप्पु' कु पर्यायम्गा कूडा वाडुतारु।
Rama : That's why Telugu 'Ruchi' is used as a synonym of 'Salt'. Isn't it..., Master ji...
मास्टर जी : हाँ रामा! इसके बारे में अगले अंक में और जानेंगे।
రామా : హా... రామా! ఇస్‌కే బారే మేం అగ్‌లే అంక్ మేం ఔర్ జానేంగే.
రామా : అవును.. రామా! దీని గురించి వచ్చే సంచికలో ఇంకా తెలుసుకుందాం.
मास्टर जी : अवुनु रामा! दीनि गुरिंचि वच्चे संचिकलो इंका तेलुसुकुंदाम्।
Master Ji : Yes Rama! we will learn more about this in the next issue.

जरा गौर करें

उसकी उम्र अभी महज 12 साल की थी, जब वह पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले में अपने एक रिश्तेदार के यहाँ आई हुई थी। वहाँ उसे एक ऐसा अभागा बाप मिला, जिसकी मासूम बेटी अचानक लापता हो गई थी और वह अपनी लाड़ली को खोजने के लिए दर-दर भटक रहा था। जनता से अपील कर रहा था। पुलिस से गुहार लगा रहा था। उस समय वह कुछ कर पाने की स्थिति में तो नहीं थी। लेकिन इस घटना ने उसके दिल और दिमाग पर बहुत गहरा आघात किया था। उसने मन ही मन सोचना शुरू कर दिया कि यह कैसा समाज है, जिसके गाँव की लड़की लापता हो जाती है और किसी को उसकी कोई खबर नहीं है? पुलिस भी कुछ नहीं कर पा रही है। यह घटना उसे हमेशा व्यथित करती रहती थी। जब वह बड़ी हो रही थी और मानव तस्करी की बातें या किसी के लापता होने की खबर सुनती तो उसका मन व्यथित हो उठता। उसकी पुरानी यादें ताजा हो जातीं। वह हमेशा सोचती रहती थी कि इस समस्या के निराकरण के लिए मैं क्या कर सकती हूँ।

पढ़ाई के लिए दिल्ली आने के बाद जब हरियाणा की एक लड़की ने उसे बताया कि 'आप जिस भाषा में बात करती हैं, उसी भाषा में बात करने वाली कई महिलाएँ मेरे गाँव में हैं।' उसे तुरंत 24 परगना जिले वाली घटना याद आ गई। वह किसी तरह से उन लोगों से मिलने में सफल हो गई। उनकी आपबीती सुनकर उसने ठान लिया कि लापता हो रही लड़कियों, महिलाओं और बच्चों को खोजा जाय और उनके पुर्नवास की व्यवस्था की जाय।

उसने 75000 से अधिक महिलाओं के साथ एक ऐसी सेना बनाई, जिसने पूरे देश से लगभग 10,000 बच्चियों को बचाया और उन्हें अपनों से मिलाया अथवा उनके पुर्नवास की व्यवस्था की। वह और उनकी महिला आर्मी आज भी पूरी शिद्दत से अपने मिशन में जुटी हैं। उनकी आर्मी जमीनी स्तर पर आगे बढ़कर काम करती है और बच्चियों को बचाती है। उनके पास हर दिन कम से कम 10-15 फोन कॉल आते हैं। ज्यादातर शिकायतें छोटी बच्चियों के लापता होने की होती हैं। इसके बाद पुलिस और दूसरी एजेंसियों के जरिए छापामारी और बच्चियों को सुरक्षित छुड़ाना, छुड़ाई गई लड़कियों की काउंसलिंग या लोगों को जागरूक करने हेतु उनसे बातचीत आदि उनका रोजमर्रा का काम है।

इस प्रकार उसने 'इंपैक्ट एण्ड डायलॉग फाउंडेशन' की स्थापना की, जो बच्चियों को मानव तस्करी के चंगुल से बचाने के मिशन में कार्यरत है। धीरे-धीरे उनका मिशन रफ्तार पकड़ने लगा। अपने फाउंडेशन के जरिए उसने अब तक 10 हजार से भी ज्यादा बच्चियों को बचाया। ये ऐसी बच्चियाँ थीं, जिन्हें अगर समय पर नहीं बचाया जाता, तो शायद उनका जीवन बद से बदतर हो जाता।

उसने बच्चियों को बचाने के साथ ही एक बात को और गहराई से महसूस किया कि केवल बच्चियों को बचाना ही काफी नहीं है। इसके बाद उन्हें एक सुरक्षित माहौल देना ज्यादा जरूरी है। अगर ऐसा नहीं किया जाता, तो उनके दोबारा मानव तस्करी में फँसने का खतरा था। इसके लिए उसने खुद की एक ऐसी मजबूत टीम बनाने का फैसला लिया, जो न केवल छोटी बच्चियों को मानव तस्करों से बचाये, बल्कि आगे बढ़कर एक्शन ले और उन बच्चियों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करे।

यह कहानी किसी और की नहीं, बल्कि असम राज्य में लुमडिंग जिले के एक छोटे से कस्बे में जन्मी एक 34 वर्षीय महिला पल्लवी घोष की है, जिनका हर दिन लगभग इसी तरह फोन कॉल रिसीव करने से शुरू होता है और फोन पर बताई गई समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने में खत्म होता है। पल्लवी बताती हैं, 'अगर मैं केवल भाषणों तक ही सीमित रहती, तो कभी भी 75 हजार महिलाओं को प्रभावित नहीं कर पाती। मेरे साथ इतनी बड़ी संख्या में महिलाएँ जुड़ीं, क्योंकि मैं खुद उनके बीच पहुँची। मैंने एक बार केवल एक ही दरवाजा खटखटाया और अपनी बात रखी।' बचाये गये बच्चों को बेहतर जीवन देने और उनकी काउंसलिंग में आज पल्लवी और उनकी आर्मी निरंतर जुटी हुई हैं।

राष्ट्रीय इस्पात सुगंध का मार्च - **2024** अंक प्राप्त हुआ। यह अंक तकनीकी विषय 'इस्पात उद्योग में सुरक्षा' पर आधारित है। पत्रिका का कलेवर बहुत सुरुचिपूर्ण एवं विषय विचारपूर्ण है। संपादक मंडल को ऐसे तकनीकी विषय पर अंक प्रकाशित करने के लिए बधाई।

- प्रोफेसर राजेश कुमार, नोएडा

राष्ट्रीय इस्पात सुगंध का मार्च - **2024** अंक जो तकनीकी विषय 'इस्पात उद्योग में सुरक्षा' पर आधारित है, मिला। यह अंक भी पूर्व के अंकों की भाँति ही अपने-आप में विविधता लिए विशेष अंक बन गया है। आपका संपादकीय 'जन गण के लिए' भारत और भारतवासियों के प्रति प्रेम, सुरक्षा व उनके अधिकारों का ज्ञान कराता है। लघुकथाओं, कहानियों, गीत और कविताओं तथा बाल रचनाओं से सुसज्जित यह अंक बहुत ही सुंदर बन पड़ा है। आपके श्रम का सम्मान करते हुए पूरी टीम को बधाई एवं शुभकामनाएँ। अंक को हमारे साथ साझा करने के लिए आपके प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ।

- सुश्री रीतु शर्मा नन्नन पांडेय, नीदरलैंड

आपकी पत्रिका राष्ट्रीय इस्पात सुगंध का मार्च - **2024** अंक प्राप्त हुआ, सुंदर के साथ-साथ संग्रहणीय भी है। क्योंकि यह अंक तकनीकी विषय 'इस्पात उद्योग में सुरक्षा' पर आधारित है और तकनीकी क्षेत्र में हिंदी की पहुँच काफी कम है। तकनीकी साहित्य को बढ़ाने में आपके प्रयास बहुत प्रसंशनीय हैं। हार्दिक बधाई।

- सुश्री पूर्णिमा वर्मा, लखनऊ

राष्ट्रीय इस्पात सुगंध का नया अंक पाकर मन मयूर सावन आने से पहले ही नाच उठा। यह भी अंक अपने पूर्ववर्ती अंकों जैसे ही श्रेष्ठ है। इसमें चयनित सभी साहित्यिक कृतियाँ उच्चतम दर्जे की हैं। इस सबके मध्य अपनी कविताओं को देखकर मन प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है। इस पठनीय और संग्रणीय अंक के लिए आपको और आपके साथियों को बहुत बहुत बधाई और आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी मेरी रचनाएँ आपकी पत्रिका में स्थान पाएँगी।

- डॉ नितिन उपाध्ये, दुबई

आपके द्वारा प्रेषित 'राष्ट्रीय इस्पात सुगंध' का मार्च-**2024** अंक प्राप्त हुआ। बहुत आभार। इस सुरुचिपूर्ण पत्रिका के किसी अंक को पहली बार देख रहा हूँ और सचमुच प्रसन्नता की बात है कि आप ऐसी पत्रिका का संपादन व प्रकाशन कर रहे हैं।
मेरी ओर से साधुवाद एवं बधाई स्वीकार करें।

- डॉ पल्लव, दिल्ली

आपकी पत्रिका 'राष्ट्रीय इस्पात सुगंध' मिली। मैं पत्रिका भेजने के लिए तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ और इस बात के लिए भी आभार व्यक्त करती हूँ कि आपने एक बहुमूल्य निधि हिंदी भाषा एवं साहित्य को समर्पित की है। यह अंक भी पहले के अंकों की तरह ही संग्रणीय, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक के माध्यम से आपने साहित्यिक विधाओं, अनमोल मोतियों की एक सुगंधित माला पिरो दी है। विषय एवं रचनाओं का चयन भी बेहद उत्तम है। लेखों में तकनीक की सुगंधित बातें तो साहित्यिक विधाओं की उत्तम कहानियाँ, लघुकथाएँ, कविताएँ, बाल साहित्य और कई प्रेरक प्रसंग बेहद आकर्षित करने वाले हैं। आप, आपकी संपादकीय टीम, साहित्यकार एवं सलाहकार सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

- सुश्री लक्ष्मी रानी लाल, टाटानगर

'राष्ट्रीय इस्पात सुगंध' का नवीनतम अंक लंबे अंतराल के पश्चात मिला। आशंका हो रही थी कि कहीं प्रकाशन रुक तो नहीं गया है। लेकिन अंक पाकर मन प्रफुल्लित हो उठा, हालाँकि पहले तो विश्वास ही नहीं हो रहा था। इस बावत कई बार पूछा भी था कि अंक नहीं आ रहे हैं। लेकिन डाक और कोरियर की समस्या से संपादकीय टीम भी परेशान थी। आखिरकार जब अंक मिला तो कलेवर में और निखार आया हुआ पाया। वैसे तो 'राष्ट्रीय इस्पात सुगंध' की पहचान उसके तकनीकी साहित्य से अधिक है। लेकिन साहित्यिक विधाओं की रचनाओं के चयन में भी विशेष सावधानी बरती जाती है और सांगठनिक पत्रिका के अनुशासन को बहुत बारीकी से स्वीकार किया जाता है। इस अंक की रचनाओं में 'हमारे शब्दों की यात्राएँ' सुधीर निगम जी द्वारा रचित 'ज्ञान की चाह जिसे लाई भारत की राह' जैसे लेख भाषा-विज्ञान एवं इतिहास को खंगालते दिखाई दे रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर कहानियों में श्री रजनीकांत शर्मा द्वारा लिखित 'बूढ़ों का गाँव' कहानी ने आज के गाँवों की विकराल स्थिति को बयान करती दिखी। कहानी 'एक डोर अनजानी सी' जो सुश्री ममता त्यागी द्वारा रचित है। इस कहानी में लेखिका ने वर्तमान समाज में बनते बिगड़ते रिश्तों एवं रिश्तों में बनते दरारों का बखूबी चित्रण किया है। साथ ही महिलाओं के जीवन में आई समस्याओं के लिए उन्हें एक योद्धा की तरह लड़ते और जीवन के लिए नए तरीकों की तलाश करते हुए दिखाया गया है, जो आज महिलाओं के समन्वित विकास लिए आवश्यक है। लघुकथाएँ भी सामाजिक विडंबनाओं पर कुठाराघात करती देखी गई। श्री गोवर्धन यादव एवं डॉ नितिन उपाध्ये की कविताओं ने मन को खूब लुभाया और प्रमुदित किया। कुल मिलाकर एक बेहतरीन अंक के लिए संपादक एवं उमकी टीम को बधाई।

- डॉ राजनारायण, वाराणसी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), विशाखपट्टणम की 15वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

स्वतंत्रता दिवस समारोह में राष्ट्रध्वज को सलामी देते हुए अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

ताप विद्युत संयंत्र एवं विद्युत उत्पादन

कुल विद्युत उत्पादन क्षमता	-	535.6 मेगावॉट
♦ ताप विद्युत संयंत्र-1	-	315 मेगावॉट
♦ विद्युत संयंत्र-2	-	120 मेगावॉट
♦ जी ई टी एस	-	24 मेगावॉट
♦ बी पी टी एस	-	15 मेगावॉट
♦ नीडो	-	20.6 मेगावॉट
♦ कोक ओवेन बैटरी-4	-	13 मेगावॉट
♦ कोक ओवेन बैटरी-5	-	14 मेगावॉट
♦ टी आर टी	-	14 मेगावॉट
अधिकतम लोड फैक्टर	-	500 मेगावॉट
अति आवश्यक लोड फैक्टर	-	80 मेगावॉट
6.3 मिलियन टन प्रचालन स्तर पर लोड फैक्टर	-	490 मेगावॉट

सुविधाएँ :

ताप विद्युत संयंत्र-1

- 5 जनरेटर्स (60 मेगावॉट X 3 एवं 67.5 मेगावॉट X 2)
- 4 टर्बो ब्लोयर्स (6067 सामान्य घनमीटर प्रति मिनट X 3 एवं 7000 सामान्य घनमीटर प्रति मिनट X 1)
- 6 बॉयलर्स (330 टन प्रति घंटे X 6)
- मल्टी फ्यूल फायरिंग सुविधा
- 4 ए टी ए और 13 ए टी ए का वाष्प उत्पादन
- डी-मिनरलाइज्ड वाटर उत्पादन
- चिल्ड वाटर उत्पादन
- फ्लू गैसों की इलेक्ट्रोस्टेटिक प्रेसिपिटेटरों में सफाई

ताप विद्युत संयंत्र-2

- धमन भट्ठी गैस से प्रज्वलित 2 बॉयलर
- 1 जनरेटर (120 मेगावॉट X 1)

Printed at GKPH 09848196095

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका